रक्त-कथा

एक ठिकाणेदार ठाकुर ने अपने मित्र की बलि युद्ध का नाटक करते-करते ले ली। बाप का बदला बेटे ने ससुर का सिर काट कर लिया तो पुत्री ने भी अपने बाप का बदला पति को मौत की गोद में सुला कर लिया।

इस प्रकार झूठी आन और सनक में दो परिवारों की वंश बेलि भ्रष्ट हो गई।

यह रक्त कथा प्रतीक है, सामन्ती युग के सनक की।

रक्त-कथा

[सामन्ती जनक का प्रतीकात्मक उपन्यास]

भंग किया। उन्होंने निगाह
...ुर की दूसरा पत्नी महाकुवरि नाम

माले की झोली

थ। अ ष प सा। ५५ उसने इस समय केसरिया लहगा, केसरिया ओढना और लाल काचली पहन रखी थी। हाथा म सोन की चडियां और बाजबद जिसके नीचे घघुरुओं के लटकन लटक रहे थ और सिर पर बोर। पावो म पतला पतली सोने की पायल।)

ठाकुर ने उदास आखो से देखा। उसके केसरिया अग केसरिया वस्त्रो म एकमेक हो रहे थे। सब कुछ घुलमिल गया था। सौंदय का एक महापुंज!

क्या बात है ठकुराणी सा ?'

'भोजन तयार है चलिये थाल अरोग लीजिए।"

"मुझे भूख नहीं है।'

"इस तरह दिन नही कट सकते। महाकुवरि उसके पास आकर

बठ गयी। ठाकुर सा की मूंछ कानों का छू रही थी। कानों म मोती सोने की मुरकियाँ थीं। बड़ी-बड़ी सफेद बाल भी नजर आ रहे थ।

दासी भीमली ने हुक्का भर कर रख दिया। ठाकुर न हुक्के की नली का मुंह म डाल कर गुड़ गुड़ गुड़ गुड़ किया। महाकुवरि की ओर बिना देखे ही कहा 'इस तरह जीवन व्यतीत नहीं किया जा सकता। अनत चिंताओं के साथ कौन जी सकता है ठकुराणी सा? निरंतर अभाव और सूखा। मेरी इच्छा है कि मैं गुजरात की ओर चला जाऊँ। बादशाह की चाकरी करूंगा और अपने समृद्ध जीवन के स्वप्नों को साकार करूंगा।'

'नहीं ठाकुर सा आप हम छोड़ कर नहीं जा सकते। यह विचार ही ठीक नहीं।' उसने ठाकुर के हाथ पर अपनी कोमल हथेली रख दी। विनीत स्वर म बोली मैं आपके बिना नहीं रह सकती। आपके बिना मेरा एक एक पल एक एक युग हो जायेगा।

'ठकुराणी सा!' ठाकुर की आवाज़ म गूंज आ गयी।' एक क्षत्राणी को सामान्य प्रणय स्तर और स्थितियों से अलग एक दृढ़ता से जीना चाहिए। क्षत्राणी का इस तरह भावनामयी बातें करना उसके गौरव के प्रतिकूल होती है और चरित्र को एक कायरता के आवरण से ढकता है। क्षत्राणी जहाँ पति की ढाल है, वहाँ पति के लिए उत्साह, आन और प्रेरणा की ज्योति है। वह अपने पति को नयी साहसिक यात्राओं के लिए प्रेरित करती है और सफलता के उस चरम बिंदु को स्पर्श करने के लिए आह्वान करती है जो उसकी आन बान को जग मगा दे।

ठकुरानी ने कोई प्रतिवाद नहीं किया।

ठाकुर ने पुन कहा, 'मैं आपके हृदय को दुखाना नहीं चाहता। अपमान भी करने की मेरी कोई मनसा नहीं है। मैं सिर्फ चाहता हूँ कि हमारे वियोग के भय से आप हमारी सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था को न बिगाड़ दें जो हमारे भावी जीवन के लिए एक जटिल समस्या बन जाये। इतना भयानक अकाल पिछले बीस बरसों म नहीं पड़ा है। दूर दूर तक

सिफ सूखा ही सूखा। हरियाली का नाम नही। इस तरह हम भी अधिक दिना तक नहा जी सकत।'

'आप ठीक फरमात है। इस छाटी सी जागीर से अधिक दिनो तक हम जीवन निर्वाह नही कर सकते। फिर भी मैं आपका वियोग नही सह पाऊगी। परदेश का मामला बडा विकट होता है। वहाँ आदमी जाकर सब कुछ भूल जाता है। घर जोरू और टाबर टाली! और फिर मैं ।

'क्या ?

ठकुराणी ने लज्जा से नयन झुका लिए। उनके गुलाबी कपोला पर लालिमा तिर गयी।

'आप चुप क्यो हो गयी ? बालिए न ? ठाकुर उसके सन्निकट आ गय। उसक क धो पर अपन दोनो हाथ रख दिए। ठकुराणी और लजा गयी। उसक सारे वदन म कपकपी छूट रही थी। ठाकुर ने ठकुराणी की ठोडी को स्पश करके उसकी दृष्टि अपनी आर की। उसकी अथ भरा मुसकान म अपने हाठ डुबा कर पुन दृष्टि नीची कर ली। फिर उसकी दृष्टि फिसलती हुई पावो पर रुक गयी।

ठाकुर कुछ देर तक गभीर रह। साचते रहे। फिर धीरे से हसकर बोल 'समझा हमारी ठकुराणी सा के पाव भारी हैं।'

ठकुराणा उनसे मुक्त होकर खिडकी की ओर मुह करक खडी हो गयी।

ठाकर प्रसन्नता म विभार होकर बोले न्मारे मन की मुराद पूरी हा गयी। आप स विवाह करने का उद्देश्य पूरा हा गया। ठकुराणी सा! अब हम परदेश म चाकरी करने जरूर जाएग। इधर हमारे सतान होगा और उधर हम अपार धन कमा कर लायेंगे। यदि भगवान की कृपा से कुवर हुआ तो खुशिया का बरखा कर देंगे।'

ठाकर प्रसन्नता म उत्तजित लग रह थ। ठकुराणा निश्चय सी खडी थी। दाना क बीच गहरा मौन था।

कुछ अन्तराल के पश्चात ठाकुर निश्चल मौन खड़ी ठकुराणी के निकट आये। उसे पीछे से स्पर्श करके कहा, हम आपके प्रेम-स्नेह को जानते हैं पर पुरुषार्थ से वंचित रह कर अपने को संकट में डालना भी कोई बुद्धिमानी नहीं। ठाकुर ने एक झटके से ठकुराणी को अपने सम्मुख किया। ठकुराणी की आँखें तरल थीं। वे अनिमिष दृष्टि से ठकुराणी के चेहरे को देखते रहे। देखते देखते बोले हम फिर नहीं जायेंगे। आपकी स्वीकृति के बिना हम अपनी सीमा से बाहर कदम भी नहीं रखेंगे। आपकी खुशी के लिए हम प्रत्येक अनागत अमंगल व संकट को सहने के लिए तत्पर हैं। आप राजी हो जाइए।

ठकुराणी ने अपना लम्बा मौन तोड़ा। विगलित स्वर में बोली, नहीं-नहीं आप मुझे गलत मत समझिए मैं प्रसन्नता के मारे रो रही हूँ। वर्षों के बाद इस घराने में सावन थाल बजेगा। थाल की झन्कार ठाकुर सा ! आप जल्दी वापस पधारियेगा।

हम आपके पुत्र जन्म से पहले आजायेंगे।

'वचन।

ठाकुर ने ठकुराणी की गोरी चिकनी हथेली पर अपनी हथेली बिछा दी। अप्रत्याशित उत्तेजना का प्रादुर्भाव हुआ। उबाल ! कुछ पिघला पिघला ! रात्रि की उच्छ्वासें बढ़ गयी थीं।

प्रभात !

ठाकुर के डेरे के सम्मुख कुछ दीन हीन किसान लगान की माफी के लिए इकट्ठे हो गए थे। शोरगुल मचा रहे थे। ठाकुर पूजागृह में पूजा कर रहे थे। तभी उनके कारिन्दे ने आकर कहा, 'अन्नदाता ! कुछ किसान आये हुए हैं वे माँग कर रहे हैं कि अकाल के कारण हम इस बार लगान नहीं दे सकेंगे।

ठाकुर ने गोमुखी से अपना हाथ निकाल कर एक बार ईश्वर के समक्ष सिर झुकाया और ड्योढ़ी की ओर रवाना हुए।

मुख्य ड्योढ़ी के समक्ष पचास साठ किसान जमा थे। ड्योढ़ीदार

मुस्तदी से खड़ा था। दाढ़ी मूछों के बीच उसके लहकते नेत्र बड़े ही डरावने लग रहे थे।

ठाकुर के आगे उसने अपना सिर झुकाया और स्पष्ट स्वर म कहा, खम्मा अन्नदाता।"

ठाकुर ने उसकी बात की ओर ध्यान नहीं दिया। वे सीधे किसानों के समक्ष पहुँच गये और बोले, "क्या कहना चाहते हो। भीड क्यों कर रखी है?"

चेताराम आगे बढ़ कर बोला, 'पृथ्वीनाथ, अकाल पड़ गया है। खेतों म सन्नाटा बोल रहे हैं। ऐसे समय लगान कैसे दें? ऐसे समय आप खुद को अपना धर्म पालन करके हमारी मदद करनी चाहिए।"

ठाकुर ने एक बार उन उदास चेहरों को देखा। फिर बोले 'लगान आप सबकी माफ की जाती है। रही सहायता की बात सो मैं विवश हूँ। आप जानते भी हैं कि हमारी जागीर अधिक उपजाऊ और आय वाली नहीं। इसलिए हम स्वयं परदेश जाने की सोच रहे हैं। यहा अधिक दिनो तक नहीं रहा जा सकेगा। किसी क्षत्री क होते हुए गाय का मरना उसके लिए लज्जा की बात है पर प्रकृति और ईश्वर के समक्ष किसी का जोर' नहीं चलता। आप हमारी स्थिति को समझेंगे।

ठाकुर इतना कह कर डेरे म घुस आये। भीड छँट गयी। बठक' खाने म आते ही उन्होंने अपने नौकर नरपत को पुकारा। नरपत सिर झुका कर खडा हो गया।

'सुनो नरपत तुम इसी समय राठौड सरदार जी क पास जाओ और उन्हें हमारी तरफ म अर्ज करो कि गुजरात की ओर चलना है।' नरपत ने सिर उठा कर कहा जो हुक्म।

उन्हें हमारी ओर से यह भी कहना कि व आपकी चार भुजावाले मन्दिर के चौराहे पर प्रतीक्षा करेंगे। कल सुबह हम प्रस्थान करेंग।'

जो हुक्म।

नरपत चला गया।

ठाकुर वहाँ से 'रावल' में आये। रावल के पश्चिमी द्वार पर जो बड़ा कक्ष था उसमें ठाकुर की पहली पत्नी चन्दनकुंवर रहती थी। चन्दनकुंवर बाँझ थी, परित्यक्ता थी, फिर भी वह मान की धनी थी। उसने कभी भी ठाकुर के समक्ष अपना विरह-वन्दना का बखान नहीं किया। अपने अन्तस की अथाह पीड़ा को उजागर नहीं किया। यह मूक दीर्घ जीवन ! आहत नागिन की तरह ठहर ठहर कर सरकता हुआ। यही कक्ष और उसके जीवन का दायरा।

उसकी डावड़ी (दासी) ने भाग कर उन्हें प्रार्थना की 'बड़ी ठकुराणी सा आज ठाकुर सा पधार रहे हैं।

ठकुराणी के मुख पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह उदास दृष्टि से डावड़ी की ओर देखती रही। फिर बमन बोली, छोरी ! जरा जाजम अच्छी तरह बिछा दे। मसल पानी का प्रबन्ध कर दे। हुक्का भी भरला।"

धूप का एक टुकड़ा चोर की तरह खिड़की की राह कक्ष में घुस आया था। हवा थमी थमी। उमस हर आभास ऊष्मा से भरा भरा।

ठकुराणी तटस्थ सी बैठी थी। उसके हाथ में कोई धार्मिक पवित्र ग्रंथ था जिसे वह मन ही मन पढ़ रही थी। उसके ललाट पर ओज था। प्रशान्त शांति थी।

ठाकुर के कदमों की आहट धीरे धीरे गलियारा पार करती हुई उस कक्ष के सन्निकट आती गयी। लाख चाहते हुए भी ठकुराणी का ध्यान उस आहट की ओर चला गया। उसके ललाट पर हलके बल पड़ गये। उसने अपने को व्यवस्थित करना चाहा। पवित्र ग्रंथ को सहेज कर उसे एक साटन के वस्त्र में बाँधा। फिर उठकर अपने घाघर ओढ़नी और हाथों के जेवर बाजूबंद व बगड़ियों को ठीक करने लगी। उसका 'बोर' दपदप करके चमक रहा था और पाँवों में सवासेर की कड़ियाँ थी।

ठाकुर दरवाजे के आगे खड़े हो गये।

डावटी ने सिर झुका कर मुजरा किया "खम्मा अनदाता, क्या हुक्म!'

'बडी ठकुराणी से अज करें कि हम उनसे मुजरा करना चाहते हैं।

'अन्दर पधारिए। दाना हाथो व गदन का हिलाकर डावडी छाटी ने सकेत किया।

ठाकुर ने अपनी वाकडली मूछो पर ताव दिया और व कक्ष म घुस।

कक्ष के दरवाजे पर एक वद्धा डावडी बठी-बैठी पखा खीच रही थी। छत से लटका हुआ लकडी का पखा जिसके नीच बडी-बडी झालर लटक रही थी। सफेद रग क उस पखे पर लाल रग क फूल बन हुए थे।

कक्ष की जमीन पर ठाकुर बठ गय। ठकुराणी ने भुक कर मुजरा किया। ठाकुर ने एक पल उसे देखा। वर्षों बान गय—इस कक्ष म रात्रि-दीवला जलाय हुए। व सहसा करुणा स भर आय। अत्य त ही धीर स्वर म बोले हम आज परदश जा रह हैं। यहा जीवन निर्वाह क साधन खत्म होते लग रहे हैं। परदेश जाने क पहल आपका हुक्म चाहिए।'

ठकुराणी का चेहरा व्यथा से भर आया। अपनी दृष्टि को जाजम पर बिछा कर वे बोली 'आपका मुझसे हुक्म लने की क्या जरूरत पडी? मैं ब्राह्मण हूँ। वर्षों स इस चाहरदीवारी म बठी हूँ। मुझ एक जानवर की तरह चारा पानी डाल दिया जाता है, फिर कुछ नहीं। पर जीवन सिर्फ राटी पानी नही। जावन इसके अलावा भी कुछ और है।

डावडी ने हुक्का और घुला हुआ अफीम लाकर रख दिया था। ठकुराणी न उसकी आर सकत करके कहा अरोगिए ठाकुर सा!

ठाकुर स अपनी गम्भीर मुद्रा म ठकुराणी का एक क्षण क लिए देखा। तनिक औपचारिकता मे डूबते हुए स व बोल 'इसकी क्या

ठाकुर वहाँ से 'रावले' में आये। रावले के पश्चिमी द्वार पर जो बड़ा कक्ष था उसमें ठाकुर की पहली पत्नी चन्दनकुँवर रहती थी। चन्दनकुँवर बाँझ थी, परित्यक्ता थी फिर भी वह मान की धनी थी। उसने कभी भी ठाकुर के समक्ष अपनी विरह-वेदना का बखान नहीं किया। अपने अन्तस की अपार पीड़ा को उजागर नहीं किया। एक मूक दीर्घ जीवन! आहत नागिन की तरह ठहर ठहर कर सरकता हुआ। यही था और उसके जीवन का दायरा।

उसकी डावड़ी (दासी) ने भाग कर उसे प्रार्थना की, 'बड़ी ठकुराणी सा, आज ठाकुर सा पधार रहे हैं।'

ठकुराणी के मुख पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह उन्माद दृष्टि से डावड़ी की ओर देखती रही। फिर बेमन बोली, 'छोरी! जरा जाजम अच्छी तरह बिछा दे। अमल पानी का प्रबन्ध कर दे। हुक्का भी भरना।'

धूप का एक टुकड़ा चोर की तरह खिड़की की राह कक्ष में घुस आया था। हवा थमी थमी। उसका हर आभास ऊष्मा से भरा भरा।

ठकुराणी तटस्थ सी बैठी थी। उसके हाथ में कोई धार्मिक पवित्र ग्रन्थ था जिसे वह मन ही मन पढ़ रही थी। उसके ललाट पर ओज था। प्रशान्त शान्ति थी।

ठाकुर के कदमों की आहट धीरे धीरे गलियारा पार करती हुई उस कक्ष के सन्निकट आती गयी। लाख चाहते हुए भी ठकुराणी का ध्यान उस आहट की ओर चला गया। उसके ललाट पर हल्के बल पड़ गये। उसने अपने को व्यवस्थित करना चाहा। पवित्र ग्रन्थ को सर नवा कर उसे एक साटन के बस्ते में बाँधा। फिर उठकर अपने घाघरे, ओढ़नी और हाथों के जेवर बाजूबन्द व बंगड़ियों को ठीक करने लगी। उसका बोर दपदप करके चमक रहा था और पाँवों में सवासेर की 'कड़ियाँ' थीं।

ठाकुर दरवाजे के आगे खड़े हो गये।

डावडी ने सिर झुका कर मुजरा किया, 'खम्मा अन्नदाता, क्या हुक्म।'

बनी ठकुराणी स अज करें कि हम उनसे मुजरा करना चाहते हैं।'

"अन्दर पधारिए।' दोनो हाथो व गदन को हिलाकर डावडी छोटी ने सकेत किया।

ठाकुर ने अपनी वाकडली मूछो पर ताव दिया और व कक्ष मे घुस।

कक्ष के दरवाजे पर एक वद्धा डावडी बठी-बठी पखा खीच रही थी। छत स लटका हुआ लकडी का पखा जिसके नीचे बडी बडी झालर लटक रही थी। सफद रग क उस पख पर लाल रग क फूल बन हुए थ।

कक्ष की जमीन पर ठाकुर बठ गय। ठकुराणी न झुक कर मुजरा किया। ठाकुर ने एक पल उसे देखा। वर्षों बीत गये—इस कक्ष म रात्रि-दीवला जलाये हुए। व सहमा करुणा से भर आये। अत्य त ही धीर स्वर म बोले हम आज परदश जा रह हैं। यहाँ जीवन निर्वाह के साधन खत्म होते लग रहे हैं। परन्तु जाने क पहले आपका हुक्म चाहिए।'

ठकुराणी का चेहरा व्यथा से भर आया। अपनी दृष्टि को जाजम पर बिछा कर वे बोली 'आपको मुझस हुक्म लने की क्या जरूरत पडी ? मैं डावरण हूँ। वर्षों स इस चाहरदीवारी म बन्दी हूँ। मुझ एक जानवर की तरह चारा पानी डाल दिया जाता है, फिर कुछ नही। पर जीवन सिफ रोटी पानी नही। जीवन इसक अलावा भी कुछ और है।

डावडी ने हुक्का और घुला हुआ अफीम लाकर रख दिया था। ठकुराणी न उसकी ओर सकेत करक कहा। 'अरोगिए ठाकुर सा।'

ठाकुर स अपनी गम्भीर मुद्रा म ठकुराणी को एक क्षण के लिए देखा। तनिक औपचारिकता म डूबते हुए स व बोल "इसकी क्या

जरूरत थी बडी ठकुराणी सा !"

आप हमारे मालिये' म पधारे और हम आपका मान न करें !
ठाकुर सा ! आज सूरज पश्चिम म निकला है ' अरोगिये कसूम्बे'
को अरोगिय !"

ठाकुर ने अमल लिया। अमल लकर व फिर बोल 'क्यों हमको
जान का हुक्म है ?

मैं आपको राकनवाली कौन होती हूँ ! '

एसा न कहिय ठकुराणी सा, आज ही वर्षों क बा" हमारी आशा
पूरी हुई है। आप यह सुन कर बहुत राजी होयेंगा कि आपकी छोटी
ठकुराणी क पाव भारी हैं।'

पहले क्षण एक गहरी विषाद की परत बडी ठकुराणी के चेहरे पर
छायी और दूसर ही क्षण प्रसन्नता की। वह मुस्कराती हुइ बोली, 'यह
हमार कुटुम्ब क लिए बहुत ही शुभ हुआ। हम अत म क धा दनवाला
तो हागा। ईश्वर छोटी ठकुराणी सा की गोद पुत्र स भरें।

'कदाचित यह आपकी तपस्या का फल है। रात दिन भगवान को
आपही स्मरण करती है।

बडी ठकुराणी न काई उत्तर नही दिया। एक पीडा का सलाब
उसक भीतर उमड रहा था। पूरा एक युग बीत रहा है यही कक्ष,
एकान्त और परित्यक्ता का ऊब भरा जीवन !

'कसी हैं आप ?

उसन काई उत्तर नही दिया। प्रश्न भरी नजर मे उसने देखा।
दखती रही।

आपन मर सवाल का जवाब नही दिया।

मर पास काई जवाब ही नही है।

क्यों ?

क्योकि जो जीवन अभी जी रही हू उसका परिभाषा मैं नही
कर सकती। एक मरा हुआ जीवन। यदि आपन जीन न मत्यु नही

देखी है तो मुझे देखिए ! मैं एक ऐसी मृत्यु हूँ जो चलती हू, खाती-पीती हूँ बोलती हूँ जागती सोती हूँ एक विचित्र मृत्यु !"

ठाकुर सहम स गये । उनकी समझ म कुछ नहीं आया कि व क्या उत्तर दें। सचमुच पूरा एक युग बीत रहा है इस युग म उन्होंने बडी ठकुरानी को कभी स्पर्श भी नहीं किया। कभी-कभी औपचारिकता सने शब्दों के अतिरिक्त इससे कुछ पूछा भी नहीं। इस कक्ष की मोटी मोटी दीवारों के बीच सिर्फ जागना और रात भर करवटें बदल कर सुबह के सूरज के दर्शन कर लेना। सिर्फ बिस्तर पर पडते ही उसे थोडी देर के लिए गहरी नींद आती थी। शेष रात वह परदेशी की गोरडी की भांति तारें गिन गिन कर या ॐ नमः शिवाय' का जप करके बिता देती थी। यह दीर्घ नीरस जीवन !

ठाकुर सा !" उसने अपना मौन फिर तोडा। यह आपकी शान का प्रश्न था वरना और जगह इन दीवारों म जो अनैतिक व्यापार होते हैं, मैं भी उन्हें कर लेती। किसी गोल (गुलाम) या चाकर से अपने सम्बन्ध बना कर आपके चेहरे पर कालिख पोत सकती थी पर मैंने ऐसा नहीं किया। मैंने एकदम नीरस और शांत जीवन जिया है। जैसे सीधे पहाड की यात्रा। ठाकुर सा ! मैं मर्यादा के पीछे मर जाऊंगी, एक पतझरी जीवन जीते जीते।

ठाकुर सा ने उसकी ओर देखा। बडी ठकुरानी की आँखें आंसुओं स भरी थीं। ठाकुर न उसे पहली बार रोते हुए देखा। अफीम का नशा उन्हें भी चढ गया था इसलिए व गावतकिये के सहारे लेट स गये। एक युग पहले की स्मृतियाँ उनके मस्तिष्क म चक्कर निकालने लगीं।

उन दिनों बडी ठकुरानी भी युवा थी। युवा होने पर भी वह चचल नहीं थी, गभीर थी। ठाकुर उसे चाहते थे और प्रयत्न करते थे कि ठकुरानी अधिक से अधिक प्रसन्न रहे। दहेज म बडी ठकुरानी ज्यादा सम्पत्ति नहीं लायी थी। उन दिनों ठाकुर भी अधिक सम्पन्न नहीं थे। रियासत के भूतपूर्व महाराजा की उन पर विशेष अनुकम्पा अवश्य थी।

कई युद्धो म उन्होने अपनी वीरता के करतब दिखाये थे। इसके अति-
रिक्त महाराजा ठाकुर सा के व्यक्तिगत रूप से भी कृतज्ञ थे।

एक बार महाराजा के साथ भाटी सरदार शिकार खेलने गये थ।
घना पहाडी इलाका। दूर दूर तक फैली पर्वत चोटिया। बबूल कीकर
बेर की झाडिया पहाडी नागफनिया उन सबसे लिपटी हुई बेलें!

एक चोटी पर बनी थी 'शिकार ग्रोहदी'। सुरक्षा की दृष्टि स यह
ग्रोहदी बहुत ही महत्व रखती थी। जगली जानवर उसमे प्रवेश नही कर
सकते थ। नक्काशीदार बुर्जों की बनी यह ग्रोहदी काफी ऊची थी। उस
पर स शिकार का आयोजन किया गया था।

हाँक लगानेवाले जोर जोर स नगाडा पीट रहे थे। सारा जगल
अत्यन्त ही डरावना और भयावह हो उठा। शोर गुल की प्रतिध्वनिया
ने वातावरण को और हिंस्र बना दिया था।

आखिर एक सिंह दिखाई पडा। बबर सिंह! छह फीट लम्बा।
उसकी बडी बडी आखें अगारा सी दहक रही थी। महाराजा ने बन्दूक
सभाली और फायर किया। सिंह गोली स आहत होकर चिंघाड उठा।
सारा जगल उस चिंघाड स गूज उठा। आहत सिंह ने एक बार और
दहाड मारी और वह घने जगल म घुसने के लिए लपका ही था कि
महाराजा ने दूसरी गोली दाग दी। सिंह छटपटा कर चिंघाडता हुआ
वही पर चिर निद्रा म सो गया।

महाराजा अपनी इस विजय पर बहुत गर्वित हुए। उन्होने दरभरी
दृष्टि भाटी सरदार पर डाली। भाटी सरदार सिर नवा कर बोले
'महाराजा ने कमाल कर दिया। कितना अचूक निशाना!'

महाराजा धीमे स मुस्कराये।

उस रात खूब मौज मस्ती रही। नगर की प्रसिद्ध तवायफ का नृत्य
हुआ। शराब के प्याले खाली हुए और कस्या न कसूम्बा भी पिया।

सुबह महाराजा व उनका दल राजधानी की ओर रवाना हुआ।

घना जगल! रास्ते म धूपछाया बिछी थी। हवा जरा तेज थी

इसलिए साय सॉय कर रही थी।

राजा जा अपने दल बल सहित लौट रहे थे।

सूरज आकाश म चमक रहा था। बीच आकाश के सूरज की किरणें घने वक्षो से छन छन कर आ रही थी। राजा जी पालकी म सवार थे। खुली पालकी म। कहार पसीने स लथपथ पालकी उठाए हुए धीरे धीरे चल रहे थ। पालकी क चारो आर शस्त्रधारी रक्षक थ। उन रक्षका मे थे—भाटी सरदार ! लाल रग की पगडी बाँधे हुए और घुटना से नीचे तक की अचकन। गले म मोतिया की माला। हाथा म सोने के कड़े। कमर म लटकती हुई एक साथ दो तलवारें जिनकी मूठें भेडो के सिरों की थी जो बहुत ही आकषक लग रही थी। व सफद घोडे पर सवार थे।

सारा साथ धीरे धीरे चल रहा था। एक बैलगाडी पर मरा हुआ शेर पडा था। राजा जी की वीरता का प्रतीक ! देख कर रागटे खडे हो जाय। मृत सिंह को देख कर भी मनुष्य कँप कँपा जाता था। कितना भयानक शेर था। ऐसा लग रहा था जसे जीवित सो रहा हो।

अप्रत्याशित जोर का कोलाहल उठा।

सनिका ने त्वरा से देखा कि एक सिहनी झपटती हुई राजा जी के सन्निकट पहुँच गयी है। वह अत्यन्त खूखार लग रही थी।

पालकी क कहार शाघ्रता स कदम उठाने लगे। तभी सिंहनी ने अपने खूंखार पजा स एक कहार को धर दबोचा। पालकी उलट गयी। इस अचानक आक्रमण के कारण चारा ओर खलबली मच गयी। बन्दूकधारी बन्दूक चलाना भूल गये। सिफ आतक और भयभीत आकृतियाँ !

राजा जी से न बोला गया और न भागा गया। उनकी स्थिति बडी दयनीय थी।

तभी भाटी सरदार अपने इष्ट देव को स्मरण करके सिहनी की ओर लपक। उन्होंने अपने सिर की भारी पगडी को बाये हाथ म

पकड़ा और प्रहार करती सिंहनी के मुंह में डाल दिया। सिंहनी भी प्रतिशोध भरी थी। उसने भी भाटी सरदार पर जोर का पंजा मारा। भाटी सरदार की अचकन फट गयी और कंधे से धीरे धीरे रक्त चूने लगा। तभी उन्होंने अपनी तलवार म्यान में से निकाली और एक ही झटके में सिंहनी की कमर को आधे से अधिक काट दिया। सिंहनी इस तरह शांत हो गयी जैसे वह कोई यान्त्रिक सिंहनी हो।

भाटी सरदार ने राजा जी को सम्भाला। राजा जी अब भी पालकी में अर्धमूर्छित से पड़े थे। उनके नेत्र ऐसे मूंदे हुए थे जैसे भयानक मृत्यु को अपने समक्ष अनावृत और सन्निकट देखकर वे प्रभु को स्मरण करने लगे हों।

चन्द सरदारों ने लपक कर राजा जी और भाटी सरदार को सँभाला। राजाजी के मुंह पर ठंडा पानी छिड़का गया। उन्होंने नेत्र खोले। देखा सिंहनी अधकटी सी मृत पड़ी है। भाटी सरदार का राजवैद्य उपचार कर रहे हैं। कहार जो मर चुका था उसे दूसरे कहार सँभाल रहे थे।

राजा जी ने सचेत होते ही कहा, 'सब मंगल है न ?"

जी अन्नदाता।

सेनापति गौरसिंह ने सिर नवा कर कहा 'आज भाटी सरदार नहीं होते तो रियासत का सिंहासन खाली हो जाता। भाटी सरदार ने अपनी जान हथेली में रखकर आपके प्राणों की रक्षा की है। कितना चमत्कार-पूर्ण करतब किया है सरदार जी ने ! क्या वार किया ! सब चकित !

राजा जी उठ कर भाटी सरदार के पास गये। उनकी ओर कृतज्ञता से देख कर कहा आपने आज हमारे प्राणों की रक्षा करके हमें सदा के लिए अपना मानहृत बना लिया। हम कैसे आपके उपकार का बदला चुकायेंगे।

भाटी सरदार नयी अचकन पहनते हुए धीमे से मुसकाये। उनका चेहरा उदास हो गया था। व्यथा की परतें उनके ओजस्वी मुख का बुझा-बुझा सी गयी मानो उन्हें अथाह पीड़ा हो रही थी। फिर भी

उन्होने राजा जी की ओर अत्यन्त ही कृतज्ञता भरी दृष्टि से देखा और कहा 'इसमें महाराज को उपकृत करने जैसी कोई बात नही है। मैंने अपना कर्तव्य पूरा किया है। जिसकी चाकरी खायी जाती है उसका हक भी बजाना चाहिए।"

राजा जी उनके उत्तर से किंचित गर्वित हुए और बोले "समय की बात होनी है। थोडी चूक कितना बडा विनाश कर सकती थी।' फिर उन्होंने अपने अपने कर्मचारियों की ओर देखा। सब अभी तक इस घटना के कारण विमूढ से खड़े थे। एक ठहराव था सभी प्रक्रियो के बीच।

'सेनापति जी।

'जी अन्नदाता।'

'एक दूसरी पालकी का प्रबन्ध किया जाय।"

क्या ?'

"भाटी सरदार अब पालकी में ही जायेंगे। उन्हें आराम की सख्त जरूरत है। घाव सघातिक भले ही न हो पर लापरवाही करने लायक भी नहीं है।'

'जो आज्ञा।

भाटी सरदार अब राजा जी के समक्ष खड़े हो गये थे। उनके नेत्रों में पीड़ा लहक रही थी। होठों पर सूनापन तैर आया था।

प्रधान रसोइए ने शीघ्रता से दूध और घी का मिश्रण तैयार कर लिया था। उसे चाँदी की गिलास में भर कर भाटी सरदार को दिया गया। भाटी सरदार ने एक बार पीने की आज्ञा के लिए राजा जी की ओर देखा। राजा जी ने मुसकराकर अपनी आँखों से पीने का संकेत किया।

एक साँस में भाटी सरदार ने गिलास खाली कर दिया। डकार ली।

इस प्राण रक्षा के उपलक्ष में भाटी सरदार को दूसरे दिन वयोवृद्ध दीवान की जगह रियासत का दीवान बना दिया। यह शुभ समाचार

उन्हे पलग पर विश्राम करते हुए मिला।

बडी ठकुराणी को रावले म डावडी न आकर यह समाचार सुनाया।

बडी ठकुराणी बठी बठी मौन पड रही थी। इस सवाद को सुनकर वह फूल की भाति खिल उठी। सज धज कर शयनकक्ष म आयी। तब उसके श्याम वण स यौवन की सुवास महक महक रही थी। उसकी कचुकी म झाकती उसकी श्याम देह का आकषण सम्मोह जगा रहा था। लम्बा कद पुष्ट छातियाँ, पतली कमर और विकट नितम्ब! जसे तराशी हुई प्रतिमा।

उसे देख कर ठाकुर सा मुसकराये। दृष्टि म गहरा अपनापन लाकर बोले 'विराजिए ठकुराणी सा!'

'आपसे पुरस्कार लेने आयी आयी हूँ।'

'हमसे?' चौंक पडे ठाकुर।

'हाँ, आपसे।'

'पर किस बात का।' जान कर अनजान बन कर ठाकुर बोले। उनकी आकृति पर भी पुलक की भावना क्रीडा करने लगी थी।

'आप रियासत के दीवान बन गये हैं न!'

शयनकक्ष म जो डावडी थी उसे जाने का सकेत कर दिया था बडी ठकुराणी ने।

एकात! बडे बडे गवाक्षो से आता हुआ पवन! एक जगल जसा अनात मौन! ठकुराणी की आँखो म प्रसन्नता का सरोवर! ठाकुर के नेत्रो म प्रश्न!

'आप क्या देख रहे हैं?'

'हम देख रहे हैं कि हमारी ठकुराणी को आज कितनी प्रसन्नता है! हम दीवान बन गए हैं पर दीवान कितनी कठिनता से बने? जानती हो हम कल राजा जी की प्राण रक्षा करते हुए स्वय एक स्वामी भक्त सरदार की भाति बलिदान भी हो सकते थ। यह तो कुल

देवी की कृपा रही बना हम ।'

ठकुराणी उनके निकट बठ गयी। उनके हाथ पर अपनी हथेली फेर कर बोली, एसे अपशद मुह से मत निकालिए। भगवान सबका रखवाला है।'

'मैंने भगवान शकर के सवा मन घी ढालने का सकल्प लिया है। घाव के ठीक होते ही पहाडी मदिर के शिवशकर के दशन करने जाना है और सवा मन घी ।'

'भगवान शिव सब अच्छा करेंगे।"

अब हमारे मन म एक इच्छा और है ?"

'वह क्या ?"

'उसे आप पूरा कर सकती हैं।"

'मैं ?' ठकुराणी ने अपनी ओर सकेत करके पूछा।

'और कौन ?'

'दीजिए आज्ञा। आपकी आज्ञा का इसी पल पालन किया जायेगा। मैं आपक चरणा की दासी हूँ। भला मैं आपके ।

ठाकुर ने एक पल अपनी दृष्टि ठकुराणी पर से हटा कर भाड-फानूस पर डाली। नीले रग का विदेश का बना भाड अपनी कलात्मकता के कारण आकषण का बिद बना हुआ था। एक बार ही नही बार बार उस पर नज़र जम जाती थी।

ठकुराणी ने ठाकुर की हथेली को अपनी हथेली स खाला और उस धीरे धीर सहलाती हुई बाली कहिए, आप आना दत दत चुप कसे हो गय ?

ठाकुर न उसकी ओर नही देखा। वे गाव तकिये के सहारे बठ गय। अब उनकी दृष्टि म गवाक्ष के बाहर का आकाश का एक टुकडा था। विस्तृत नीला आकाश। उसी तरफ दृष्टि जमाय हुए उन्होने कहा 'अब सिफ इस डर म 'सोवन थाल' बजना बाकी रहा है। जिस घर म टाबर टोली नही, वह घर मसान सा लगता है।

ठकुराणी का श्यामवर्ण और स्याह पड गया। कुछ क्षणो के लिए उस पर विमूढता छा गयी।

विवाह किये पूरे पाच साल हो गए हैं ? पता नही हमारी यह आशा आप कब पूरी करेंगी। मां जी सा तो इस आशा को मन म लेकर ही परलोक सिधार गयी।'

विषाद का आवरण ठकुराणी की आकृति पर और गहरा होता गया। वह टूटे हुए स्वर म बोली 'इसम मैं क्या कर सकती हूँ ? मेरे वश का यह नही। यह सब परमात्मा के अधीन होता है। ठाकुर सा इसी बात का मुझे बड़ा दुख है।

आप उदास मत होइए। यह सब बस भाग्य के खेल हैं। ठाकुर ने सोचा कि उन्होने ठकुराणी पर आरोप लगा कर ठीक नही किया इसलिए व अपनी बात को कोमल बनाने की चेष्टा म लग गय।

'भाग्य! उसने इस शब्द को जरा निममता से दोहराया और वह उठ गयी।

आप नाराज हैं ?'

नही।

फिर ?'

कल मैं इस बात का सार निकालूगी। घाटी की जोगन क पास जाऊगी। वह विज्ञान की बात जानती है। उसके ध्यान म प्रत्यक व्यक्ति का भूत भविष्य और वतमान तरता है। मैं उसक सामन गिड गिड़ाऊगी। उसके चरणो म पड कर अरदासना करूगी—मां मुझे भी बता कि मेरी गोद भरेगी या नही ?

ठाकुर न उसका हाथ पकड कर कहा नही ठकुराणी सा कुछ एसी बातें होती हैं जिनक प्रति उत्सुकता ही रहे तो हो उत्तम। उस बात क चरम सार की प्राप्ति मनुष्य को अतिम निणय लने क लिए बाध्य कर देती है। अच्छा या बुरा निणय! या तो मिलता चरम दुख या परम सुख! यह स्थिति विकट होती है इसलिए आप इस चक्कर

म न पड़ कर भगवान पर भरोसा रखिए और ।

'नहीं। ठकुराणी ने दृढ़ता से कहा, ऐसा नहीं हो सकता अब मैं इस स्थिति म नहीं रह सकती। बहुत ही पीडादायक और अपमान जनक है यह स्थिति।"

भाटी सरदार का स्वर सहसा अत्यन्त ही विनम्र हो गया। वे ठकुराणी को अपने पास बिठाते हुए बोले, आवेश म मनचाहा कदम उठान की आज्ञा मैं नहीं देता। आप शांति स अपन कतव्य का पालन कीजिए। भगवान पर भरोसा रखिए वह सब मनोरथ पूरा करेंगे। व्यथ ही घाटी की जागन वोगन के चक्कर म पड कर अपने आपको आशकाओ और दुराशाओ म मत घेरिए।'

ठकुराणी की आखें डबडबा आयी। वह रुद्ध स्वर म बोली आप नहीं जानते कि किसी स्त्री का बाझ होना कितना अपमानजनक होता है? सुबह कोई उसका मुह देखना नहीं चाहता। रास्ते म मिल जाय तो यात्री रास्ता काटता है या वापस लौट जाता है। म ऐसा दुखदायी स्थितिया मे नहीं रह सकती।

ठाकुर न फिर अपनी बात दुहराया 'य सब भाग्य के खेल हैं। विधि का विधान नहीं बदला जा सकता।

ठकुराणी को इससे धय कहा? सात्वना कहा? वह अविचल हो उठी। उठ कर अपनी निजी कक्ष म आकर सिसक पडी।

अफीम की पिनक जो आयी थी, वह चली गयी। ठाकुर जो बडी के कक्ष म अब तक पडे थ अचानक सचेत होकर बोल, 'ओह! बहुत समय बीत गय। आपन हम जगाया नहीं! हम रवानगी की तैयारिया करनी हैं।

ठकुराणी एक सूखी मुसकान अपने अधरो पर धावित करती हुई बोली, मैं आपक विश्राम म बाधा डालने वाली कौन हू?'

'अच्छा अब हम चलें।' कह कर ठाकुर कक्ष के बाहर हो गए।

ठकुराणी अथाह-पीडा स घिर गयी। जाते हुए ठाकुर की वह पीठ

को निहारती रही ।

उसे भी स्मरण हो आया । वह दिन उसके जीवन का चरम दुखित दिन ! वह रात भर सो नहीं सकी थी । वह बाँझ का जीवन लेकर नहीं जी पायगी । लोगों की दृष्टियाँ उसे नहीं जीने देंगी । इसलिए वह दूसरे दिन सुबह ही घाटी की जोगन के निवास स्थान की ओर चल पड़ी ।

सूर्य देवता अभी तक प्राची में नहीं उगे थे । पर्वत की विशाल चोटियों के बीच छोटी छोटी घाटियों में अब भी धुंधलका छाया हुआ था । वृक्षों की शाखों पर पक्षी पखेरू अब भी सोये हुए थे ।

ठकुराणी अपने दो बन्दूकधारियों व चपरासियों के साथ चल पड़ी घाटी की जोगन के पास । घाटी की त्रिकालदर्शी जोगन ! बहुत से लोग उसे जोगन माँ कहते थे ।

ठकुराणी के साथ तीन थाल थे । उन थालों में पूजा का सामान, वस्त्र और जोगन माँ को भेंट थी । जंगल में झरबेरियाँ, कीकर और नीम के वृक्ष इतने निस्तब्ध खड़े थे मानो अभी वे जागे ही नहीं हैं । सिर्फ घाटी के सन्नाटे में उनके कदमों की आहट गूंजती थी ।

लगभग दो घंटे के निरंतर यात्रा के पश्चात बड़ी ठकुराणी जोगन माँ के पास पहुँची ।

एक काली पहाड़ी के टुकड़े के नीचे जोगन माँ की कुटिया थी । नागफनी से घिरी हुई । कुटिया के बाहर एक तुलसी का बिरवा था । घास की बाड़ सी बनायी हुई थी ।

ठकुराणी भय दग्ध जोगन माँ की कुटिया के सम्मुख पहुँची । वहाँ निर्जनता देख कर वह अज्ञात आशंका से सिहर गयी ।

कहीं माँ नाराज हो गयी तो ? सुबह सुबह उसका मन बिगड़ गया तो ? वह शाप दे सकती है । भयंकर से भयंकर अनिष्ट कर सकती है ।

ठकुराणी अचल सी खड़ी रही ।

अप्रत्याशित उसने देखा पवत शिखर पर सूरज की किरणें पसरने लगी हैं। किरणा की चमक के साथ साथ कुटिया का दरवाजा खुल रहा है चरमराता हुआ और उसम से एक कुतिया निकल रही है। काफी तगडी और ऊँची कुतिया। कुतिया इन अजनवियो का देखते ही भौंकने लगी। उन्ह भौंकते हुए देख कर जोगन माँ तीव्र स्वर म बोली, 'भरवी भरवी शात। आप लाग वाहर रहिए मैं अभी आती हूँ।"

ठकुराणी मन ही मन मुदित हुई। भरवी पूछ हिलाता हुई कुटिया के पीछे चली गयी।

ठकुराणी का सारा दल मूक अचल खडा रहा।

थोड अन्तराल क पश्चात जोगन मा बाहर निकली। उसके स्वस्थ शरीर से आयु का अनुमान कठिन था। तेजस्वी मुखमण्डल। गहरी दहकती सी आँखें। शरीर पर सिफ कमर और छाती से लिपटा हुआ वस्त्र!

ठकुराणी ने अपनी दासियो को सकत किया। तीनो थाल जोगन माँ क चरणा म भेंट चढा दिए गए। जोगन मा ने उन्ह देखा तक नही।

कहो ठकुराणी, अपन भविष्य को जानना चाहती है। अकेले म जानना चाहती है या इन सबके समक्ष!'

माँ अकेले म।

फिर इन्ह यहा से रवाना करा। मेरे पास अधिक समय नही है।

दासिया और ब दूकधारी चले गये।

एकान और एकात। जागन माँ वापस कुटिया म चली गयी। बडी ठकुराणी अकेली प्रश्नचिह्न सी खडी रही। चारो ओर मौन ही मौन!

कुछ क्षण और सरक गए।

माँ वापम आयी। आकर बाली 'तुम्हारा दुख मैं जानती हूँ ठकुराणी अपनी जन्म पत्री लाई हो।

हां मां ।' कह कर ठकुराणी ने अपनी जन्मकुंडली एक थाल में से निकाल कर मां के समक्ष रख दी। मां उसे लेकर देखने लगी। फिर आदेश दिया, 'भीतर आ जाओ।'

ठकुराणी कुटिया के भीतर गयी। उसे यह देख कर बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि कुटिया में कुछ नहीं है। एक कमण्डल, दो चार वस्त्र, धूनी और चिमटा। एक शेर की खाल जो मां के बिछौने की जगह काम में आती थी। दो टूटे हुए भिक्षा पात्र।

'बैठ जाओ।'

'ठकुराणी बैठ गयी।'

जोगन मां जन्मकुंडली देखने लगी। अपने आप में लीन सी। मां की मुद्रा सारे क्षण सामान्य रही। ठकुराणी के हृदय में तेज उथल पुथल थी। संघर्ष था। क्या कहेगी मां? शुभ या अशुभ?

मां ने जन्म पत्री को बन्द करते हुए कहा, 'तुम्हारे जीवन में घोर एकान्त लिखा है।

'पर मां! सन्तान...।

'तुम्हें सन्तान नहीं होगी। जीवन भर नहीं होगा।

'मां!"

"अब तुम जा सकती हो।

कोई उपाय!'

'विधि का विधान और नियति को कोई आज तक बदल सका है? नहीं! नियति अपने अदृश्य हाथों से हमें अपने चमत्कार आकस्मिक रूप में दिखाती है। यह सत्य है कि तुम्हें कोई सन्तान नहीं होगा। ऐसा तुम्हारे ग्रह ग्रन्थ बताते हैं। मैं क्या करूँ? मैं कोई ईश्वर नहीं कि जो चाहूँ वो कर दूं।

लेकिन मां आप चाहें तो...?

जोगन मां विहँस पड़ी। बोली, 'ये सब निराधार बातें हैं। लोग अपने मन में अपने परिवेश में रहनेवाले प्राणियों के बारे में चमत्कारी बातें

बना लेते हैं। प्रमामान्य घटनाम्रा को जोड लेते हैं। कुछ भी प्रमामान्य प्रौर चमत्कारी यहाँ पर नही है। केवल प्रात्मशक्ति प्रौर प्रध्ययन द्वारा प्राप्त किया हुप्रा ज्ञान। मैं ज्योतिष शास्त्र को जानती हूँ। गहरा प्रध्ययन किया है इसलिए सही बात कह देनी हूँ।"

ठकुराणी ने इस पर भी यही समझा कि माँ मुझे टालना चाहती है। ये ईश्वर तुल्य हैं। सब लोगों के दुख सुख में काम प्रानेवाली हैं। इसलिए उनके चरणों को पकड कर वह बोली, 'नही माँ, मुझ पर दया करो मैं बहुत दुखी हूँ। सिर्फ प्रापका ही प्रासरा है मुझे।"

माँ के स्वर में करुणा भर प्रायी। वह बोली, मैं लाचार हूँ। अपनी विद्या की जानकारी के बाद मैं कुछ भी करने में प्रसमर्थ हूँ। एक प्रपरिवर्तित सत्य है यह!'

प्रापके द्वार से मैं हताश प्रौर दुखी होकर जाऊँगी?' ठकुराणी की प्राँखें भर प्रायीं।

मा दृढ़निश्चय के स्वर में बोली, 'जगतनियन्ता प्रौर सर्वशक्तिमान ईश्वर जो होनी को प्रनहोनी प्रौर प्रनहोनी को होनी कर सकता है वह भी उस नियति के समक्ष निरुपाय है। यह बडी अजेय है। मेरा ज्योतिष ज्ञान कहता है कि तुम निःसंतान रहोगी तुम्हे कभी भी संतान नहीं होगी पर क्या नियति ? उसके बडे विचित्र खेल है। उसके इतने प्रज्ञात प्रनिश्चित प्रौर प्राकस्मिक चमत्कार होते हैं कि प्राणी चकित प्रौर स्तब्ध । उसी नियति की प्राराधना करो। उसी प्रकृति की प्रार्थना करो जिसका सार प्रगम है।

जोगन माँ उठ खडी हुई। उसने पुकारा भैरवी भैरवी!"

लपक कर मा की कुतिया भैरवी प्रा गयी।

कमण्डल उठा जंगल चलें।

फिर जोगन माँ ने ठकुराणी को देखा तक नहीं। घाटी की शून्यता में वह प्रद्भुत प्रात्मा खो गयी।

ठकुराणी पत्थर की मूरत की तरह वहां बडी देर तक खडी रही।

फिर उसने अपनी दासियो का आवाज दी। सारे क सार उसक समक्ष नतसिर खडे हो गए।

'चलो।' आदश दिया ठकुराणी ने।

विशान डरे म आकर ठकुराणी टूट गयी। अपन नयनकक्ष म फफक फफक कर रोन लगी।

रात्रि के समय ठाकुर सा ने बुलावा भेजा, वह नही गयी। अस्व स्थता का बहाना कर लिया।

इस तरह ठकुराणी सभी सम्बन्धो स कट कर एकात की ऊब और पीडा सहती रही। अरुचि से खाना और अरुचि से पहनना।

अत मे ठाकुर सा आए। अब वे काफी स्वस्थ थे। सोच रहे थे कि एक दो दिनो म वे रियासत के दीवान का पद सभालेंगे।

ठकुराणी की दावडी ने आकर सूचना दी 'ठाकुर सा रावले म पधार रहे ह।'

ठकुराणी ने जाजम का व्यवस्थित कराया।

सुबह ढल कर दोपहर म मिल रही थी। सारे डेरे म अत्यन्त ही व्यस्तता दृष्टिगोचर हो रही थी।

ठाकुर सा के पीछे एक दास आ रहा था।

रावले के पास पहुँचने ही वह दास चला गया और ठाकुर न प्रवश किया।

ठाकुर को झुक कर ठकुराणी ने मुजरा किया। बठन का कोमल स्वर मे अनुराध किया। क्षमायाचना करती हुई वह बोली मुझे आप क्षमा करेंग इधर सहत ठीक नही रही। बराबर कुछ न कुछ होती रही।

ठाकुर सा जाजम पर बठ गए।

एक दावडी ने लपक कर हुक्का ला दिया। हुक्के की नली को मुह म लकर उन्हान गुड गुड ट ड ड की आवाज क मध्य एक कश खीचा।

'कसूम्बो मगवाऊँ ?'

'नही ।"

''कैसे पधारे अभी अचानक ?"

'ठाकुर अत्यन्त गम्भीर स्वर म बोले, "सुनिए ठकुराणी सा, आप के बीमार होन का कारण हम अच्छी तरह जानन है । जब स हमने सन्तान की बात कही है, आप उसी दिन से बीमार पड गयी है।' ठाकुर न एक बार हुक्के का हलका कश फिर लिया । बोन 'पर यह सब प्रभु के खेल हैं । भाग्य की बातें है । इसके लिए मनुष्य को चिन्ता करना ठीक नही लगता ।'

'पर इसस कुटुम्ब भी खत्म हो सकता है । भाटी वश की लौ सदा के लिए बुझ सकती है ।

ठाकुर अत्यन्त ही निराशा से बोले, "पर इसक उपाय भी क्या हो सक्ता है ? '

ठकुराणी ने डावडी को जाने का सकत किया । उसके जाते ही वह ठाकुर के सन्निकट बठ गयी । बोली आप दूसरा विवाह कर लाजिए । हमार यह धम और परम्परा से भी है ।'

ठाकुर के हृदय पर हलका आघात लगा । निमिष भर व स्तब्ध रहे फिर बाल 'ऐसा कसे हा सकता है ! आप म दोष ?"

वश की रक्षा के लिए यह जरूरी है । ठाकुर सा ! आपको मेरी सौगन है मरे लिए आपका दूसरा विवाह करना ही पडगा ।"

ठकर ने ठकुराणी के प्राथनाओ स भरे चेहर को दखा । देखने रहे फिर भी निणय की स्थिति म नहा पहुँचे ।

ठकराणी न पुन विनीत स्वर म कहा 'अन्नदाता ! आप इस तरह साच म मत डूबिए । वश क लिए यह धम और न्यायसगत है । इस तरह ता सुरगढ के भाटा वश का नाम ही मिट जायगा । हम सब का इहलोक परलोक दाना बिगड जायेंग । हम अ त समय पाना देने वाला भी नही मिलगा । इस पर विचार कीजिए गम्भीरता स विचार

कीजिए ।

और पूरे एक महीने के बाद ठाकुर सा का विवाह महाकुंवर से हो गया । बारात में राजाजी के अतिरिक्त सभी उमराव सरदार और सामंत थे।

महाकुंवर के पिता जो भी एक समृद्ध ठिकाणे के स्वामी थे । दीवान भाटी सरदार से अपनी बेटी का लगन तय करके वे प्रसन्न हुए थे । परिणय पर उन्होंने दारू कसूम्बा और नृत्य गीतों का समां बांध दिया ।

विवाह की रात !

सारे सरदार नशे में धुत थे । अपनी अपनी बोझिल पलकों को उठा उठा कर दारू के घूंट ले रहे थे । महाकुंवर के पिता ठाकुर सतजसिंह ने पहले से ही अपनी निजी दारू की भट्टी से बेशुमार दारू निकाल लिया था ।

बारादरी ।

चारों ओर मशालों का तेज प्रकाश । कई जाजम बिछी हुई थी । मेवाड़ की प्रसिद्ध ढोलनियां आयी हुई थी । उनके अर्धनग्न नृत्य के साथ गाना ! यौवन अनावरण हो रहा था । गीत नृत्य के आरोह अवरोह के साथ वासना का ज्वार सा उमड़ा हुआ था ।

मुख्य ढोलन गा रही थी—ओलू ! याद ! यादों के साथ प्रकाश के कांपते सायों के साथ मिल गये थे । मुख्य ढोलन एक सामंत के पास बैठ कर उनके हाथ को अपने हाथ में लेकर बोली—

राजा री ओलू म्हें करां ओ
हां आ गढपतियां राजा
म्हारो करें न कोय
नींद नहीं आवे म्हारा राज
कागद थोड़ा हेत घणा
कूकर लिखूं बणाय

सागर म पाणी घणो
गागर कोण समाय
ओलू घणी जाव म्हारा राज

मुख्य ढालन नशे क कारण उन्मादित थी। अन्य ढोलना की कचु किया के बन्द खुल गये थ जिनके कारण उनकी छातिया कामात्तेजक मुद्रा म हिल रही थी। सार सरदार उचक उचक कर गीत का आनद ले रह थे। फिर भी उनकी दशा बडी उपहासास्पद थी। व बडी कठिनता स बैठते और फिर छोटे बच्चे की तरह लुढ़क जाते। नशे की गहरी खुमारी के बावजूद भी कुछ ढालनें उनकी इस स्थिति पर होठो मे ही मुसकरा रही थीं।

आधी रात के होते होत बारादरी म गहरा सन्नाटा छा गया। एक ओर सरदार नशे म अचेत पडे थे और दूसरी ओर तीन ढोलनियाँ! किसी को कुछ भी होश नही।

रात ढली तो नशा कुछ कम हुआ। ढोलनिया अपनी कांचलियो के बन्द सभालती हुई भागीं।

बारात वापस आयी।

महाकुवर का सुरगढ के डर म एक बार लोक गाना स स्वागत हुआ।

□ □ □

मदाकुवर का स्वभाव बहुत ही तज था। घमण्ड उसका नस नस म समाया हुआ था। अपन श्रेष्ठ खानदान क किस्स कहानिया वह प्राय अपनी डावडियो का सुनाया करती थी। अपन साथ हजारा रुपया की सम्पत्ति क साथ साथ बीस दासियाँ और पाँच दास भी दहेज म लायी थी।

महाकुंवर ने बड़ी ठकुराणी को न कोई सम्मान दिया और न कोई स्नेह! वह अपने घमण्ड में चूर रहा।

औपचारिक रीति रिवाजों के अतिरिक्त उसने बड़ी ठकुराणी से भेंट करना भी ठीक नहीं समझा। ठाकुर रियासत के विशेष काम से विवाह के दो दिन बाद ही ठिकाणे से चले गए थे।

विशाल डेरे में रह गया था ठकुराणियां और कई गुलाम! उनका नारकीय जीवन!

(महाकुंवर का सौन्दर्य भी प्रकाशपुंज की भांति था। अधिक मांसल न होने के बाद भी उसका गौर वर्ण और तीखे नाक नक्श अत्यन्त वासना-लिप्त लगते थे। उसकी दोनों बड़ी बड़ी नीली आंखों में क्षुधा आतुर ललक की तरह दिखायी पड़ रही थी।

एक सप्ताह बीतते बीतते उसने ठाकुर को एक चिट्ठी लिख कर अपने साथ आये दास धनसुख के हाथ भिजवा दी। धनसुख के पास अत्यन्त ही तेज भागने वाली सांडनी थी। इतनी तेज कि एक घंटे में दस पन्द्रह मील का रास्ता तय कर लेती।

धनसुख तूफान की गति से गया। ठकुराणी की चिट्ठी ठाकुर के हाथ में दी।

जोग लिखी सुरगढ से छोटी ठकुराणी का पावधोक बंचना। और समाचार है कि आपके जाने के उपरान्त मेरा मन नहीं लगता है। सो आप कृपा करके जल्दी जल्दी आयें। (आपको मालूम ही है कि आपके बिना मेरी सियाले (सर्दी) की रातें कितनी मुश्किल से कटती हैं। रात इतनी लम्बी हो गई है जितने किसी जादूगरनी के बाल! नींद रात भर में कई बार उचट जाती है और फिर आपकी ओलू (याद) इतनी सताती है कि आंखें भर आती हैं।) इसीलिए आपसे हाथ जोड़ कर प्रार्थना है कि चिट्ठी पढ़ते ही आ जाइए। वैसे सपने देखना भी दुखदायी होते हैं। मैं फिर आपसे विनती करती हूं कि चिट्ठी पढ़ते ही आ जाइयेगा।

ठाकुर ने अनमने भाव से चिट्ठी पढ़ी। पढ़ने के पश्चात् उनके चेहरे पर किसी तरह की कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। उन्होंने घनसुख को ठहरने के लिए कहा और स्वयं ने जमकर पत्र लिखा।

मिष श्री रियासत शुभ जोग लिखी छोटी ठकुराणी को ठाकुर का प्रेम पढ़े। हम यहाँ कुशल पूवक हैं। कुशलता के साथ साथ बड़े चिंतातुर हैं। महाराज कुवर कुशलसिंह जी और राजा जी के सम्बन्ध दिन प्रतिदिन जहरीले होते जा रहे हैं। महाराज कुवर रात दिन राजा जी के विरुद्ध कोई न कोई षडयन्त्र रच रहे हैं।

बड़ी विकट स्थिति है। किसी भी क्षण कोई संकट किसी भी व्यक्ति को घेर सकता है। अन्याय राजा जी का है। राजा जी ने कई शादियाँ की हैं। उसमें एक हाडी रानी भी है। सुनते हैं कि हाडी रानी से विवाह करने के पूर्व राजा जी ने उनके माँ-बाप को यह वचन दिया था कि उन्हीं की सन्तान का ही रियासत का स्वामी बनायेंगे यह वचन कब और किस समय दिया यह कोई नहीं जानता। पर राजा जी इस बात पर अड़े हुए हैं कि उन्होंने जो वचन दिए हैं उसका पालन करेंगे। चूंकि राजा जी इस रियासत के सर्वोच्च प्रभुता सम्पन्न व्यक्ति हैं इसलिए वे अपने वचनों से न्याय और कानून को बदल सकते हैं। पर महाराज कुवर की पीठ पर उनके ननिहाल के वीर बांकुरे राठौड़ा का हाथ है। उनके मामा राव दुर्ग राठौड़ इस बात को मानने को कतई तयार नहीं हैं और न सहने का राव दुर्ग ने राजा जी को स्पष्ट रूप से लिख दिया है कि यदि उनके भानजे के हक को मारा गया तो राठौडी सेनाएं आपकी रियासत की ईंट ईंट बजा देंगी। धरती रक्त रंजित हो जायगी और नरमुंड खिलौना की तरह बिखरे हुए नजर आयेंगे।

इधर हाडा सरदार बार बार राजा जी को चेतावनी दे रहे हैं कि वे विवाह के पूर्व दिये गये वचनों का पालन करें वर्ना हाडा सेनाएँ रियासत की ओर तूफान की तरह बढ़ सकती हैं।

राजा जी भी हाडो का पक्ष ले रहे हैं नीति और धर्म के अनुसार

इनका पक्ष उचित नही । न्यायसगत नहा । मैंने उन्हें समझाया तो व थोडे नाराज होकर बोले आप हमारे चाकर हैं आपका कतव्य है कि आप हमारी आज्ञा का पालन करें।' हम विवश हैं। चाकरी का कतव्य हम महाराज कुवर का विरोध करने के लिए विवश कर रहा है।

हाडा वीर खुल रूप स रियासत म आ गये हैं। राजा जी उनका समथन कर रहे हैं और राठौड छद्म रूप से जहाँ तहा रियासत म फल गये हैं। पता नही, क्या भयानक परिणाम निकलने वाला है ?

ऐसी स्थिति म हमारा आना सभव नही है। जो भीतर ही भीतर आग जल रही है वह कुछ ठडी होने पर ही हम आ सकते हैं।

विशप क्या लिखें ? आप स्वय समझदार हैं। चिट्ठी देती रहे। ठिकाणे की देख भाल अब आपके जिम्मे है।

चिट्ठी लकर उसी दिन धनसुख आ गया। उसके पाँचवें दिन स्वय ठाकुर ठिकाण आ गये। बिलकुल टूटे टूटे और उदास। उनका चेहरा जद था। अमल पानी स मुक्त होने ही छोटी ठकुराणी ने उनकी उदासी का कारण पूछा 'क्या बात है ! आप जब स पधारे हैं तब से खाय खोये लग रहे हैं। क्या कोई अघटा घटित हुआ है !

जी ?

क्या ?' महाकुवरि भी गभीर हो गयी।

'बहुत ही अशुभ ?

'ऐसा क्या ?' ठकुराणी ने अपने सिर स खिसकते हुए आचल को जरा सान क वारिय पर किया। वह अपलक दृष्टि से ठाकुर को देखने लगी।

हमारी नौकरी खतम हो गया है। महाराज कुवर ने हम जवाब दे दिया है। महाराज कुवर और उनके ननिहाल क राठौडो ने महाराज को नजरबन्द कर लिया है। सारी शक्ति महाराज कुवर न अपने हाथ म ले ली है। राठौडो न इस अप्रत्याशित ढग स अधिकार किया कि हाडे देखते रह !

'यह बहुत ही बुरा हुम्रा ?'

हाँ ठकुराणा हमारे जीवन म चार दिन चाँदनी म्राकर रह गयी। मारा भविष्य यह छाटा सा ठिकाणा है।'

ता क्या हुम्रा ? मैं म्रापकी प्रतिष्ठा तो बनाय रखूगी। छाटी णी नग भूखे की बेटी नही है। म्रापकी दया स मरे पीहर म सारे रे भडार भरे हुए हैं।"

म्रौर ठाकर की विलासिता बढ़ती गयी छोटी ठकुराणी ने धीरे-बडी ठकुराणी से ठाकुर का सम्बन्ध विच्छेद करा दिया। बडी णी म्रकेली रह गयी। उसका जीवन पहाड क चढाव जसा हा।

म्रौर एक दिन दोनो ठकुराणियो के बीच का तनाव लौहावरण बन।

बात कुछ नही थी।

शिवरात्री थी।

दोना की भगवान शिव की पूजा की बोलवा थी। पति के सग न करन की साध! बडी ठकुराणी न प्रभात सूय के उदय हाने क ही ठाकुर को कहलवा दिया था कि वे म्राज हमारे साथ शिव चलेंग। उनक साथ पूजन करने का उनका व्रत है।

थाडी देर बाद महाकुवर ने म्रपनी दासी के साथ कहला दिया कि र मा को म्रज करा द कि रथ' तयार होते ही व नीचे पधार। म्राज उनक साथ ही पूजा की 'बोलवा' है।

दुर्योग यह हुम्रा कि ठाकुर धम सकट का स्थिति म कोई कदम उठा सक। दाना ठकुराणियाँ तयार हो गयी। दानो ने भगवान के महापूजन की तयारिया कर ली। दोनो की दासिया निरतर र का बुलाने जा रही थी। ठाकुर क्या करें म्रौर क्या नही करें स्थिति म भूल रहे थे। म्रत्यन्त ही उद्विग्न थे। म्रपने विश्राम कक्ष हलकदमी कर रहे थे।

तभी बडी ठकुराणी ने कक्ष म प्रवेश किया। चनडी छाप ओढ़ना और छोट का घाघरा। नख से सिर तक गहना स लदी। आते ही वह किंचित रुष्ट होती हुई बोली 'यह क्या बात रही ठाकुर सा कि बार बार 'तडा' भजने के बाद भी आप महल स नही उतर। पूजा का समय बीता जा रहा है न ? चलिए जल्दी कीजिए।

वह अपनी बात खत्म कर ही न पायी थी कि महाकुवरि आ गयी। वह भी गहना से लदी हुई थी। उसके गहने ज्यादा कीमती और आकर्षक थे। बगडिया पर तो हीरे जडे थे। अंगूठियाँ भी हीरो की थीं जो अपनी चमक अलग से बता रही थी। नाक का काँटा भी हीरे का था।

उसने बडी ठकुराणी की उपस्थिति को नकारत हुए ठाकुर से कहा आपने भी हद कर दी ठाकुर सा मैं पूजा का थाल लिए हुए आपको अडीक रही हू और आप ।"

बीच म ही बडी ठकुराणी ने कहा ठाकुर सा मेर साथ चलेंगे। यह पूव निश्चय है।

मैंन भी इन्हे कहला दिया था।"

कब ?'

आपने कब कहा था ?'

सुबह सूरज उगन के पहले।'

महाकुवरि हसी और बोली, मैंने इन्हे कल रात हो कह दिया था। चूकि मैंने पहल कहा है, इसलिए ये मेर साथ ही चलेंगे।

इसका निणय मैं ठाकुर सा पर छाडती हू। ये असली खानदान और क्षत्री के बेटे हैं। इनकी नसा मे महान क्षत्रियो का रक्त दौड रहा है। य कभी भी झूठ नही बोलेंगे। ये जो कह देंग वह मुझे स्वीकार होगा।

महाकुवरि कुछ छिछली थी ही। झट स कह दिया कहिए ठाकुर सा पहल किसने कहा ?'

ठाकुर ने अपन कक्ष को एक बार दृष्टि मे भरा। भगवान श्री राम

के पवित्र चित्र के समक्ष उनकी दृष्टि ठहर गयी। क्षत्रिया का सत्य और धम उन्ह मर्यादा श्री पुरुषोत्तम की आकृति पर दपदपाता दाखी। रामायण की सत्याभिव्यक्ति उनके कण कुहरो में गूजन लगी। क्षत्रिय झूठ नही बोल सकता। ठाकुर ने निणय किया कि व भी झूठ नहा बोलेंगे। उन्होंने एक पल अपनी रानी बहुआ का दखा। फिर गवाक्ष की राह उगत तेजस्वी सूय को देखकर बाले छोटी ठकुराणी सा झूठ बोलती हैं। हम पहल बड़ी ठकुराणी सा न ही कहा था। पर हम ।'

उन्होने शीघ्रता से कहा जायग छोटी ठकुराणी सा के साथ ही। इसके लिए हम किसी स वचनावद्ध नही है। हमारा निजी निणय है।'

बडी ठकुराणी के हृदय पर आरा सा चल गया। वह तजी से ठाकुर की ओर बढी और तीव्र स्वर म बोली, 'क्यो ? ऐसा क्या ? क्या मेरा आप पर कोई हक नही ? मैं कोई पिछले दरवाज से नही आयी हू। फेरे खाकर इस घर म आयी हूँ। धम और अग्नि की साक्षी क सामने मैं आपकी बहू बनी हूँ। फिर आप मेर साथ क्या भेद भाव रखत हैं ? आपको मर साथ चलना ही पडगा।

ठाकुर बडी ठकुराणी की उत्तेजना स क्षण भर क लिए स्त ध रह। कुछ विचित्र सा अनुभव हुआ उन्ह !

'मैं यह अपमान नही सह सकूगी। सहन की एक सीमा हाती है। मुझे नही मालुम था कि जो म पल्ला पसार कर माँग रहा हूँ वह मर लिए शाप सिद्ध होगा। म सदा समझती थी कि जो इस घर म आयगी, वह मुझे बडी बहिन की इज्जत दगी पर नहीं नहीं यह सब नही होगा अब ? आपको मर साथ पूजा म चलना ही पड़गा।

महाकुवर अपलक दृष्टि स कवल ठाकुर को दख रहा था। बडा ठकुराणी जम हा चुप हुई वस हा वह बोला मैं और आपकी बडा बहिन की इज्जत छि कहा हमारा ठिकाणा ! और कहा आपका ? कहाँ राजा भोज और कहा गगू तली !

'छोटी ! बडी ठकुराणी न डपट कर कहा, आप अपनी जबान

सभाल कर बात करें। झकूडी पर ग्राम नही हान ? सब ग्राप जिम ढग स बात कर रही हैं उसस ।

'बडी ठकुराणी सा मैं ग्रापका फिर कहती हूँ कि ग्राप ग्रपनी हैसियत को पहिचानिए।

मैं ऐसी हैसियत पर थूकती हूँ जो मनुष्य को शिष्टता स बाहर कर दे। ग्राप हमार बीच म मत बोलिए।' वह ठाकुर सा की ग्रार उन्मुख होकर बोली ठाकुर सा ! ग्राप मर सग चलेंग।'

यदि इन्होंन हाँ भर ली तो मैं विष खा लूगा।

ठाकुर ने वडी ठकुराणी की ग्रार दख कर गदन भुका ली ग्रौर कहा हम ग्रापकी बात नही मान सक्त। हम ग्रधिक विवश न करें।

बडी ठकुराणी पत्थर की हा गयी।

महाकुवर के ग्रधरो पर दुष्टता भरी मुस्कान फल गयी। वह तन कर खडी हो गयी।

ग्रच्छा, ग्राज देख लिया क्षत्रिया के याय ग्रौर सत्य का पानी।' ग्रौर वह लौट गयी।

उसने पूजा का सारा सामान मन्दिर भिजवा दिया ग्रौर स्वय रूठी रानी की तरह कोप भवन जसे भीतरी कक्ष म सो गया।

नापहर !

ग्रशुमाली नील निरभ्र ग्राकाश म शन शन चल रह थे। गाव का वातावरण सुस्ता रहा था।

ठाकुर ने थाल ग्ररोग कर रसाई बनाने वाली प्रौढ दासी स पूछा बडी ठकुराणी ने थाल ग्ररोगा कि नही ?

नही ग्रन्नदाता ग्राज व रसाइ की ग्रार भी नही ग्रायी। उनकी डावडी बता रही थी कि उनकी तबीयत ठीक नही है। व खाना नही खायेंगी।

ठाकुर उनके रोष का कारण समझ गये। ठकुराणी ग्रपमान की ग्राग मे जल गयी होगी। जलना उचित भी है। एक स्त्री एक पुरुष

द्वारा चाहे जितना अपमान सह सकती है, पर दूसरी स्त्री की टेढी नजर भी नही सह सकती ।

व गभीर मुद्रा म बडी ठकुराणी के महल की ओर चल । सारा गलियार नीरवता स घिरा था । वहाँ का सन्नाटा उन्ह अधिक आश काओ स दबोच गया ।

महल क करीब पहुँचने-पहुँचते बडी ठकुराणी की दासी ने ठाकुर को देख लिया । उसने भाग कर बडी ठकुराणी को सूचना दी 'बाई सा बाई सा ! ठाकुर सा इधर पधार रहे हैं ।

दासी ठकुराणी के पीहर की थी, अत वह उसे बाई सा ही कहती थी ।

ठकुराणी निमिष भर म उठी । उठ कर वह पवन वेग सी महल के मुख्य दरवाजे की ओर आयी और दासी को गजते हुए कहा, डयोढी का दरवाजा बन्द कर दो ।

दासी पत्थर की मूर्ति सी खडी रही । उसका साहस नही हुआ कि ठाकुर क समक्ष वह डयोढी बन्द कर दे । उसे अचल खडी दख कर ठकुराणी न स्वय लपक कर दरवाजा बन्द कर लिया । ठाकुर स्थिर प्रश्न भरी दृष्टि से बन्द होत हुए किवाडो को देखत रहे । हालांकि कोई विशष घटना नही घटी थी फिर भी ठकुराणी हांफ सी रही थी । उसकी सांस तज गति से चल रही थी । सारा चहरा आवश से भाग गया था ।

ठाकुर न बडी शान्ति से पुकारा, 'बडी ठकुराणी सा दरवाजा खोलिए टाबर बुद्धि छोडिए मै आपसे कुछ बातें करना चाहता हूँ । ठकुराणी सा ठकुराणी सा !

ठकुराणी ने सुबक कर भीतर स कहा, मैं डयोढी नही खोलूगी । कदापि नही खोलूगी । मैं आपकी कौन होती हूँ ? क्या लगती हू ?

इसक बाद उसका स्वर क्रन्दन म खो गया ।

ठाकुर ने शान्त स्वर म कहा आप पहले किवाड खोलिए मैं आप

स कुछ बातें करना चाहता हू ।

किवाड़ा के अन्दर सिफ सुबकियाँ तर रही थी । लग रहा था—ठकुराणी का कलेजा फटा जा रहा है ।

ठाकुर न पुन कहा, आप एक बार किवाड़ खोलिए, पहल मरी बात सुनिए । मै आप स फिर कहता हूँ कि बात का बतगड मत बना इए । आप छोटी का स्वभाव जानती ही हैं । उस जसी आप न बनिए।''

'क्या न बनू ? क्या मैं आपकी बहू नहीं ? क्या म आपकी बहू नही ? क्या मैं आपक पीछे भाग कर आयी हू । जो हक घम न उस दिया है, वह मुझे भी दिया है । फिर यह भेदभाव क्या ? ठाकुर सा ! आप जानबूझ कर म याय करें और मैं सहूँ ऐसा मेरा भी रक्त नही है । मरी रगा म भी श्रेष्ठ खानदान का रक्त दौड रहा है । मैं अपमान नही सह सकती ।

पर ।

वह दृढता स बीच म बाली मरी ड्योढी नहीं खुलगी । आप उनके ही महल का दीया जलायें । मुझे क्षमा करें । और वह सुबक पडा ।

'ठकुराणी सा मैं आपस फिर कह रहा हूँ कि शाति और समझ दारी स कदम उठाइए वर्ना कभी कभी तिल का ताड हो जाता है ।

मैंन कह दिया न मैं यह सब सहन नही कर सकता । आप जाइए ।

ठाकुर लाटन लग । व कुछ ही कदम चल थ कि ठकुराणी न दर वाजा खाल दिया । ठाकुर की पुष्ट पीठ का वह दखती रही सुबकती रही ।

फिर उस ठकुराणी का हठ ऐसा बना कि उसन ठाकुर सा क लिए अपनी ड्योढी क दरवाज ही ब द कर दिय । एक माह दो माह और ठाकुर न अतिम बार ठकुराणी स विनती भरे स्वर म कहा 'अपना हठ छोड दीजिए ।

ठकुराणी ने ईर्ष्या मे जलते हुए कहा 'नही नही आप उसी के पास जाइए मुझे तग न कीजिए ।

आखिर ठाकुर को भी गुस्सा आ गया। गज कर व बाले 'मैं आपको अतिम बार कह रहा हू कि अपनी डचाढी खोल दीजिए हठ मत कीजिए वर्ना इमका परिणाम बहुत बुरा होगा ।

बडी ठकराणी न कोई जवाब नहीं दिया । वह मुबक पडी ।

ठाकुर न चुनौती भर स्वर म कहा, अब हम भी इघर नही आयेंगे । इघर अपना पाव भी नहा रखेंगे । पडी रहिय और सडिये । जिसके भाग्य म मुख नही लिखा होता है, वे मुख नही भाग सकते ।

ठाकुर चल आय । फिर नही गये । जीवन सामान्य ढग म गुजरता गया । पूरे तीन वष बाद जब ठाकुर का साप न काटा तब ठकुराणी उनके सामन आयी । उनकी सहत क बार म पूछा । ठाकुर न व्यथा भरी दृष्टि से देखा । इसके बाद उन दानो का सम्बन्ध अनात्मीय अजनबी सा हो गया । नितात औपचारिकता भरा । यदा कदा ठाकुर बडी ठकुराणी का कुशल क्षेम पूछ लत थ ता कभी कभार ठकुराणी उनका हालचाल जान लेती थी । इसके उपरात भा दोना ठकुराणियो का वमनस्य कम नहीं हुआ । उनक बीच का विद्वेष और घृणा बराबर बनी रही । बडी ठकुराणी प्राय कहा करती थी कि म ता बजर थी पर छाटी न कौन सा आन ही गोद भर ली । कम का लिखा नही टल सकता । इस तरह की अनक बातें ।

महाकुवर क पिताश्री का देहात होन क बाद उघर स आन वाली आर्थिक सहायता भी बन्द हो गइ । ठाकुर का ठिकाणा इतना कम आय वाला था कि धीर धीर उनकी स्थिति बहुत ही खाखली हो गयी । नय राजा पुरान महाराज कुवर न उन्ह कभी रियासत म भी नही आने दिया । निरन्तर खच न ठाकुर का ताड सा दिया । उन्ह लगा कि उनकी नीवें भी कमजोर हो रही हैं ।

और आज ठाकुर कमाने के लिए परदेश जाने को तयार हो गये।
अपना यहाँ सब कुछ छोडछाड कर।

नियति के खेल भी निराले होते हैं।

□□□

सुबह सुबह कोहरा चारों ओर फैल गया था। कोहरे में चमकते हुए तारे ऐसे लग रहे थे कि किसी ने हलके रंग की चूनडी बिछा दी हो।

सियाले के बढते बढते अकाल का और विकराल रूप होने वाला था। जानवर और बूढे लोग अकड अकड कर मर जायेंगे इसकी आशका गहरी होती जायेगी।

ठाकुर तडके सवेरे ही उठ गये थे और उन्होंने घनसुख को बुला कर कहा तुम हमारे खास मित्र राठौड मेहरसिंह जी के पास जाओ और उन्हें हमारी यह चिट्ठी देना और उसका उत्तर हाथो हाथ ले आना।'

जो हुक्म अन्नदाता। कह कर घनसुख ने पूछा यदि राठौड सरदार उत्तर हाथों हाथ न दें तो ?

अवश्य देंगे। तुम हवा की तरह उनके ठिकाणे पहुँचो।

मैं यह गया और वह आया। कहकर घनसुख ने अपनी साडणी को तयार किया।

सुरगन में एक पहाडी घाटी पुरगढ को जाती थी यह रास्ता जरा भयानक और ऊबड खाबड था। घाटी बरसात के दिनों में नदी सी बन जाती थी जिससे सारी घाटी में काफी रेत जमा हो गयी थी। पर ऊँट और साडणी के लिए रेत जरा भी बाधक नहीं बनती।

घनसुख ने अपनी बन्दूक सभाली। वह सूरज निकलने के पहले

पहल रवाना हो गया।

यह रास्ता विकट था और इसमे जगली जानवरो का भी थोडा सा भय था।

ग्राम रास्ता सुरगढ और पुरगढ़ का माता जी के मन्दिर के पास मिलता था। मदिर क उत्तर पश्चिमी और उत्तर पूव के छोरा पर लगे हुए चिमटे क आकार के दो कच्चे रास्ते जाते थे। एक सुरगढ को और दूसरा पुरगढ को।

पुरगढ के ठाकुर मेहरसिंह और सुरगढ़ के के ठाकुर बलिसिंह दोनो बचपन क दास्त थे। दोनों सच्चे और वीर थ। एक ही गुरू के यहाँ शस्त्र विद्या सीखी थी। वर्षों स दोस्ती निभती आयी थी। दोनों आन शान वाल राजपूत थ। रेकार की गाल लगती थी दोनो को। कोई उन्ह 'तू' कह द, इतन म तू कहने वाल की गदन धड से अलग कर दें। साथ साथ सुख भोग और साथ साथ दुख भोगे। कई लडाइयों म साथ-साथ तलवारें उठायी और विजय पायी।

सुरगढ की भाँति पुरगढ म भी अकाल पडा हुआ था। सिफ १६ कोस का ही फासला था। पुरगढ की आर्थिक स्थिति सुरगढ से भी कमजोर थी। पुरगढ क ठाकुर न धर्मानुसार या स्वभाववश एक ही विवाह किया था। उनकी ठकुराणी का नाम सूरजकुवर था। वह भी आन की धनी और दयालु स्वभाव की थी। धम युद्ध धमनीति और धम आचरण म उसका बहुत बडा विश्वास था।

अकाल के कारण सूरजकुवर की मन स्थिति अत्यन्त अस्थिर और पीडित थी। वह बार-बार अपने पति से आग्रह कर रही थी कि आप राजाजी की मामूली सी नौकरी छोड कर कही परदेश जाइए, पर ठाकुर महरसिंह जाने का नाम नही ले रहे थे। यदि ठकुराणी सूरज ज्यादा कहा सुना करती तो ठाकुर किंचित विहस करके कहत, 'आप ठीक फरमाती हैं ठकुराणी सा किन्तु जो मनुष्य आधी को छोड कर पूरी को लने दौडता है वह न आधी पाता है और न पूरी। फिर सतोषी ही

सदा सुखी रहता है।

लेकिन दुर्भिक्ष के दिनों ने ठाकुर महल को भी घेर लिया। वे उदास और व्यथित रहने लगे। कभी-कभी वे दुर्भिक्ष की भयंकरता देख कर विक्षुब्ध भी हो जाते थे। ठकुराणी सूरज कँवर जनाना महल के ऊपर से खड़ी हुई दूर दूर तक मसानी वातावरण को देखती रहती थी। सूखा सूखा और नंगे खेत! भयंकर तड़पता गाँव! एक असह्य स्थिति!

कुछ किसान और गाँव वाले एक दिन ठकुराणी सूरज कँवर के पास आये थे। राजा और प्रजा में बाप-बेटे का सम्बन्ध होता है। राजा की रानी सबकी माँ होती है। ठकुराणी सूरज इसी बात का स्मरण करके ममता से भर आयी और उसने अपने भंडार से जितना कुछ दे सकती थी दे दिया। फिर उसने अपनी थोड़ी सी प्रजा को कहा—अकाल को देखते हुए हम आपकी रक्षा नहीं कर सकते। सुना है महाराज ने एक नहर खुदवाने का निश्चय किया है। आप सभी लोग उधर चले जायें, मजूरी मिल जायगी।

लोगों की आँखें भर आयीं। चाहे ठिकाणा सभी दृष्टियों से छोटा हो, पर ठकुराणी का ममता भरा व्यवहार उन्हें स्नेह के धागों में बाँधे हुए था।

ठकुराणी की बात प्रजा की समझ में आयी। लोग अपने पशुओं को लेकर चल पड़े। जिनके पास अधिक पशु थे वे ऐसे इलाकों में चले गये थे जहाँ अच्छी वर्षा हुई थी।

आज ठकुराणी जरा जल्दी उठ गयी थी। वह स्नानादि से निवृत्त होकर सबसे पहले पूजा घर में जाती थी। काफी देर तक वह पूजा करती थी।

ठाकुर को भी जल्दी उठने की आदत थी। वह उठ कर सबसे पहले अपने डेरे के सभी पशु धन को देखते थे। अपने हाथों से अपनी गायों की सार सम्भाल लेते थे। सबके चारे पानी का प्रबन्ध करते थे। फिर अपने खेतों की ओर चल जाते थे। कभी कभी ठाकुर स्वयं खेतों

म हल चलाते थे । उनके दास और दासिया अन्य जमीदार, जागीरदार ठिकाणेदारा से अधिक मुक्त और सुखी थे ।

ठकुराणी सूरज अब मन्दिर म थी और ठाकुर मुह म नीम की दातुन दबाय बाड़े' म आ गए थे जहा गायें बल बधे हुए थ ।

तभी उनके दास न आकर कहा अन्नदाता, सुरगढ स एक आदमी भाटी सरदार की चिट्ठी लकर आया है । वह कह रहा है कि कोई विशेष समाचार है ।

राठौर सरदार उसी समय बठक की ओर आय । धनसुख उन्हें देख कर खड़ा हो हुआ । हाथ जोड़ कर बोला ज माता जी की ठाकुर सा ।'

'ज माता जी का । कहिए क्या समाचार लाय है ?'

धनसुख ने वह पत्र ठाकुर के हाथा म सौंप दिया । ठाकुर न पत्र खोल कर पढा । औपचारिक लखन क अतिरिक्त विशेष समाचार ये थे—अकाल क कारण हमन सोचा कि कही परदश जाकर चाकरी की जाय । आपकी क्या राय है हमारा विचार है कि आप भी चलें । हमन सदा साथ साथ न्दर काय है । हमारा कल सुबह प्रस्थान करन का विचार है । आपका निणय आने पर हम आपकी मन्दिर क पास प्रतीक्षा करेंग ।

चिट्ठी पढकर ठाकुर थोडी दर मौन रहे । गभारता उनक चेहरे पर छायी रही । फिर बोल 'आप भाटी सरदार स कहिएगा कि हम आज साझ तक अपना निणय आपको पहुँचा देंग । सभावना चलने की ही अधिक है ।

दोपहर !

कुनमुना धप म ठाकुर बारादरी म बठ थे । ठकुराणी सूरज बठी बैठी सरोते से सुपारी काट रही थी । समीर का कोई कोई ठडा झोंका उन दोना को छू जाता था ।

ठाकुर महरसिंह को एक बेटी थी जिसका विवाह हो चुक

और बाद म देहान्त भी । उसके बाद अठारह साल तक उन्हें कोई भी सन्तान नहीं हुई । अब ठकुराणी सूरज भी गर्भवती थी । गर्भवती होने के रहस्य को पुरी तरह छिपाया जा रहा था । अभी दूसरा ही महीना था । ठकुराणी को किसी न वहम करा दिया था कि कोई छाया आपके कुटुम्ब के पीछे लगी हुई है जिसस आप क कुटुम्ब की बढ़ोतरी रुक गयी है ।

ठाकुर ने ठकुराणी के केसरिया रग पर ओढ़ी लाल चादनी को देख कर कहा 'ठकुराणी सा हम परदेश कमाने क लिए जाना चाहते हैं । अकाल के कारण इस बार हमें अधिक संघर्ष करना पड़ेगा । भाटी सरदार भी जा रहे हैं ।

जरूर जाइए पर वापस सोवने थाल बजने तक आजाइएगा । परदेश म जाकर लोग अक्सर घर वालो को भूल जाते हैं । फिर नये राजाजी आप दोनो सरदारो पर कोई विशेष ध्यान नहीं देते ।

इसी बात का दुःख है । जिनके पूर्वजो के लिए हमारे पुरखो ने अपनी गर्दने कटवायी उन्हीं लोगो की सन्तानो के साथ पराये सा वर्ताव हो रहा है । तो फिर आपकी राय हो तो मैं भाटी सरदार को अपनी स्वीकृति भेज दूँ । कल सुबह जाने का मुहूर्त है ।

'भेज दीजिए । गुजरात की ओर आप दोनो वीर सरदारो को मान सम्मान और धन तीनो मिलेगा । समय का सबको लाभ उठाना चाहिए । फिर अकाल के कारण इस बार हम अर्थ सकट भी रहेगा ।

यही सोच कर भाटी सरदार की बात तुरन्त हमारे मन म बैठ गयी । अभी तो इन बाहुओ मे इतनी शक्ति है कि एक झटके म सवार और घोड़े दानो के दो टुकड़ कर सकती हैं । फिर आपके वर्षों के बाद पाव भारी हुए हैं । ऐसी स्थिति म कुछ समृद्धि भी होनी आवश्यक है

मुझे कोई एतराज नहीं । आप राजी राजी जाइए । मैं तो आपको ऐसा कहती भी थी । भगवान सब मंगल ही करेगा । "

'फिर भाटी सरदार को चलने की स्वीकृति भिजवा दू ?' दुबारा गहरी आत्मीयता से पूछा राठोड सरदार ने ।

हाँ हाँ ।" ठकुराणी ने कहा ।

ठाकुर उसी समय बैठक म आये और अपने एक चाकर को चिट्ठी लिख कर दी कि वह सुरगढ चला जाय और भाटी सरदार को कह दे कि कल भोर होते ही मन्दिर के पास मिलेंगे । आपका साथ छोडना हम अच्छा नही लगता । पता नही परदेश म कोई बढिया चक्र चल जाय । जीवन का उल्लासमय और समृद्ध बनाने का अवसर मिल जाय । मैं निश्चिन्त रूप से आऊगा । चलेंगे बलगाडियो म ही ।

दास सुरगढ की ओर चला ।

□ □ □

उस रात दानो वीर और अपनी अपनी आन क धनी ठाकुरो के महलो मे इत्र के दीये जले । भाटी सरदार और महाकुवर नय बच्चे के आगमन के उन्माद म मस्त रहे और राठोड सरदार व ठकुराणी सूरजकुवर चौपड ही खेलत रहे । न जान कितनी बाजिया खेली । कभी ठाकुर हार और कभी ठकुराणी । दोनो चौपड के मजे हुए खिलाडी । पासा फेंकन म माहिर । रात एसे बीती जसे किसी फल की पखुरिया बन्द हुई और खुली ।

भोर का तारा उगा । पूव आदेशानुसार चाकरो ने बलगाडियो म सारा सामान भर दिया था ।

दानो ठाकुरो न अपने अपन स्वजनों से [illegible] ली और इष्टदेवा को स्मरण कर समृद्धि की यात्रा को चल पडे ।

बलो के गले की घटियाँ कोहरे म एक मधुर सगीत उत्पन्न कर

साथ कर दीजिए। मैं वापस चला जाऊँगा। ग्राप अवश्य हा गुजरात की ग्रार जाइए। भगवान ने चाहा तो लाभ ही होगा शुभ ही होगा।'

नही-नही। मैं ऐसा नही कर सकता। हम ानो मित्र सुख दुख म सदा ही साथ रहे। फिर भला मैं ग्रापको दुख म अकेला कसे छोड दू? राठौड सरदार के स्वर म पश्चाताप था। ग्राँखो म वदना उभर ग्रायी थी।

'ग्रापका कहना बिलकुल ठीक है पर मरी स्थिति इतनी बुरी नही है कि ग्रापका यह कष्ट दू। मैं ग्रापस प्रार्थना करूगा कि ग्राप अपना निश्चय मत बदलिए। ग्राप जाइय। लम्बी यात्रा है। मैं ग्राज मझा तक वापस ग्रपन ठिकाण पहुँच जाऊगा। ग्राप यहाँ स थाल ग्ररोग कर जाइए। मुझे विश्वास है कि ग्रापको बडी सफलता मिलेगी। ग्रापकी श्रा वद्धि होगी। समृद्धि हागी। उसस सुख सतोष ग्रायगा। जीवन ग्रच्छी तरह कटगा। ग्राप जाइए मरे कारण ग्राप ग्रपनी यात्रा स्थगित न कीजिए। भाटी सरदार का स्वर विगलित हो गया।

मन नही करता। उन्होन भाटी सरदार का हाथ पकड लिया।

मन तो मरा भी ग्राप स ग्रलग होन को नही करता, पर ईश्वर का जा स्वीकार होता है वही होगा। मनुष्य क्या कर सकता है। राठौड जा हम सब उस नियति के हाथ के खिलौने है वह जसी चाहे हमस नाडा कर सकती है।

ठकुराणी मूरज न भाजन का काफी सामग्री बाँध दी था। ठाकुर न खाना खाया। खाना खाकर दाना ठाकुर परस्पर गल मिल ग्रौर ग्रलग हा गय।

एक ग्रार राठौड सरदार ग्रपनी गाडा की ग्रार बढ ग्रौर दूसरी ग्रार भाटा सरदार। प्रत्यागित राठौड सरदार पुन भाटी सरदार क पास ग्राय ग्रौर बाल फिर भी ग्रापका एक वचन द रहा हूँ जा कुछ इस यात्रा म प्राप्त हागा उसका ग्राधा हिस्सा ग्रापका हागा।"

मित्रता के नाते ! जिस मित्र की प्रेरणा से आज मैं जा रहा हूँ, असली हकदार तो वही है।

लेकिन ।'

यह मेरा अपना विचार है।

'अच्छा ! जै माता जी की।'

जै माता जी की।' दोनों सरदार उदास हो गये।

फिर दोनों गाडियाँ दो विपरीत दिशाओं की ओर चल पड़ी। बैलों की घंटियाँ टन टन टन बज रही थी।

□ □ □

गुजरात का बादशाह !

उसकी चाकरी में रहते हुए राठौड़ सरदार को दो महीने हो गये थे। दरबार में उनका कोई विशेष महत्त्व नहीं था। एक साधारण दरबारी की हैसियत से वे दरबार में बैठते थे। उनको किसी तरह की कोई मनसब नहीं दी गयी। उन्हें दरबार में केवल इसी आधार पर मान प्राप्त हुआ कि वे राठौड़ सरदार हैं।

उन्हीं दिनों गुजरात के बादशाह के अन्तर्गत एक रियासत थी उसका मालिक था अफजाली पठान। प्रारंभिक दिनों में वह बादशाह सलामत का दाया हाथ बना हुआ था। बाद में वह धीरे धीरे बादशाह के विलासी स्वभाव का अनुचित लाभ उठाने लगा। अपनी रियासत में वह एक ऐसे षडयन्त्र को पनपा रहा था जिसके द्वारा वह बादशाह के सिंहासन को हथियाना चाहता था और स्वयं बादशाह बनना चाहता था।

बादशाह अत्यन्त ही विलासी था। उसके हरम में अनेक दासियाँ

थी। पुरापान कभी कभी रात दिन चलता था। कभी कभी दो दो तीन तीन दिन तक उत्सव आयोजन होते रहते थे।

बादशाह को हाथियो की लडाई कराने का बडा शौक था। उसने अपने महल के पीछे एक मैदान बनवा रखा था। उस मैदान मे हाथियो की लडाई होती थी। अलग अलग रियासतो के हाथियो की लडाइ। जिसमे कई मोहरों का पुरस्कार रखा जाता था।

यह उत्सव निरन्तर चलता था। कई जोडियाँ इसमे सम्मिलित होती थी।

अब्दाली को अपने हाथी पर गर्व था। उसका हाथी 'बेमिसाल' हर वर्ष पुरस्कार प्राप्त करता था।

इस बार भी वह आया।

सारा जन समूह प्रेक्षागृह मे बैठता था। स्त्रियाँ महल के जाली दार झरोखो व बरामदो मे बैठती थी। प्रेक्षागृह के दर्शकों के बचाव के लिए चारो ओर ऊची प्राचीर थी जिसे हाथी फाद नही सकते थे। प्रेक्षागृह के पश्चिम हिस्से के बीचोबीच दो स्तभो के मध्य बादशाह के बैठने का स्थान बना हुआ था। यह स्थान सभी स्थानो से अधिक सुरक्षित था।

स्तभो के बीचोबीच एक सगमरमर की चौकी बनी हुई थी। उस चौकी पर बादशाह का सिंहासन रखा जाता था जो सोने का बना हुआ था और बादशाह की गर्दन के पीछे वाले हिस्से मे कई रत्न जड़े हुए थे जो तारो की भाँति झलमलाते रहते थे। बादशाह के चारो ओर उनके पर्याप्त शूरवीर सिपाही और चार अंगरक्षक खड़े रहते थे। बादशाह का गुप्तचर विभाग भी प्रेक्षागृह मे यत्र-तत्र फैला हुआ रहता था, ताकि कोई भी बादशाह के प्राणो पर घातक आक्रमण न कर सके।

अब्दाली का हाथी जैसे ही बादशाह के मैदान मे उतरा वैसे ही लोगो ने हर्ष ध्वनि की। तालियाँ बजायी।

राठौर सरदार भी सम्मानार्थ दरबार मे बैठे थे। उनके पास कोई

"ास्त्र नही था। श्रष्ठ दगक के रूप मे उनका पदापण हुआ था। तजस्वी मुख। नेत्रा म दीप्ति सी। कानो को स्पश करन वाला बाक डली मूछे। कानों म झलती हुई स्वण मुरकिया सफद चन्नीदार पाजामा श्रौर उस पर जरी की गयी नक्काशी वाली श्रचकन। सिर पर राज स्थानी पगडी जिसका रग गहरा लाल था।

अ ग्दाली क हाथी का सामना राजा कल्हा के हाथी स था। कल्हा के हाथी का नाम विजय था। वह भी प्राचीर स घिर मैदान म उतरा। लोगा ने एक बार हप ध्वनि के साथ तालिया बजायी।

दाना हाथी कुछ दर तक एक दूसर का इस तरह देखते रहे मानो दाना एक दूसर की स्थिति और प्रथम आक्रमण को पहचान रह हो। फिर दोना हाथी चिंघाडत हुए बढे। दशक एक बार नितान्त मौन रहे। हाथी श्रापस मे भिडे। उनकी सूडें श्रापस म उलझी। बडी देर तक हाथियो की लडाई चलती रही, श्रन्त म श्र दाली का हाथी परास्त हो गया।

राव कल्हा ने मुट्ठी बाघ कर जयघोप किया। श्रब्दाली श्रपमान की श्राग म जल गया। कल्हा जिस तरह विजयो मादित सा नाच रहा था श्रौर मूछा पर ताव द रहा था। उससे श्रब्दाली के श्रन्तस की श्राग श्रौर भडक उठी। वह खूखार श्रब्दाली बार बार श्रपनी तलवार की श्रार दख रहा था। कल्हा को पुरस्कार मिला।

राव कल्हा ने इस विजयोल्लास म एक भाज का आयोजन किया। उसम बादशाह श्रौर श्रब्दाली को भा श्रामन्त्रित किया गया। राठौड सरदार भी श्राय। उन्होन श्रपनी जाति क गौरव क श्रनुरूल उस भोज म प्रतिष्ठा पायी यानि राव कल्हा क पास स्थान प्राप्त किया।

सुरापान श्रारम्भ हुश्रा।

एक जाजम पर रक्खी हीरक चौकी पर बादशाह सलामत विराज। उनक पास श्रब्दाली राव कल्हा राठौड सरदार श्रौर श्रन्य विशिष्ट वीर।

पता नहा परवरदिगार, इस छोटी सी घाटो म स घाडा की हिन हिनाहट और भागन की आवाज आ रहा है।'

बादशाह कुछ और कहना चाहत थ पर व नशे क आधिक्य क कारण कुछ कह नहा पाय और पालकी म पुन लुढ़क गय।

इसा बीच घाटी म स कई घुड़सवार निकल और उ होने बादशाह व साथियों पर आक्रमण बाल दिया। मसाल क उजाल म सनिकों न दखा कि आक्रमणकारियों की आकृतियाँ कपडा स ढकी हुई हैं। व किसक सनिक है यह पहचानना अत्यन्त ही दूभर था।

दूसरी ओर का तलवार भी निकल गयी।

तलवारो की खनखनाहट न बादशाह क नशे को उडा दिया। उन्होंने भी अपनी तलवार सभाल ली।

इस छोटी सी लडाई म पहली बार राठौड सरदार को अपनी तल वार क जौहर दिखान क अवसर मिला। उन्होंन तलवार स आक्रमण कारियों को इस तरह काटना शुरू किया जसे गाजर मूली। दखते दखत आक्रमणकारी भाग खड़ हुए। भागत हुए आक्रमणकारी क नता को राठौड सरदार न पहचान लिया।

मशाल क प्रकाश म अब्दाली की जूतियाँ पहचान ली गयी। राठौड़ सरदार न शर की भाँति गज कर कहा 'यह अ दाली पठान का घातक आक्रमण है। इसका पीछा करो।

पर भागन वाल अँधेरे म भरी घाटियों म लुप्त हो गए। बादशाह क कई सनिक घायल और आहत हुए। कई पर घाव पड थ और कहीं दर दरार। एक वीभत्स दृश्य! रक्तरंजित पृथ्वी पर मनुष्य का सभ्यता क विकास पर व्यग कर रहा था!

अपन मत्रणाकक्ष म वचन बादशाह चहलकदमी कर रह थ। सारे हिंदू व मुसलमान अधिकारी खड़ थ। अभा विशष रूप म राठौड़ सर दार को आमंत्रित किया गया था। बादशाह को विश्वास नहीं हो रहा था कि रात्रि क तिमिर म मौन घाटियों म स उनका स्वामीभक्त

अब्दाली पठान इतना घातक आक्रमण कर सकता है। बादशाह पर प्राणघातक आक्रमण ! नहीं-नहीं ऐसा नहीं हो सकता। यह संभव नहीं ! कतई संभव नहीं। बादशाह अत्यंत ही पीड़ा से आन्तरिक रूप से तिलमिला रहे थे।

उन्होंने पुनः अपने शब्दों पर जोर देकर पूछा 'क्या आप यकीन के साथ कह सकते हैं कि वह हमला अब्दाली ने ही किया था ?"

जी अन्नदाता, मैं उसकी रग रग पहचानता हूं और उसकी जूतियाँ सबसे अलग ढंग की बनती है। फिर उसकी क्रूरता ?

हम उसे नस्तनाबूत कर देंगे।

राठौड़ सरदार ने किंचित मुस्करा कर कहा आप ठीक फरमा रहे हैं अन्नदाता ! पर यह तभी संभव होगा जब आप इसी समय अब्दाली को अपनी सेनाओं से घेर लें। यह नीति की बात है कि दुश्मन को जरा भी संभलने का मौका न दें। जितना समय उसे संभलने के लिए दिया जायेगा, उतना ही वह अपनी शक्ति को संगठित करेगा।'

बादशाह विचार में खो गये। चिंता की बनती मिटती रेखाएं उनके चेहरे के रंग को बार बार बदलने लगी। वे अपने आपको अन्तर्द्वन्द से मुक्त नहीं कर पा रहे थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि अभी वे किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पा रहे हैं।

राठौड़ सरदार ने पुनः नतमस्तक होकर कहा 'अन्नदाता मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि अब्दाली की नियत जरा भी ठीक नहीं है। वह सच्चाई और धर्म से हट रहा है। मैं आपसे अर्ज करूँगा कि आप उसे तुरन्त घेर दबावें वर्ना कुछ न कुछ बुरा हो जायगा।

वह एक खूंखार इंसान है। बादशाह बोले 'उसे शिकस्त देना आसान नहीं। उसकी बहादुरी हम कई जगों में देख चुके हैं। वह भी पहाड़ को हिलाने वाला आदमी है। ऐसे इंसान को शिकस्त कैसे दी जा सकती है। चिंता गहरी होकर बादशाह की आकृति को ढक गयी।

'इसका बीड़ा मैं उठाता हूँ। राठौड़ सरदार ने साहसपूर्वक कहा

'यदि अन्दाली जस नमकहराम की गदन आपके चरणो म न लाकर रख दू तो मुझे आप असली राजपूत की सतान न कहना । मैं भी एक बार स दो टुकड करने की ताकत रखता हूँ । अपने स्वामी क लिए सब कुछ बलिदान करने की क्षमता रखता हूँ । मैं आप स फिर प्राथना करूगा कि आप अन्दाली पर जरा भी दया न करें । किसी बात की चिंता न करें म माँ भवानी की सौग ध खाकर कहता हू कि या तो मैं उसकी गदन लेकर आऊगा या अपनी उस द आऊगा ।

ओजस्वी सवाद स बादशाह का खडित होता हुआ विश्वास पुन जागा । उन्होंने एक पल के लिए अपने सारे सरदारो की ओर सप्रसन्न देखा ।

राव कल्हा न दृढ़ता स कहा, राठोड जी ठीक फरमा रहे हैं । शत्रु को एक भी साँस नही लेने देना चाहिए । वह अपने हाथ पाँव सभाले इसके पहले ही उसका तहस नहस कर देना चाहिए । राव कल्हा एक क्षण रुक फिर बोले राठोड जी ! यह बीड़ा उठा रहे हैं इसलिए उन्हें सेना के साथ कूच करने का हुक्म द देना चाहिए । यह आपके सिवाय सभी सरदार जानते हैं कि अन्दाली पठान पठानो की ईमानदारी को छोड कर विद्रोह की चिनगारियाँ फला रहा है । ऐसे समय बादशाह सलामत को उसका सिर जितना जल्दी हो सके कुचल देना चाहिए ।"

फिर भी बादशाह अपने आतरिक सघष म त मय रहे । कोई भी निणय नहीं ले रहे थ । और बार बार उन्हें आश्चय हो रहा था कि अन्दाली पठान ने यह हिम्मत कैसे की ।

मत्रणा कक्ष म गहरा मौन बठा था । जालीदार गवाक्ष म से धूप के अनेक टुकड कक्ष म घुस आये थे ।

अत म बादशाह ने अपना निणय सुनाया अन्दाली पठान का सिर कुचल दिया जाय । ऐसे गद्दार को मन्दा भी हमारी कमजोरी कहलाएगी । जाइए राठोड जी आप इस काम को अजाम दीजिए ।

जो हुक्म अन्नदाता।'

'आपको व सभी हक दिये जा रहे हैं जो एक सेनापति को दिये जाते हैं। आप हमारी ताकत का पूरी तरह इस्तेमाल कर सकते हैं।' बादशाह के स्वर में कंपन था जैसे उन्हें अब भी विश्वास नहीं हो रहा था कि राठौड़ सरदार इस युद्ध में सफल हो जाएंगे।

दूसरे दिन प्रभात के होने से थोड़ी देर पूर्व राठौड़ सरदार ने अपनी सेना को तैयार किया। घुड़सवार, पैदल और दो हाथी। छोटा सा तोपखाना।

स्वयं राठौड़ सरदार अश्वारूढ़ हुए।

सेनाओं ने कूच किया। अब्दाली पठान को मानो इसका पक्का अंदेशा था कि बादशाह की सेनाएं उस पर आक्रमण करेंगी इसलिए वह भी सामना करने को तैयार हो गया।

अब्दाली पठान की राजधानी चहारदीवारी से घिरी हुई थी। चहारदीवारी के चारों बुर्ज के भीतर अपने सैनिकों को तैनात कर दिया था।

राठौड़ सरदार ने दोपहर होते होते अब्दाली के गाँवों को रौंद कर उसकी राजधानी की सीमा को स्पर्श कर लिया।

धूल के बादल गगन में घने रूप से छाये हुए थे। घोड़ों की हिन-हिनाहटें कभी कभी धूल के बादलों को चीर कर गगनमण्डल को गुंजा देती थीं।

एक भयप्रद व आतंकपूर्ण वातावरण था।

राठौड़ सरदार ने अपनी नंगी तलवार को हवा में चलाते हुए कहा 'हम सारी चाहरदीवारी को नहीं घेरना है। हम सिर्फ एक ओर से आक्रमण करेंगे।' तोपखाने के अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा 'गोले तेजी से छोड़े जायें।'

युद्ध आरंभ। तोपें गोले बरसाने लगीं।

एक तोपची को राठौड़ सरदार ने अपने पास बुलाया और उसे

आज्ञा दो, रहमान !

जी हुजूर।'

'अपनी तोप की आवाज के निशाने पर लगादो। तोपों से दर-
वाजा तोड़ दो।

जी हुजूर।

राठौड़ सरदार ने राव बख्श को अपने समीप बुलाया। तोपों की गगनभेदी गर्जना से कानों के पर्दे हिल रहे थे। बादशाही के पास अधिक मजबूत तोपखाना नहीं था अत बादशाह के तोपखाने के गोलों की मार के समक्ष वह बहुत ही दुबल पड़ गया था। फिर अप्रत्याशित आक्रमण के कारण उसके षडयन्त्र में सम्मिलित थे वे सरदार भी टूट गए थे।

बादशाह को समाप्त करने का षडयन्त्र जैसे ही असफल हुआ वैसे ही अन्य सरदार भयभीत हो गये थे और उनके मन में भय बैठ गया था कि अब बादशाह सलामत एक एक को खबर लेंगे। अत अब वे इतने वफादार बनने की चेष्टा में थे मानो बादशाही पठान ही एकमात्र अपराधी है।

एक सरदार अहमद खाँ तो पठानों के विरुद्ध अपनी सेना लेकर राठौड़ सरदार से आ मिला। राव बख्श की हवेली से जो गोले बाद-शाह पर जो अप्रत्याशित आक्रमण हुआ था उसमें अहमद खाँ भी सम्मिलित था पर अब पासा पलटा हुआ देख कर वह राठौड़ सरदार से आ मिला।

राठौड़ सरदार से हाथ मिला कर उसने कहा आप इस लड़ाई की सेना के सबसे बड़े हुक्मरान हैं मुझे हुक्म दीजिए।"

ऐसा नहीं हो सकता।

क्यों ?

क्योंकि आप बादशाह हुजूर से हुक्म लेकर नहीं आये हैं। मैं उनके परवाने के बिना किसी भी सेना की टुकड़ी को अपनी सेना में शामिल नहीं कर सकता।

मुझे नाउम्मीद मत कीजिए राठौड सरदार !" अहमद खाँ ने विनीत स्वर म कहा मैं कुरान की कसम खाकर कहता हूँ कि म आपके हुक्म की तामील करूँगा।

राठौड सरदार की बडी बडी तेज आँखो न कुछ क्षण अहमद खा को देखा और फिर व सोचने लगे। व अत्यन्त ही गभीर हो गय थ। उनकी दृष्टि स्थिर थी। अहमद खा भी अचल खडा था।

युद्ध म तोपें विनाशकारी गोले बरसा रही थी। कुछ सनिक भी चहारदीवारी को पार बढ गय थ। रहमान के गोले दरवाजे पर पडने लग थे। एक दरवाजा खडित हो गया था।

"राठोड जी, एक दरवाजा टूटने लगा है।"

"सच! और सहसा राठौड सरदार न अहमद खा को आज्ञा दी, "खा साहब! आप अपने सिपाहियों को लेकर नगर म घुस जाइए।"

अहमद खाँ न तलवार खीची और अपन साथियो को बढने के लिए आह्वान किया।

रहमान क दूसरे गोल न एक दरवाजे को बिलकुल तोड दिया। अब्दाली की सना किल क बाहर निकल पडी। वह नही चाहता था कि शत्रु की सेना उसक नगर म प्रवेश करके मवनाश का ताण्डव करें।

बाँध टूटने पर नदी का पानी जिस तरह बहता है उस तरह अब्दाली की सना किल क बाहर निकलने लगी। अहमद की सना उसस भिड गई।

राठौड सरदार न अपन सवारो को हुक्म दिया कि वे आगे बढें। जरा भी न घबरायें।

भयानक युद्ध आरभ हो गया।

सवार सना दरवाजा पूरी तरह खोलने म सफल हो गयी। थोडी देर म राठौड सरदार क सेनापतित्व म बादशाह की सना नगर म प्रवेश कर गयी और अब्दाली की सना और उसक समस्त मोर्चों को तोडने लगी।

सरदार राठौड़ ने ऊँचे स्वर में अपने सैनिकों को आज्ञा दी "वीरो! युद्ध धर्मयुद्ध होना चाहिए। कोई भी सैनिक न किसी स्त्री को हाथ लगाए, न बालक को और न बूढ़ों को। हमें सिर्फ सेना के ठिकानों को ध्वस्त करना है। नागरिकों को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुँचाना है।"

साँझ तक राठौड़ सरदार के नेतृत्व में बादशाह की सेना ने अ-ली के निजी प्रासाद को घेर लिया।

नियमानुसार रात को युद्ध बन्द हो गया।

राठौड़ सरदार के तम्बू में मसाल जल चुकी थी। जाजम पर राव कल्हा और अहमद खाँ उनके साथ बैठे थे। राव कल्हा और अहमद खाँ दारू पी रहे थे। अंग प्रत्यंग की टूटन को मिटाने के लिए राठौड़ सरदार ने थोड़ा सा अमल लिया था।

"कहिए राठौड़ सरदार, सुबह होते ही हमें भयानक हमला बोल देना चाहिए। अ-ली के होश तो अभी ही उड़ चुके होंगे।"

राठौड़ सरदार ने गंभीरता से अहमद खाँ की ओर देखा। अहमद खाँ समय की गति को पहचान गया था। वह समझ गया था कि अ-ली के साथ उसकी भी मनसब खत्म होगी एवं द्रोह के अपराध में उसे भी मौत तक पीड़ा भोगनी होगी। इन्हीं सब परिणामों से परिचित होकर ही उसने सहसा अ-ली का साथ छोड़ दिया था और वह वफादारी बताने के लिए पूर्ण उत्साह के संग राठौड़ सरदार का समर्थन कर रहा था।

राठौड़ सरदार तीव्र दृष्टि से अहमद खाँ को देख रहे थे। अहमद खाँ ने झेंप कर पूछा "मेरी राय पर आपने कुछ कहा नहीं? मुझे जवाब का इन्तजार है।"

"मैं सोच रहा हूँ।" राठौड़ सरदार छोटा सा वाक्य कह कर विचारलीन हो गए।

"बेचारा अहमद खाँ! उसने सोचा होगा कि समय के साथ मैं भी

इ हान जिस तूरता और शीघ्रता से एक दशद्रोहा को कुचला वह अभिनदनीय है। हम क्या हमारा सारा दरबार इनका हृदय स आभारी है। इस खुशी म एक दुख भी हुआ कि सरदार जी क बाए हाथ का बाजू भी कट गया। उनकी दशा कुछ दिना तक चिंताजनक भी रही पर अब व पूण स्वस्थ है। फिर भी हम उ ह विश्राम करन की आज्ञा देत हैं और साथ ही घाषणा करत हैं कि हम राठौड सरदार का पाच हजारी मनसब प्रदान करत हैं। उ ह एक लाख रुपय नकद और अ य सारी सुविधाए देते हैं। व आराम क लिए गाँव जा सकत है। हम एक और हुक्म दत हैं कि पचास हजार आय वाल ठिकान नरगढ की जागीर भी इ ह बाग्दुनी दैत हैं।

सारा दरबार हष ध्वनि से भर गया।

इस महान सम्मान स राठौड सरदार गदगद हो गय। उ हाने भी बादशाह का विनम्र श दा म आभार प्रदान किया।

अपन निवास गृह म आन ही उ ह भाटी सरदार याद आ आये। जाजम पर गाव महार बठ हुए व अपन आत्मीय मित्र भाटी

[illegible]

[illegible] सा आ जा रहा था।

कितनी प्रस न होगा ? और भाटी सरदार जब इस धनराशि का आधा हिस्सा पायेंगे तो व मित्रता की पवित्रता पर कृतज्ञ हो उठेंगे और उनके नत्र सौहाद की तपिश से पिघल कर आद्र हो जायेंगे। मान जायेंगे कि राजपूत अपनी मित्रता निभाना जानता है। अपने वचन का पक्का होता है असली राजपूत !

इन्हीं विचारों में व बडी देर तक खोये रहे।

तभी बादशाह का दूत उन्हें बुलाने के लिए आया। व वस्त्र पहन कर चल पडे।

□ □ □

पुरगढ़ और मुरगढ़ के रास्ते जहाँ मिलते थे वहाँ चारभुजा देवी का मंदिर था।

प्रत्येक माह की रसम का वहाँ पूजा होती थी। दोनों ठकुराणियाँ चारभुजा की बडी धूम धाम से वन्दना करती थी। वर्षा के आने के लिए दोनों ठकुराणियों ने चारभुजा माँ की बडी पूजा की मनौती मागी थी। माँ से विनती की थी कि यदि धरा की प्यास बुझ गयी तो हम भी तेरी प्यास तीन-तीन बकरों की बलि से बुझा देंगे। तुम्हें रक्त स्नान करा देंगे।

प्रत्यूष के उगने से पूर्व ही दोनों ठिकाणों की ठकुराणियाँ सदल सम्पूर्ण गरिमा महिमा के चारभुजा देवी के मन्दिर की ओर चल पडी। बलगाडियाँ ऊंट और उनके पीछे देवी को भेंट चढाये जाने वाले तीन तीन बकरे ! दास दासियाँ !

ठकुराणी सूरज सूर्योदय के पूर्व ही मंदिर पहुँच गयी। मन्दिर के पश्चिम ओर एक घने वृक्ष के तने उसने अपना पडाव डाला। खेमे

बनाये ही जा रहे थे कि ठकुराणी महाकुँवर का साथ भी आ पहुँचा।
उनके साथ भाटी सरदार भी थे। वे सब बातें प्रसन्न चित्त रहे थे।

महाकुँवर ने गाड़ियों के रुकते ही भाटी सरदार से कहा, 'ठाकुर सा! पहले मैं पूजा करूँगी आप राठौड़ ठकुराणी से कह दीजिए कि वह पूजा बाद में करें।'

भाटी सरदार सूरज के पास आए। राठौड़ सरदार वय भी उम्र में भाटी सरदार से थोड़े बड़े थे, तो भी सूरजकुँवर ने अपने कुल की मर्यादा के अनुसार थोड़ा सा घूँघट निकाल रखा था।

"भौजाई सा! आपसे प्रार्थना है कि देवी का पूजन पहले आप हमारी ठकुराणी को करने दीजिए। वह आग्रह कर रही है।' भाटी सरदार का स्वर काफी विनीत था।

क्यों?' थोड़ा सा आश्चर्य हुआ सूरज कुँवर के स्वर में। ललाट में कुछ हलके बल भी पड़े।

उसकी इच्छा है।" ठाकुर ने सहज स्वर में कहा, आप मेरी बात मान लीजिए न!

'यह संभव नहीं है। सूरज ने दृढ़ता से कहा मैं मंदिर पहले आई हूँ इसलिए पूजा भी पहले मैं ही करूँगी।

जैसी आपकी इच्छा। कह कर भाटी सरदार चले गये। उन्होंने जाकर महाकुँवर से निवेदन किया ठकुराणी सा! राठौड़ ठकुराणी आपका प्रस्ताव नहीं मान रही है। वे यह कह रही हैं कि पहले मैं आई हूँ, इसलिए पूजन भी मैं ही करूँगी। एक पल रुक कर उन्होंने कहा और उनका यह कहना ठीक भी है। आप उन्हें पूजन पहले करने दीजिए।

वह बिना सोचे ही बोली नहीं, यह नहीं हो सकता, पूजन पहले मैं ही करूँगी।

"आपके हठ से तो रार बढ़ जायगी।'

बढ़ जाने दीजिए। मैं स्वयं निर्णय ले लूँगी।' कह कर वह सूरज

कुवर के सन्निकट आयी। सूरजकुवर ने बड सम्मान के साथ महाकुवर का मुजरा किया।

'म पूजा पहल करूँगी। महाकुवर ने दप भरे स्वर म कहा।

'यह कसे हो सकता है। जब पहले मैं आयी हू तब पूजा मैं ही करूँगी।' उसने सहजता से उत्तर दिया।

"और यदि म नही करन दू ता ?"

वह घाम से हँस पडी, टकुराणी जी, म कोइ जाटनी की जायी नही हूँ। म भी क्षत्राणी की बेटी हूँ। आन और बान पर अपना सवस्व विसजन करना जानती हूँ।

'फिर फमला हो जाय ?"

कसे ?'

हम दोनो परस्पर कर लें। महाकुवर न प्रस्ताव किया।

"तलवार स।'

'और क्या राजपूतानियाँ चूडिया की खनक स फमला करती हैं। इस द्वद्व युद्ध म जा विजयी होगा, वही पहले पूजा करेगा।

सूरजकुवर मुस्करायी। अपनी गदन को झटक कर वह बोली, 'अपनी बाजुआ पर भरोसा ह ?'

इसका निणय अभी हो जायगा। और उसन अपनी दासी को तलवार लान क लिए कहा।

सूरज ने भी अपने एक सिपाही का तलवार ल ली। भाटी सरदार लपक कर आये और बाल यह उचित निणय है। क्षत्राणी वाक युद्ध नहीं करतीं। शस्त्रों स ही वह हर उलझी समस्याआ को सुलझा लेती हैं।'

उनक आन स ठकुराणियो त थाड स घूघट निकाल लिए थे। महाकुवर न दासो की ओर मुह करक कहा 'अब आप यहाँ स चले जाइये हम स्त्रियाँ स्वय अपना फसला कर लेंगी।'

"अच्छा अच्छा। कह कर भाटी सरदार खेमे के उस ओर चले

गये जहाँ से उन्हें न नहा सकते थ। जान म पूव उ०।। तक पन दर कर यह जरूर मान लिया था युद्ध धमयुद्ध होना चाहिए। कोई किमी के साथ छल कपट न करें। विजय और पराजय सहष स्वी कार करें। हम सभी रक्त गौरव म पुनन अपन धम, वचन और वान क ही धगा ते हैं। प्राण स अधिक हम अपन वचन को मानन हैं।

मन्दिर के सामन दोना ठकुराणियाँ हाथा म खड्ग लेकर पहले पूजा कौन करेगा का फसला करन बढ़ गई। न्यो का रक्त स्नान कराने आया था और स्वय रक्त स्नान करने को तत्पर हो गयीं। उनकी तलवार महाकाली के खड्ग की तरह चमक रही थी। दोनो की आकृतिया कोमलता छोड़ कर क्रूरता का आवरण ओढ़ने लगी। दोनों के दास दासियाँ और नौकर अधिकारी सचेत और आतकित हो गए।

महाकुवर ने तलवार हाथ म लेकर नयन मूद कर अभ्यथना की। सूरजकुवर ने मन्दिर म जाकर चारभुजा देवी से सफलता का वरदान माँगा। फिर दोना द्वद्व युद्ध क लिए तयार हुई।

दोनो ने पतरें बदल। दोनो की तलवारें परस्पर टकरायी। एक पल दोना ने घृणा से एक दूसरी को देखा फिर भिड़ गयी। तलवारें टकराने लगी। महाकुवर ने एक सगीन वार किया। सूरजकुवर हट कर बची। महाकुवर की आखो म इसस तिरस्कार की भावना पसरी। अधरो पर दप भरी मुस्कान थिरकी। उसने एक और सघातिक प्रहार करते हुए कहा सभलिए ठकुराणी सा यह वार खाली नही जाएगा आपका तलवार जमीन पर होगी। और महाकुवर ने अत्यन्त तेजी से वार किया। सूरजकुवर न उस वार का दम्भ कठिनता स बचाया। यदि वह थोड़ी नहीं झुकती तो उसकी तलवार वास्तव म ही जमीन का स्पश करती। अब सूरजकुवर न सोच लिया कि शिथिलता स काम नही चलगा। शिथिलता से महाकुवर उसे पराजय और अपमान की आग म जलने के लिए छोड़ देगी।

सूरजकुवर स्वय शस्त्र विद्या की पारागत थी। शशव काल स लेकर विवाह तक उसन शस्त्र सचालन म निपुणता प्राप्त की थी। अत्य त ही तीव्रता स वार करती थी। महाकुवर क निर तर वारो स वह तिल मिला उठी और उसने गज कर कहा 'आप आप सभालिए ठकुराणी सा मेरे वार। उसन इतनी त्वरा स तलवार चलायी मानो बिजली चमक चमक कर लुप्त हो रही हो।

महाकुवर सूरजकुवर क वारो को रोकन म अपने आपको असमथ पाने लगी। सूरजकुवर ने एक वार ऐसा किया कि अब अपमान की आग म जलकर रणचडी बन गयी। सूरज का चेहरा भी विकराल हो गया था। उसने भी वार करती महाकुवर का अधिक अवसर नही दिया। अबकी बार उसने अपनी तलवार का गोलाकार चक्कर म घुमा कर महाकुवर की तलवार जमीन पर गिरा दी। निहत्थी महाकुवर मृत्यु की भय से भागन को तत्पर हुई तो सूरजकुवर न तलवार की नोक स उसक वस्त्रो का चीर दिया। कितना सधा हुआ वार था। वस्त्र फटे पर तन पर एक खरोच भी नही आई। अनावृत अगो को ढापन की चेष्टा म भयभीत महाकवर फिर भागन को उद्यत हुई तो सूरजकुवर न उस घेर लिया, पराजय स्वीकार है ?'

हाँ हाँ। और वह अपने अगो को फिर ढाँपने लगी। उसकी दासिया न उन्हे घेर कर नया ओढना ओढाया। महाकुवर का रोम-रोम अपमान की आग म जल उठा। इतना बडा अनादर उसका जीवन म कभी नही हुआ था ? यह सावजनिक अपमान ! लाज तक का नगा कर दिया राठौड ठकुराणी ने। उसकी इच्छा हुई कि वह सूरज को कच्चा चबा जाय पर वह आतरिक भय से जकडी हुई अचल खडी रही।

उधर मन्दिर म घटाध्वनि होने लग गया थी। नगाड बज उठ थ। नगाड महाकुवर के हृदय पर हथौडे की चोट की तरह पडे ! नये वस्त्र पहनते हुए महाकुवर न मन ही मन प्रतिज्ञा की, 'मैं इस अपमान

का जम्र बन्ला लूंगी। मैं भी पन्नाणा हूं चार मावर चठ ग्न्ना मरा काम नहीं है।

ठाकुर भाटी न अपन समस्त नागा का आदेश दिया पूजा म कोई भी किसी तरह का विघ्न उत्प न नहा करगा। कमला हा धुना है।'

मत्र तीव्र स्वर म गुजरित हुए।

महाकुंवर को बार बार लग रहा था कि उसक अ तर म को रह रह कर ज्वालाए भडका रहा है।

भाटी सरदार न आकर कहा सुना है कि राठौड ठकुराणी ने बहुत ही सधे हुए पतर दिखाए।'

आप जल हुए पर नमक छिडकत आय है।

मरी एसी मगणा नहीं है।'

फिर मेरे सामने उसकी प्रशसा न करा। मैं आग स कह रही हूँ कि समय आन पर मैं उससे अपने अपमान का प्रतिशोध लूंगी प्रतिशोध!

भाटी सरदार न उसे अधिक उत्तेजित करना उचित नहीं समझा। वे चुप हो गय। गभीर दृष्टि स व उसके उतरे हुए मुख को देखत रहे। पीडाओ स ढक गया था उसका मुख। नयना स रक रक अश्रुस्राव हो रहा था।

इधर सूरजकुंवर बकरा की बलि देवी का चढा रही थी। महापूजन हो रहा था। मत्रों स दिग्दिगन्त गूँजन लगा था। चार चार पडित पूजा करा रह थे।

तभी एक घुडसवार गुजरात के रास्त म आता हुआ दिखायी पडा। घुडसवार पर लगी हुई धल स स्पष्ट लग रहा था कि वह बहुत ही लम्बी यात्रा करक आ रहा है। उसन मन्दिर क पास गड हुए खमो को दख कर अपन घाडे को रोका। घोडा हिनहिना कर खडा हो गया।

राठौड सरदार का एक नौकर उसकी ओर बढा। घुडसवार भी

नीचे इतर गया। नीचे उतर कर उसन पूछा, "जनाब पुरगढ को कौन सा रास्ता जाता है ?"

"आप पुरगन जाना चाहत हैं ?'

जी ।'

'क्या ?

"वहाँ की ठकुराणी साहिबा को एक सदेश देना है। मैं गुजरात से आया हूँ।'

राठोड सरदार का नौकर हर्षित स्वर म बोला, आप गुजरात स आये हैं ? यह बडी प्रसन्नता की बात है। देखिए, आप थोडा सा विश्राम कीजिए हाथ मुह धोइए, तब तक पुरगढ की ठकुराणी सा देवा जी का पूजन कर लगी। आप उ ह यही पर स देश दीजिए। कोई शुभ समाचार है।'

जी ठाकुर सा आज से सातवें दिन यहाँ आयगे। उन्होंन एक युद्ध म महान् शौय का प्रदर्शन किया था। उसक एवज म उन्हें महा यश और अपार धन मिला है।'

आप कौन सरदार हैं ।

मैं क्षत्री हूँ पर हमारा खानदान वर्षो से बादशाह की सेवा म है। हम हरकारे का काम करत हैं। जाति के चौहान हैं।'

अब राठोड सरदार के चाकर दीपू न आदर सूचक स्वर म कहा आप चौहान सरदार हैं। जाजम पर बठिए मैं आपके लिए अन्न पानी का प्रब ध करता हूँ।'

घुडसवार इस सम्मान से मन हा मन बहुत ही प्रसन्न हुआ। वह हाथ मुह धान लगा। लगभग पाँच घटे के बाद पूजा समाप्त हुई। ठकुराणी अपने खेमे म आयी। उसक आते ही दीपू न कहा गुजरात से एक घुडसवार आया है। ठाकुर सा सातवें दिन यहा पहुँच जायेंगे।

कुशल तो है। घुडसवार कह रहा था कि वहा उन्होंने बडे शौर्य का प्रदर्शन किया था। बादशाह ने अपार धन दिया है उन्हें।

मा न्वी की ही यह कृपा है। सुनो नीपू ! तुम पाहुने का अच्छी तरह स्वागत मम्मान करो। उनके स्वागत मे किसी तरह की कोई कमी नही आने पाय। उ ह कहना कि ठाकुर सा म हमारी ओर से अज करें कि उनके स्वागत मे सारे गाव को सजाया जायेगा। घर घर घी के दीये जलेंग। ढोलनियो का नत्य होगा। नटो क खल होग।

दीपू ने घुडसवार को ठकुराणी की प्रसन्नता की प्रतिक्रिया मुना दी।

वही पर सभी ने प्रसाद खाया।

उधर महाकुवर की पूजा के मन्त्रोच्चार गूज उठे। वह देवी के समक्ष भी अपमान की पीडा मे तिलमिला रही थी। बार बार सोच रही थी कि वह प्रतिशोध लगी राठोड ठकुराणी से अपनी पराजय का प्रतिशोध ! और उसन चारभुजा के चरणो म पड कर कहा माँ, यदि तुमने मरे अपमान का बदला नही लिया तो मैं तरी भक्ति छोड दूगी।" और वह विकल हो उठी।

□ □ □

सूरजकुवर का लगा कि सात दिन सात युग हो गय। दिन अपग हो गय और रातें काल रात्रि की तरह लम्बी और लम्बी। अत म प्रतीक्षा की घडियाँ बीती।

चारभुजा देवी क पास सूरजकुवर न नीप को चद नौकरा के साथ भेजा। गाँव म घी क नीये जलाय। ढालनों स गीत गवाने शुरू कर दिये।

सूरज की पहली किरण न धरा को स्पश किया। राठौड सरदार अनेक बनवाडियो क साथ बादशाह की सना की सुरक्षा म मन्दिर

क सन्निकट पहुँचे । बान्शाह के मनिका ने तुरन्त विदाई चाहा । राठौड सरदार ने उन्हें रोकना चाहा, पर व रुक नहीं । चले ही गये । नीपू को राठौड जी के हाथ के मुर्चे क कटने का दुख था ।

राठौड सरदार ने सवप्रथम देवी माँ के दशन किये । दशन करते करने उन्हे अपने मित्र भाटी सरदार की याद हो आयी । याद के साथ उनके कणकुहरा म अपने वचन गूजने लगे । वचनो की स्मृति से ही उनके मुख पर उल्लास की रेखाए दप दप कर उठी । उन्होने मन ही मन अपने निणय को दोहराया, 'मैं अपने वचनो को पूरा करूँगा । और उनका हृत्य इस विचार मात्र से अलौकिक आनन्द से भर गया ।

मन्दिर स बाहर निकलते ही राठौड सरदार ने दीप से कहा, 'दीपसिंह इस स्थान पर हमने किसी को कुछ दने की प्रतिना की थी । तुम जाकर भाटी सरनार को बुला लाओ । उन्ह हमारी ओर स अरज करना कि राठौड सरदार अपने वचनो के अनुसार अपने कमाये हुए धन मे से आधा धन आपको नेन के लिए तयार खडे हैं । आपको इसी पल बुला रहे हैं ।

दीपू ऊन्ट पर सवार होकर रवाना हो गया ।

राठौड सरदार स्नानानि से निवृत्त होकर पूजा करन बठ गय ।

दीपू सुरगढ पहुँचा ।

महाकुवर उस दिन के बाद अपमान की आग में सुलग रही थी । उसकी प्रत्येक वस्तु के प्रति अरुचि हो गयी थी और वह हर पल न्सी चेष्टा म लगी रहती थी कि किसी भी तरह मैं सूरजकुवर से प्रतिनोध लू । रात दिन बस एक ही लगन, प्रतिनोध प्रतिनोध और प्रतिनोध !

उसकी दासी ने आकर महाकुवर का समाचार दिया कि पुगढ का कोई आदमी सन्नेन लकर आया है ।

"पुरगढ का ?' तेवर चढ गये मन्नाकुवर क ।

'हाँ पुरगन का ।

'क्या सदेश लाया है ?

'मुझे नहीं मालूम। वह ठाकुर सा म मुजरा करने के लिए गया है।'

महाकुवर तेजी स बठक की ग्रार गयी। बठक क पिछले दरवाजे क पर्दे की ग्रोट म खडी हो गयी वह। कान लगा कर वह भाटी सरदार ग्रौर दीपू की बात चीत सुनन लगी। दीपू न सिर झुका कर कहा "खम्मा ग्रन्नदाता हमारे ठाकुर सा पधार गय हैं ?

भाटी सरदार का मुख एकाएक प्रसन्नता म भर गया। व उत्साह से बोल क्या राठौड सरदार पधार गए ?

'जी ठाकुर सा व पधार गय हैं। ग्रौर मदिर के पास ग्रापकी प्रतीक्षा कर रह हैं।'

क्या ?

उन्होंने ग्रज की है कि व ग्रपन वचनो के ग्रनुसार ग्रपन कमाये हुए धन म स ग्राधा ग्रापको दगे। व ग्रापको इसी समय बुला रहे हैं।

भाटी सरदार ग्रानन्द की ग्रतिरेक म खो गय। चुपचाप निश्चल स खड रह। फिर बोल 'मित्र हो तो ऐसा। सच मुझ राठौड सरदार जस मित्र पर घमण्ड है। तुम उन्ह कहना कि भाटी सरदार ग्रा रह है।

दीपसिंह क जाते ही महाकुवर न बठक म प्रवेश किया। उसका चेहरा तमतमाया हुग्रा था। वह कडक कर बोली ग्राप राजपूत हैं कि घसियार ?

क्या ?

मैंने ग्राजतक सुना है कि राजपूत किसी म दान नहीं लता। भीख न ही लता ग्रौर ग्राज ग्राप ग्रपने मित्र से धन का दान लेन जा रह हैं। लज्जा नहीं ग्राती ग्रापको। जलते हुए स्वर म ठकुराणी चीखी।

ठकुराणी का इतना उग्र रूप दख कर भाटी सरदार थोडी दर स्तब्ध रह गए।

ठकुराणी पुन पूववत स्वर म बोली आजतक असली राजपूत दान लेना आया है लेना नही। राठौड सरदार चार पस कमा कर ला आये, इसका मतलब यह नही है कि व हम भिखारी समझ लें और ब्राह्मणो की तरह हमे दान द।'

भाटी सरदार असीम शांति स महाकुवर को देखत रह। जब वह उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी तब भाटी सरदार बोले, 'ठकुराणी सा! आपको इसमे इतना उत्तेजित नही होना चाहिए। मै आपकी बात समझता हूँ। मैं यह भी मानता हूँ कि मैं ब्राह्मण नही हू लेकिन राठौड सरदार मेरे आत्मीय हैं। मित्र हैं। मित्र मित्र को सदा शुद्ध भावना से लेता देता आया है।

'मित्र किसी को कुछ देते हुए इस बात का प्रचार प्रसार भी नही करना। वह चुपचाप बिना ढिंढोरा पीटे खजाने भेज देता है। अब ठकुराणी अपनी मूल भावना पर आयी फिर आप यह जानते ही हैं कि राठौड सरदार की ठकुराणी ने मुझे पूजा की बात को लेकर कितना अपमानित किया था। और आप इस तरह की भीख ले आयेंगे तो उसे मुझे फिर अपमानित करने का अवसर मिल जायेगा। मैं तलवार का घाव सहन कर सकती हूँ पर बात का नही। मैं आपसे हाथ जोड कर विनती करती हू कि आप यह धन स्वीकार नही करेंगे।

अच्छा नही करूगा। आपकी इच्छा नहीं है तो मैं राठौड सरदार को मना कर दूगा पर उनसे इसी समय भेंट करने जरूर जाऊगा।' कुछ सोच कर वे बोले आप सही फरमाती हैं कि राजपूत को किसी का दान नही लेना चाहिए। दान लेना केवल ब्राह्मण का धर्म है।" और भाटी सरदार ने अपनी पोशाक मगवायी।

मन्दिर के समीप राठौड सरदार भाटी सरदार की बडी आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे थे। ज्यों ही भाटी सरदार को ऊट पर आते हुए देखा त्यों ही राठौर सरदार अतीव आनद से भर गये। अपने मित्र की अगवानी के लिए व आगे बढे। सवप्रथम दोनो मित्र प्रगाढ आलिंगन

मे बधे। फिर भाटी सरदार ने राठौड सरदार के कटे हुए हाथ के मुर्दे को देख कर कहा 'यह किसी ने अपना मृत्यु को न्योता दिया है। बताइए राठौड सरदार, मैं आपके हाथ काटने वाले की गर्दन काट कर लाऊँगा।"

राठौड सरदार ने गर्व से कहा वह बेचारा परलोक पहुँच चुका है। अब आप बताइए कि कुशल है न ?'

दोनो जने बिछी हुई जाजम पर आकर बैठ गये। साथ साथ अमल पानी लिया। राठौड सरदार ने अफगानी पठान का सारा किस्सा सुनाते हुए कहा, वह एक खूंखार आदमी था। जितना महान वीर था उतना ही बडा नमकहराम था। उसकी नमकहरामी ही उसके प्राण ले गयी।

भाटी सरदार ने पान का बीडा खाते हुए कहा और सब ठीक है न ? अब हम चलने का हुक्म दिया जाय।

अवश्य पर धन का बटवारा अभी तक होना बाकी है। सुनिए भाटी सरदार मैंने जो कुछ कमाया है, उसमे आधा आप का है। कदाचित इतनी जल्दी मेरी जो पदोन्नति हुई है उसमे आपके भाग्य का भी हिस्सा रहा हो।

भाटी सरदार ने कृतज्ञता भरे स्वर मे कहा, आप मुझे केवल बडा बना रहे हैं राठौड सरदार ! आपकी मित्रता और उदारता की ही यह प्रतिक्रिया है किन्तु सही बात यह है कि जो कुछ आपने प्राप्त किया है वह आपके पराक्रम का ही प्रताप है। जो मनुष्य उद्यम करता है उसकी ईश्वर भी सहायता करता है। आपने जान हथेली मे लेकर बादशाह की सेवा की इसलिए आपको बादशाह ने इतना पुरस्कार दिया। इसमे मेरे भाग्य का कोई हिस्सा नही हो सकता।'

क्या नहीं हो सकता ? आखिर मैंने आपको अपने स्वजन किए हुए धन मे से आधा देने का वचन जो दिया था। मैं आपके निमित्त पहले ही आधा धन अर्पण कर चुका हूँ अब आपके भाग्य का सम्बन्ध मेरी

इस कमाई के साथ जुड जाना है।'

नही राठौड सरदार, आप जो कुछ भी कहें, पर मैं आपकी इस कमाई में से एक फूटी कौडी भी नहीं लूगा। मेरी मर्यादा मेरा धर्म और गौरव परम्परा मुझे ऐसा करने के लिए रोकती है। आखिर मैं क्षत्री हूँ। किसी से दान नहीं ले सकता। छीन सकता हूँ। सेवा करके वह भी अपने से बडे आदमी की कुछ ले सकता हूँ किन्तु मित्र के अर्जन किये हुए धन का हिस्सा लेकर मैं अपने को छोटा नही बना सकता। अपनी कुल परम्परा पर कलंक नहीं लगा सकता।'

यह आप क्या फरमा रहे हैं?' राठौड सरदार आश्चर्य में डूब गये मैं आपका मित्र हूँ। आत्मीय हूँ। आप इसे मेरी ओर से भेंट समझें।

'यह सभव नही है।"

फिर कैसे सम्भव हो सकता है?"

"यह भी मैं आपको नही बता सकता।

राठौड सरदार गम्भीर हो गये। उनकी व्यथा उनके चेहरे पर ग्रसने लगी। दोनो सरदारो के बीच मौन बैठा था।

'मैं आपको आधा हिस्सा बिना दिये नही जाने दूगा। राठौड सरदार ने अपना निर्णय सुना दिया।

सुनिए राठौड सरदार राजपूत भीख नहीं ले सकता, वह लूट सकता है छीन सकता है लड कर सब कुछ लेने का अधिकारी हो सकता है। एक दिन इसी जगह पर मेरी ठकुराणी और आपकी ठकुराणी ने तलवार के माध्यम से पहले पूजा करने का अधिकार प्राप्त कर लिया था और आज ।'

फिर आप भी इस धन को लेने का अधिकार प्राप्त कर लें।' राठौड सरदार ने कहा क्यों नहीं हम एक औपचारिक लडाई लड लें। उसमे मैं पराजित हो जाऊँ और आप इस आधे धन के अधिकारी हो जाए।

नि नाऊ हँसी हुए यह भाटी सरदार मानने भी क्या उपाय बुरा है ? इसम सबकी इच्छा पूरी हो जायेगी ? '

'ग्राखिर पगन के लिए कोई मध्यम मार्ग ढूँढना ही पड़ता है। राठौड़ सरदार न मानने वाले दापू स कहा शपू हमारी तलवार लाओ तो ?

भाटी सरदार ने भी अपनी तलवार निकाली। उपस्थित इस विचित्र पारवतन ग क्षण भर के लिए स्तब्ध हो गया और नगाड़ा म गिर गयी। उनकी नजरो म सरदी दशाओ को देख कर राठौड़ सरदार न कहा यह भूमपूठ की लड़ाई है। मित्र को अपना हिस्सा देन की एक औपचारिक लड़ाई। ग्राप लोग निनार रहिए। मुझे पराजित होना है। हर हालत पर होना है। आइए भाटी सरदार ! आप अपनी तल वार के जौहर दिखाइए।

मदिर के समक्ष हो भाटी सरदार और राठौड़ सरदार तलवारें लकर एक भूठी लड़ाई लड़न को तत्पर हो गए। दोनो न पतरे बदले। भाटी सरदार ने अमल के नश की मौज म पहला ही वार जोरदार किया। एक हाथ के होने हुए भी राठौड सरदार अपनी सुरक्षा हित निमत स्थान स खिसक गए। पूरे जोर क साथ भाटी सरदार जमीन पर लुढ़क गए। उपस्थिति खिलखिलाकर हस पडी। राठौड़ सरदार न शुद्ध भावना स चुटकी भरी ऐसे नही सरदार जरा कोइ बढ़िया पतरा बताइए।

भाटी सरदार थे असली राजपूत। राजपूत को 'रनार की गाल लगता है। तू कहन वाले की व जीभ काट लेत हैं। ऐसे भाटी सरदार को राठौड सरदार का यह वाक्य अत्यंत ही अपमानजनक लगा और उपस्थिति की खिलखिलाहट न आग म घी का काम किया। व औप चारिकता को विस्मृत करके सचमुच उत्तेजित हो गए आवेश मे भर गए। राठौड़ सरदार उसी सामान्य भाव म थे। मुस्करा रहे थ। उन्हें यह नहीं लगा कि उनका मुस्कराना भाटी सरदार को हिंसक बना

रहा है।

भाटी सरदार ने एक और वार किया। चूंकि राठौड़ सरदार रण कौशल के धनी वीर थे। युद्ध के हर घात-प्रतिघात की प्रतिक्रिया और बचाव को ममभ्रत थे इसलिए उ होने इस वार का भी अत्य त ही कुश लता से विफल कर दिया। भाटी सरदार धक्के खाते हुए दीवार से भिड गये। मन्दिर का यह दीवार लाल पत्थर का बनी हुई थी और उस पर तीखी बेल पत्तियाँ निकाली हुई थी। भाटी सरदार का ललाट पूरे वग से दीवार से जा टकराया। एक गहरी खरोंच लग गयी। रक्त की पतली लकीर उनके गाल पर से बह गया।

उन्हें एक खिलखिलाहट ने और घेर लिया।

ललाट पर खून को देखकर भाटी सरदार ने अपना आपा खो दिया। 'यह घोर अपमान है मेरा। ऐसा उन्होंने सोचा और वे चोट खाए साँप की तरह फुफ्कार कर राठौड़ सरदार पर झपट पड़े। औप चारिकता मित्रता और मनुष्यता को वे उस क्षण भूल गये। उन्हें सिर्फ याद रहा अपमान। क्षत्रिय संस्कारों ने उन्हें उन्मादित कर दिया। उन्हें केवल इतना याद रहा, वे एक सम्मानीय राजपूत हैं जो अपमान नहीं सह सकता। जो इतना कुछ भी सहन नहीं कर सकता। राठौड़ सरदार मुझे जान बूझ कर 'हठा' दिखाने की चेष्टा कर रहे हैं। वे उन्मादित हो गये। सिर पर खून सवार हो गया और उन्होंने होश-हवास खोकर राठौड़ सरदार पर त्वरा से वार करने शुरू कर दिये। राठौड़ सरदार चकित और हतप्रभ। भाटी सरदार क्या कर रहे हैं और उन्होंने गजकर कहा कि भाटी सरदार आप क्या कर रहे हैं तब तक एक संघातिक प्रहार राठौड़ सरदार की गर्दन के पास कन्धे पर हो गया।

राठौड़ सरदार वहीं पर गिर गये। तीव्रता से रक्त स्राव होने लगा। भाटी सरदार का पागलपन रक्त देख कर उतर गया। लपक कर उन्होंने अपने दुपट्टे से राठौड़ सरदार के कन्धे को बांधा और उस

पर शत्रु की ग्राल गिराने लगा।

राठौर सरदार की आकृति कांतिहीन होने लगी। दीपू का अंग अंग तिलमिला कर उठा। उसको इच्छा हुई कि वह भाटी सरदार का खून पी जाय।

राठौर सरदार ने कठिनता से कहा, यह क्या किया भाटी सरदार मेरे खेल में आपने सच्चा खेल खेल लिया?

पश्चाताप से अपनी गर्दन झुकाते हुए भाटी सरदार ने कहा मुझे क्षमा कर दीजिए राठौर जी, दो बार की विफलता और उपस्थिति की खिलखिलाहट ने मुझे अंधा कर दिया। मुझे लगा कि मैं मसखरा हो गया हूं। ओह मैंने यह क्या कर दिया?'

जो हो गया उसके लिए आप पश्चाताप न करें, परन्तु भविष्य में क्या करना है उसे पूरा करने का वचन दें।"

भाटी सरदार ने राठौड की पसरी हुई हथली पर अपनी हथली रख दी 'मैं आपको वचन देता हूँ कि यदि मैं क्षत्री हूं तो अपने वचनों का प्राण रहते हुए पालन करूंगा।

राठौड सरदार ने साहस के साथ कहा सरदार जी, मेरी पहली बात यह कि इस धन का आधा हिस्सा आप लेंगे। यदि आप नहीं लेंगे तो मेरी आत्मा मर कर भी चैन नहीं पायेगी। दूसरी बात यह है मेरी ठकुराणी का भी पाँव भारी है। उससे आप कह दें कि आप जो सन्तान उत्पन्न करें वह आप (भाटी सरदार) से मेरा प्रतिशोध ले। मैं चाहता कि इस रणयुद्ध में आप कोई अनीति का खेल नहीं खेलेंगे। भाटी सरदार! आप इतना याद रखें कि अगर आपने मेरी ठकुराणी पर छल-कपट से घात करना चाहा तो बादशाह आप और आपके ठिकाणे को जला कर राख कर देंगे।'

भाटी सरदार ने सजल नेत्रों से राठौर सरदार की ओर देख कर कहा मैं आपके दोनों वचनों को पूरा करने के लिए सच्चाई नहीं छोड़ूंगा। जो पाप मेरे हाथ से उलझा और पाप में हो गया है उसका

प्रायश्चित यही है कि मैं आपके परिवार की रक्षा करूँ ।" भाटी सरदार की आँखें भर आयी । विगलित स्वर में बोले, "हे भगवान ! यह तुमने क्या करा दिया । राठौर सरदार आप मुझे क्षमा कर दें । क्षमा कर दें ।"

राठौड़ सरदार से बोला नहीं गया । उन्होंने कातर दृष्टि से भाटी सरदार की ओर देखा । भाटी सरदार को उनकी आँखों के आकाश में मृत्यु का आतंक तरता हुआ लगा । जब राठौड़ सरदार की आँखों से अश्रु छलछलाये तब भाटी सरदार सिर पीट पीट कर रो पड़े । पश्चाताप से लिपटे शब्दों को उगलते हुए दारुण रोदन करने लगे ।

'पानी !' राठौर सरदार चीख पड़े ।

दीपू ने तुरन्त झारी से पानी का गिलास भर कर दिया । भाटी सरदार ने पानी पिलाया । दोनों की आँखें अश्रुओं से भरी हुई थीं ।

भाटी सरदार ने रुंधे स्वर में पूछा, 'ठकुराणी सा की याद आ रही है ?'

स्वीकृति सूचक सिर हिलाया राठौड़ सरदार ने ।

भाटी सरदार ने शीघ्रता से कहा, कोई जल्दी से मेरी साडनी पर सवार होकर जाय और ठकुराणी " अपने वाक्य को अधूरा छोड़ कर उन्होंने देखा तो देखते रह गये । राठौड़ सरदार की आँखें फटी गयी थीं । उनके प्राण पखेरू उड़ गये थे । भाटी सरदार कुछ क्षणों तक उनके शव से लिपट लिपट कर रोते रहे । सारा वातावरण शोकग्रस्त हो गया । फिर वे उठे । फिर उनकी लाश को एक बैलगाड़ी में रख कर व साडणी पर सवार होकर पुरगढ़ की ओर रवाना हो गए ।

पुरगढ़ में उत्साह की लहर थी । रात को घी के दीये जलेंगे । नट चौक में अपने करतब दिखा रहे थे और ढोलनिया डेरे के आगे ढोलक की थापों पर गीत गा रही थी ।

साडनी से उतर कर भाटी सरदार ने ड्योढ़ीदार से कहा, 'ठकुराणी सा को कहिए कि भाटी सरदार इसी समय मिलना चाहते हैं ।

बहुत जरूरी काम है।"

ड्योढ़ीदार ठाकुर के चेहरे से ही किसी अनागत अमगल की शका से घिर गया। वह भागता हुआ रावले की ओर गया और उन्होने ठकुराणी से भाटी सरदार की बात कही।

ठकुराणी ने कनार जडे वस्त्र पहन रखे थे। सलम सितारे उनके सोलह कली के घाघरे पर रात के तारो की तरह चमक रहे थे। महदी उन्होन हाथो पावो मे रचाई थी। गोरे गोरे हाथो-पाँवो मे महदी बहुत ही सोवणी भोवणी लग रही थी।

भाटी सरदार का सवाद पाकर वह रावले के दरवाजे के पास आयी और घूघट निकाल कर खडी हो गयी।

भाटी सरदार की जीभ तालू से चिपक गयी।

'क्या बात है ठाकुर सा? सब कुशल तो है न? अरे आपके ललाट पर यह चोट कसी? क्या कोइ अनय हो गया? ठकुराणी न एक साथ कई प्रश्न किए।

भाटी सरदार का हृदय पिघल गया। वे सुबक पड़।

'क्या बात है? स्वर म चिता झनक आयी।

रोदन भरे स्वर म सारी दुघटना को बताते हुए उन्होने जैसे यह कहा, मरे पागलपन ने राठौड सरदार के प्राण ले लिए—वैसे ही ठकुराणी उन्मत्त सी चीख पडी, 'नहीं नहीं एसा नही हो सकता। नही हो सकता।'

वह हो गया है आप मुझे जो चाहे दड दे सकती हैं। पर मैं ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मेरे मन म कोई खोट नही थी। मैंने ऐसा स्वप्न म भी नहीं विचारा था। यह सब अप्रत्याशित और दुर्योगवश हुआ है।

ठकुराणी सूरज का कलेजा फट गया। वह हाथ की चूडियो को दीवार स ताडती हुई रो पडी। क्षण म ही अशुभ सवाद डरे की दीवारों स बाहर चला गया। ढालनियाँ गाती गाती रो उठी। नगों ने

अपने तमाशे रोक दिये। सारी प्रजा डेरे के आगे एकत्रित होने लगी।

ठकुराणी कुछ पलो तक रोती रही। फिर वह पत्थर की भांति जड होकर बठ गयी।

'भाटी सरदार ने वचनो की बात बता कर कहा 'राठौड सरदार ने कहा है कि आपकी सतान मुझसे प्रतिशोध ले।

"मैं उनके दोनो वचनों का पालन करूंगी। आप आधा धन ले जाइएगा। जो होना था वह हो गया।

राठौड सरदार की शव यात्रा आरम्भ हुई। सभी लोग सुबक सुबक रो रहे थे। करुणा-बोझिल वातावरण था। भाटी सरदार ने दाह करके अपने ठिकाणे की ओर प्रस्थान किया। उसके पीछे घन से लदी गाडियाँ थीं। उनम नकदी और माल असबाब था।

□ □ □

सूरजकुवर ने जागीर की देख भाल के लिए अपने भाई जवानसिंह को अपने पास बुला लिया था। जवानसिंह साधु प्रकृति का यवित था। लोभ लालच से परे। अकेला। विवाह के एक साल के भीतर ही उसकी पत्नी का देहान्त हो गया था। वह अपनी पत्नी को बहुत ही प्यार करता था, इसलिए उसने उसके वियोग म दुबारा विवाह करन का विचार ही त्याग दिया। पत्नी की स्मृति को चिर रखने के लिए जवान-सिंह न यही एक अच्छा तरीका पाया कि विवाह न किया जाय।

जवानसिंह के हृदय पर राठौड सरदार की मृत्यु का मार्मिक आघात लगा। उसके मन की विरक्ति बढी साथ मे प्रतिशोध की भावना भी। यदि ठकुराणी सूरज उस अपने दायित्व के लिए विवश नहीं करती तो वह निश्चय ही किसी अज्ञातवास को चला जाता। इस

सृष्टि की दृष्टि से दूर घोर एकांतिक जीवन ! लाग लपेट और अपने पराये से पृथक एक शांत जीवन ! किंतु सूरजकुंवर के आंसुओं ने उसे रुकने के लिए विवश कर दिया और वह सुरगढ़ एवं बादशाह के द्वारा प्रदत्त की गयी जागीर की देख भाल करने लगा।

वैसे जवानसिंह प्रचंड योद्धा भी था।

उसने ठकुराणी सूरजकुंवर को यह भी कहा था, 'अगर बाई सा आप चाहें तो मैं भाटी सरदार को अपने किये हुए का दंड दे दूं। उसने जिस तरह आपके सुहाग को मिटाया है उसी तरह मैं उसकी ठकुराणी के सुहाग को मिटा दूं।'

सूरजकुंवर ने उसे मना कर दिया था। सूरजकुंवर ने बादशाह के उस अनुरोध को भी अस्वीकार कर दिया था जिसमें यह कहा गया था कि ठकुराणी साहिबा चाहें तो हम सुरगढ़ को नेस्तनाबूद कर दें। सूरजकुंवर ने बादशाह सलामत से प्रार्थना की थी कि वह ऐसा नहीं चाहती। यह सब दुर्योग के कारण हुआ।

वस्तुतः सूरजकुंवर चाहती थी कि उसकी कोख से जो संतान उत्पन्न हो वह अपने पिता का प्रतिशोध ले। वही अपनी तलवार से सुरगढ़ के दीये को बुझाये।

रावले में काले व सफेद वस्त्रों में लिपटी सूरजकुंवर उस दिन की आकुलता से प्रतीक्षा करने लगी जिस दिन वह पृथ्वी पर एक नये इंसान को जन्म देगी।

समय सरकता गया।

एक दिन ठकुराणी सूरजकुंवर को उसकी दासी पायली ने आकर कहा, भाटी सरदार के घर पुत्री ने जन्म लिया है। भाटी सरदार पुत्री जन्म का उत्सव भी पुत्र जन्म की तरह मना रहे हैं। ढोलनियां 'बधावा' गीत गा रही हैं।

सूरजकुंवर को इस संवाद से कोई उत्साह पैदा नहीं हुआ। वह कुछ क्षणों तक मौन रही। फिर बोली, भाटी सरदार हमारे ठाकुर

सा के पक्के मित्र हैं, अत अपनी ओर से उन्हे बधाई कहला दीजिए और जो 'नेग हमारी ओर से होता है, वह भी भिजवा दिया जाय।"

धापली चली गयी।

पुरगढ में कई कुवें बन रहे थे। बादशाह द्वारा दी गयी जागीर की आय से जवानसिंह पुरगढ को समृद्ध बनाने लगा।

नदी के अभाव म पुरगढ की सारी खेती वर्षा पर निभर करती थी। भगवान की दया या अदया से यदि वर्षा नही हुई तो पशु और मनुष्य दोनों घोर आपदा मे पड जाते थे।

जवानसिंह ने इसके लिए कई कुए खुदवाने शुरू कर दिए और दस कोस की चौरस जमीन को 'गोचर भूमि बना दिया। उसमे कुएँ भी बनने लग। जिसके पानी से बारह मास पशुओ के लिए घास होती रहेगी।

समृद्धि के साथ साथ पुरगढ की जनसख्या भी बढी। कुछ लोग और आकर बस गये और बसने लगे।

भाटी सरदार की पुत्री के जन्म के ठीक सोलहवें दिन राठोड सरदार क घर पुत्र का जन्म हुआ।

सार ठिकाणे म प्रस नता की लहर दौड गयी। ढोलनियो का नृत्य हुआ और घरो पर घी क दीय जलाय गये। ठकुराणी सूरजकुवर ने पुत्र ज म पर गहरे आत्म सतोष का अनुभव किया। पहली बार अपने नवजात शिशु को दख कर ठकुराणी ने मन ही मन निणय लिया कि अब मैं अपने पति की मृत्यु का प्रतिशोध लूगी। उनकी अतिम इच्छा को पूरी करक उनकी मृतात्मा को शाति पहुँचाऊगी।

जवानसिंह न दीपू के साथ पुत्र जन्म के समाचार को भाटी सरदार के पास पहुँचाया। भाटी सरदार ने सच्च राजपूत की भाँति यह सुखद समाचार सुनान वाल को एक सोने की गिन्नी पुरस्कार के रूप म दी। कहलाया, 'हमारी ओर से ठकुराणी सा और उनके भाई जवानसिंह जी को हार्दिक बधाई दें। मैं प्रभु से प्रार्थना करूगा कि वह बच्चे को

अपने पिता की भांति महान् योद्धा और गऊ-ब्राह्मण का रक्षक बनायें।

चालीस दिनों के स्नान के बाद भाटी सरदार स्वय ठकुराणी के पास आये और उन्होंने अपनी ओर से छोटे ठाकुर के गले में सोने की जजीर और हाथों में सोने के कड़े पहनाये। बच्चे को गोद लेकर वे पतासे की भांति फीके पड़े। उनकी आँखें भर आयीं। वे रुंधे स्वर में बोले 'भगवान मुझे कभी भी क्षमा नही करेगा। मैं सचमुच अपने उस उन्माद को नही भूल सकता जिसकी झोंक में मैंने अपने मित्र को मृत्यु की गोद में सुला दिया। हे भगवान! तुम मुझे क्षमा करना।"

घूंघट मे वधव्यग्रस्त आकृति को छुपाये हुए सूरज कुवर ने कहा, "जो हो चुका है उसकी चिंता न करें। विधाता को जो स्वीकार होता है वह होकर ही रहता है। फिर एक राजपूत ऐसी अपमानजनक एव हास्यास्पद स्थिति को कैसे सहन कर सकता है? उसका उत्तेजित व उन्मादित होना लाजिमी है।'

लेकिन मुझे इसका जीवन भर पश्चाताप रहेगा।'

'भगवान के समक्ष किसी का जोर नही चलता। आपकी बाई सा ठीक हैं न?

'आपके आशीष से वह बिलकुल ठीक है। और उसकी माँ भी।

तभी दीपू ने आकर कहा, आपको मामा सा याद कर रहे हैं।'

भाटी सरदार ने प्रणाम करके सूरजकुवर से विदा ली और बैठक में आये।

जवानसिंह के सामने दारू का दारू तैयार पड़ा था एक ओर घोला हुआ अमल भी था। जवानसिंह न दारू पीता था और न अमल। वह साधु था। पत्नी के मृत्यु के बाद उसमें राजपूती आन बान कभी कभी ही उत्पन्न होती थी।

भाटी सरदार ने दारू पिया और चले गये। जवानसिंह का हृदय न जाने क्या प्रतिशोध से भर आया।

ठकुराणी सूरज भी भाटी सरदार की लड़की के लिए जवर भिजवाँ-

चुकी थी। दोनो वे सृष्टि से अलग विचित्र सम्बध चलते रहे। विक सित होते रहे।

□ □ □

विशाल डेरे की बडी बडी दीवारो से घिर जीवन मे सूरजकुवर को पूण सतोष था। अपन लाडले को देख दख कर वह अपने दुखो के न्नि भूल रही थी। हर घडी उस देख कर वह यही सोचा करती थी कि वह अपने इस पुत्र द्वारा अपने पति का प्रतिशाध लेगी। भाटी सर दार की गदन कटवा कर मगवायेगी।

छोटे ठाकुर का नाम रखा गया विशालसिह। चूकि पिता के देहा त के बा" वही उस जागीर का स्वामी था। फिर भी वह छोटा था, इस लिए सभी लाग उसे प्यार से छाट ठाकुर कहत थ। उसके लिए एक विशप दासा रखी गयी—सीनकी।

सूरजकुवर भी उसे स्नेह स छोटे ठाकुर ही कहती थी।

छाट ठाकुर के लिए बादशाह ने एक मूल्यवान भूला भेजा। उन्होने ठकुराणी स यह भी कहलाया कि उनके योग्य जो भी सवा और आज्ञा हो व अवश्य कहें।

पर ठकुराणी न बादशाह का कभी भी कष्ट नहीं दिया। जवान सिह का सम्बल उसे ऐसा मिला कि फिर उ हे किसी की ओर नहीं ताकना पडा।

पूरा एक वष होन जा रहा था। छोटे ठाकुर की वषगाठ आने वाली थी। पहली वषगाठ। वह घोडालिये चलन लगा।

सारे ठिकाणे को सजाए जाने की योजना बनी। खेता की एक चौथाई लगान छोड दी गयी। तीन घर हरिजनो के थ उसक लिए नए

ले लिया करती थी।

भाटी सरदार ने चुटकी ली, "क्या राव जी, क्या बाई जी को साथ ले जाने की मनसा है ?"

"बाई जी चाह तो जरूर ले जाऊँगा।"

वेश्या भरकी ने एक बार राव कल्हा को प्रश्न भरी दृष्टि से देखा। लगभग ४५ ५० की उम्र। कही कही काले बालों मे झांकते हुए सफेद बाल। चेहरे पर क्रूरता के भाव थे। गालो की हड्डियां अधिक उभर कर उनकी आकृति को किंचित विकृत बना गयी। भरकी के मन म राव कल्हा के प्रति एक अरुचि की भावना जागा।

तभी छोटे ठाकुर को एक वृद्धा दासी धापली लकर आयी। सभी ने उस अपने अपने उपहार दिए। भाटी सरदार ने सोने की हसली दी। राव कल्हा ने सिंह मुख के मूठ वाली एक अत्य त ही श्रेष्ठ तल वार दी।

इसके बाद नशे की मनवार चली हुई। जवानसिंह ने इतना अच्छा प्रब ध किया कि सब सतुष्ट। बाई जी ने राजस्थान के कई लाक-गीत सुनाए सुपनो, हिचकी, तमाखू पणिहारी आदि।

लगभग भाझरके तक महफिल जमी।

इसके बाद सार मेहमान आराम करने चले गए।

राव कल्हा ने प्राथना की कि वे सूरजकुवर से मिलना चाहत हैं ? रावल म भेंट का प्रब ध किया गया। पर्दे के उस ओर ठकुराणी थी और इस ओर राव कल्हा।

राव कल्हा ने व्यथित स्वर मे कहा 'ठाकुर सा की मृत्यु का समा चार जसे ही दरबार में पहुँचा वसे ही सारे लोग पत्थर के हो गए। सन्नाटा छा गया। बादशाह तुरन्त आवेश मे भर उठे। सिंहासन से उठ कर दांत पासते हुए वे बोले, 'यह किसने हिमाकत की। राव कल्हा उस आदमी का जीते जी शिकारी कुत्ता के सामने डाल दिया जाय। बाद म आपक अनुरोध पर उनका गुस्सा ठडा हुआ। फिर भी ठकुराणी

सा उनका प्रभाव हमे सदा खलता रहेगा ।

ठकुराणी ने पर्दे के भीतर स कहा, बेचारे भाटी सरदार भी मेरे पागलपन समक्ष बच्चे की तरह रोने लग थ पर व भी क्या करते ? मे उनसे यह हत्या हो गयी ।' ठकुराणी एक पल रुक कर पुन बोली, ' फिर होनहार के सामने सबको सिर झुकाना पड़ता है ।"

' और मेरे लायक कोई सेवा ?

'बस आपकी कृपा रहनी चाहिए ।

राव कल्हा चले गय ।

ठिकाणे म सामान्य जीवन पुन चालू हो गया ।

□□□

सूरजकुवर की एक ही लगन थी कि वह अपने बेटे को अपने दिता की भाति अत्यन्त वीर शक्तिशाली शस्त्र चलाने म निपुण बनाए । वह स्वय शस्त्र विद्या की पारगत थी, इसलिए व्यक्तिगत रूप से वह उस पर विशेष ध्यान देती थी ।

जब छोटे ठाकुर का जन्म हुआ था उस समय धायली ने एक वृक्ष लगाया था । वह वृक्ष अब बडा होने लग गया था । छोटे ठाकुर और वृक्ष साथ साथ बडे हुए तो सूरजकवर के चेहरे की झुरिया और गहरी हो गयी । बाल जगह जगह पक गए ।

जवानसिंह यन्त्रवत अपना कत्त य पूरा कर रहा था । वह कभी कभी इतना बेचन हो जाता था कि उसकी आत्मा इस छल कपट भरी दुनिया से भाग जाने को हो जाती थी । पर बहिन का प्रतिशोध ! वह चुप हो जाता ।

देखत देखत । क युग बीत गया । पूरे बारह वष ।

माघ का महीना था। हड्डियाँ कपने वाली ठड ! चारो ओर नग घडग पड ! गहरा कोहरा।

छोटे ठाकुर व्यायामशाला म कसरत कर रह थे। बारह वष की उम्र म व पद्रह वष के लग रहे थे। पन्ना महाराज उसके व्यायाम कराने के गुरू थे।

छोटे ठाकुर का शरीर दड निकालत निकालत पसीने से भीग गया। पसीने की बूदें नाक पर से बह बह कर फश पर पड रही थी। दड की सख्या चार सौ के लगभग हो गयी थी। पन्ना गुरू हाथ म पतली सी बेंत लिए हुए खडे थे। पन्ना गुरू स्वभाव के विचित्र कठोर और सिद्धान्त के पक्के थे। अपनी सच्चाई और कला पर उ ह पूरा भरोसा था। दो चार दाँव तो उन्हें ऐसे आत थे जिसकी तोड कोई जानता ही नही था।

बिलकुल प्राचीन परम्परा के गुरू थ। अक्खड, स्वाभिमानी और सम्मान प्रिय। राजा हो रक उनकी व्यायामशाला म सब बराबर। जो बेंत रक की गलती पर प्रयोग हाती थी वही बेंत राजा के लिए प्रयोग होती थी। व्यायाम के अतिरिक्त व अत्यन्त विद्वान व शास्त्रो के ज्ञाता थे। छाटे ठाकुर को वे पढ़ना लिखना भी सिखाते थे।

सूरजकुवर के पिता के व लगोटिया यार थे। अत जब ठकुराणी ने उन्ह अपन पति की दुखद मृत्यु समाचार क साथ प्रतिशोध की बात लिखी ता पन्ना गुरू पिघल गये और अपनी परम्परा के विरुद्ध व पुर-गढ आ गये।

छाटे ठाकुर की गति कुछ धीमी हुई। पन्ना गुरू के भवों म कुछ बल पड गये। बाले, क्या बात है छोटे ठाकुर गति मे धीमापन क्यों ?"

छोटे ठाकुर से कोई उत्तर नही दिया गया।

बोलते क्यों नहीं ?"

छाटे ठाकुर दड निकालत निकालने बीच मे ही रुक गए। खडे हो

गए। पन्ना गुरू का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया। उन्होंने उनकी जांघ पर सटाक सटाक दो बेंत मार दी। कड़क कर बोले, चल गुरु कर वापस।'

"मैं थक गया?'

"तो क्या दंड लगाने मे किसी की थकान मिटती है? अरे यह लोहे के चने हैं। इसको चबाना सहज नही।' पन्ना गुरू की आंखें लाल हो उठी।

"पर मैं आज से व्यायाम नही करूंगा।'

"छोटे ठाकुर!" सुनते ही पन्ना गुरू की आंखें विस्फारित हो गयी। क्रोध से उनका बदन कांपने लगा। वे दांत को पीसते हुए बोले, 'तुम व्यायाम करना नही चाहते हो तो मुझे इसकी कोई गरज नही। बदला तुम्हें अपने बाप का लेना है। मेरा बाप कुत्ते की मौत नहीं मरा है! मैं ऐसे महनतचोर को अपनी कला सिखाना भी नहीं चाहता। मैं अभी वापस जा रहा हूँ।

गुरू जी वापस जा रहे हैं। यह समाचार घड़ी भर मे सारे डेरे मे फैल गया। इधर जवानसिंह और उधर ठकुराणी सूरज भागती हुई आयी और अतिथि गृह पहुँच गयी। गुरू जी नौकरों से कह रहे थे कि मेरा सामान बांधो। हम इसी समय जायेंगे। यहां सब निकम्मे लोग हैं। और इस बच्चे ने अपनी मां का नही किसी गोली का दूध पिया है।'

पर हुआ क्या?' ठकुराणी ने पूछा।

"हुआ यह कि आपका लाडला व्यायाम करना नहीं चाहता। व्यायाम करने से यह थकता है। कल यह कहेगा कि बाप का बदला लेने से नर हत्या होती है पाप लगता है। छि यह राठौर सरदार के घर में कलंक के रूप में होगा।' गुरू के स्वर से घृणा चिनगारियों की भांति शब्दों के रूप में निकल रही थी। उन्होंने एक बार कठोर-दृष्टि से ठकुराणी को देखा और दृढ़ता से कहा, मैं इसी समय जाऊंगा। मैं ऐसे

हृतचोर को अपनी कला नहीं सिखा सकता।'

ठकुराणी को अपना कोख कलंकित हुई जान पडी। वह यह भी जानती थी कि गुरू जी सनकी हैं, कभी किसी की कोई परवाह नहीं करते। इनके पास रह जायगा तो लडका नान और शक्ति म महान बन जायेगा।

वह कठोर मुद्रा म छोटे ठाकुर की ओर मुडी। कडक कर पूछा, गुरू जी क्या कह रहे हैं? जवाब क्यो नही देते, तुमने गुरू जी को क्या कहा? चुप क्यो हो? छोटे ठाकुर बोलत क्यो नहीं? क्या तुम मेरे वचनों को इस तरह पूरा करोगे, अपने पिता का प्रतिशोध इस तरह लोगे? बोलत क्यो नही? तुम नही बोलोगे तुमने अपराध किया है इसलिए तुम्हारी जबान खुल नही सकती। पर मैं तुम्हे माफ नही कर सकती।' और उसने तडातड़ छोटे ठाकुर के गालो पर चाटें बरसा दिए। छोटे ठाकुर न कोई विरोध नही किया। पत्थर की मूर्ति की भांति अचल खडा रहा। उसकी आँखें सजल हो गयी।

"गुरू जी के चरणो मे पड कर उनसे क्षमा माँगो।"

कदाचित छोटे ठाकुर के अतस ने अपनी गलती स्वीकार कर ली थी। वह गुरू के चरणो मे गिर पडा और सुबक सुबक कर रोने लगा।

पन्ना गुरू एक महान प्राणी था। उसन छोटे ठाकुर को अपने गले लगा लिया और उसकी पीठ थपथपात हुए कहा बेटा! तुम्हारे पिता के साथ भाटी सरदार ने अत्यन्त ही निकृष्ट और अमानुषिक व्यवहार किया है। तुम्हारे पिता का यदि एक हाथ बेकार नहीं होता तो वे भाटी सरदार को एक ही झटके में उस लोक पहुँचा देते! एक पल रुक कर वे बोल अब यह चमत्कार तुम्हे दिखाना है। अपने बाप का बदला प्रतिशोध उनकी मृतात्मा की शाति का एक यही उपाय है बेटा।'

छोटे ठाकुर ने हाथ जोड कर विनती की, "मुझसे गलती हो गया गुरू जी मुझे क्षमा कर दीजिए।'

हम नहीं जायेंगे। गुरू जी ने मना लिया गुरु किया।

दूसरे दिन सुबह चार बजे उठ कर छोटे ठाकुर ने व्यायाम की। इसके बाद गुरू जी उसे पढ़ाने लगे। प्राचीन शास्त्रों के अतिरिक्त आधुनिक नीति ज्ञान! व्यवहार ज्ञान!

छोटे ठाकुर की प्रतिभा मुखरित हो गयी।

समय और गुजरा।

एक दिन गुरू ने एक दिन कहा 'छोटे ठाकुर, अब तुम पारंगत हो गये हो। १८ वर्ष के हो चुके हो। प्रभु की दया से तुम इक्कीस-बाईस के लग रहे हो? आज से तुम मुक्त हो। अब हम जायेंगे। हमारा पूरा हुआ।

ठकुराणी को जाकर छोटे ठाकुर ने यह समाचार दिया। देखते देखते जवानसिंह और ठकुराणी अतिथि गृह के समक्ष आ गये।

'आप जा रहे हैं गुरू जी?' जवानसिंह ने पूछा।

हाँ जवानसिंह जी अब मेरा काम पूरा हो गया है। अब आपका काम है कि इस सारी जागीर की व्यवस्था सिखाएँ। मैंने इसे विद्या और शक्ति से परिपूर्ण कर दिया है। जीवन के क्षेत्र में अब इसे परास्त नहीं होना पड़ेगा, बशर्ते भाग्य ने साथ दिया तो? प्राणी और नियति के बीच नियति अधिक शक्तिवान है। वह इतने हलके से मनुष्य की समूची सत्ता को हिलाती है कि उसके सारी परियोजनाएँ समाप्त हो जाती हैं। उस नियति को नमस्कार करो।'

गुरू भावुकता से भर गये।

'ठकुराणी ने प्रार्थना भरे स्वर में कहा "थोड़े दिन और रुक जाइए गुरु जी कम से कम अपने शिष्य के एक दो चमत्कार तो देखिए।'

"जीवन में मैं इसके अनेक चमत्कार देखूंगा।'

इसकी जन्मपत्री आपने नहीं देखी। मैंने हजारों बार आपसे कहा और आपने सदा टाल दिया।

गुरू जी हँस पडे। अनत आकाश की ओर देखकर बोले, "मैं किसी की जन्म पत्री नही देखता। मैं ज्योतिष शास्त्र म अपने आपको धुरन्धर मानता हूँ। भविष्य फल देखने के बाद सत्यवादन प्रिय अप्रिय एव अच्छा बुरा दोनों होता है। अच्छी बात मनुष्य को उसकी सफलता की चरमसीमा के स्पश म प्रेरणा देती है। पर बुरी बात मनुष्य को पुरु षाथ के प्रति भी उदासीन करती है। ऐसी स्थिति मे मनुष्य को इस शास्त्र से बचना चाहिए। केवल कमरत रहना चाहिए पुरुषाथ के प्रति सजग और सावधान! बेटी! अपने पुत्र को कहना—'अपने आपको याद रखो। जो अपने आपको याद रखता है, वह अपने जीवन के सारे स्वप्न पूरे कर लेता है।"

गुरू जी का सारा सामान बध गया। ठकुराणी ने गुरू जी जो को काफी धन और एक रथ भेंट म दिया।

छोट ठाकुर ने दो घुडसवारो को उनकी सुरक्षा के लिए प्रबध किया और स्वय पैदल ठिकाणे की चार दीवारी तक पहुँचाने गया।

गुरू जी का रथ धीरे धीरे आँखो स ओझल हो गया।

□ □ □

पुरगढ और सुरगढ के बीच घनघोर जगल पडता था। जगल के तीन ओर छोटी बडी पहाडियाँ थीं। कीकर नागफनी पीपल, नीम, इमली और जगली पेड-पौधो से यह जगल डरावना लगता था। कहीं-कहीं यह जगल इतना घना था कि जगली जीव भी उसे पार नही कर सकते थे।

उस जंगल म एक डाकू रहता था। डाकू का नाम वैसे निभयसिह था, किन्तु लाग उसकी निदयता के कारण उसे निदयीसिह कहने लगे।

निरन्दीसिंह निःस्वार्थ का डाकू था। डाकुओं के मन में वह मान
था। उसकी कोई अतिरिक्त और नियम नहीं था। वह डाकुओं की
प्रचार महिमा को भी नहीं मानता था।

निरन्दीसिंह राजा का बिगड़ा हुआ एक अधिक था। कुछ लोगों
का यह भी अनुमान था कि निरन्दी राजा जा से मिला हुआ है। वह
जितनी लूट-पाट करके सम्पत्ति एकत्रित करता है, उसमें से आधा राज
जी का स्वयं ले लेते हैं। हालांकि निरन्दीसिंह ने कभी पुरगढ़ की ओर
आँख नहीं उठायी थी पर लोग अफवाह उड़ाने लगे थे कि वह शा
ही पुरगढ़ पर डाका डालने आने वाला है।

जवानसिंह इस बात को सुनते ही चिन्तित हो गया। उसने छ
ठाकुर दीपू सरदारसिंह आदि अपने विशेष परामर्शदाताओं व अधिका
रियों को बुलाया। बादशाह की दी हुई जागीर में एक कालू खाँ नाम
मुसलमान योद्धा भी रहता था उसे भी पुरगढ़ बुला लिया गया
कालू खाँ भी अत्यन्त ही स्वामिभक्त और चतुर योद्धा था। इस उसक
बहुत ही मान था।

सारी स्थिति को स्पष्ट करते हुए जवानसिंह ने कहा 'मुझे अप
गुप्तचर दीनानाथ से यह सूचना मिली है कि निरन्दी पुरगढ़ की ओ
आँख लगाये हुए है। उसकी यह इच्छा है कि वह पुरगढ़ में सुल
मान की विशिष्ट करके उन भावनाओं से घेर दे। चूँकि उसका को
निश्चित ठिकाना नहीं है इसलिए उसे एकाएक आक्रमण करके समाप
नहीं किया जा सकता। उसे समाप्त करने का मैंने एक उपाय ढूँढ़ा है
छोटे ठाकुर, सरदारसिंह जी व कालू खाँ अपनी अलग अलग टुकड़िय
बना कर जंगल की ओर रवाना हो जायें। दिन भर उसे ढूँढ़ें औ
साँझ को वापस आ जायें। उस खूँखार डाकू की पहचान है, एक भय
नक घाव का निशान उसके ललाट के बायीं ओर गाल को चीरता हुआ
है। उसकी सूरत से गर्भवती लुगाइयों के गर्भ गिर जाते हैं। बच्चे चीख
पड़ते हैं। वह पौराणिक दैत्य है।

कालू खाँ ने अपनी ओर से सुझाव रखा, 'छोटे ठाकुर अभी नादान हैं अतः उन्हें इस खतरे मे न डाला जाय। यह काम हम सब कर लेंगे। यदि मामा जी मुझे हुक्म दें तो मैं अकेला ही उस खूंखार भेड़िये को नस्तनाबूद कर दूंगा।"

छोटे ठाकुर ने इसका प्रतिवाद किया, 'मैं अब नादान नही रहा हूँ। जिस गुरू से मैंने दीक्षा ली है, उसने मुझे अब कार्य-क्षेत्र मे उतरने की आज्ञा दे दी है। मैं आप सबसे प्रार्थना करूँगा कि मुझे भी उस दुष्ट को मारने का अवसर दिया जाय।"

तख्तसिंह ने किंचित विहँस कर कहा, छोटे ठाकुर ठीक फरमा रहे हैं। उन्हें यह अवसर दिया जाय। साँप का बच्चा क्या छोटा और क्या बड़ा ?"

छोटे ठाकुर ने अपना निश्चय दोहराया, "मैं आपको विश्वास के साथ कहता हूँ कि मैं उस अन्यायी को परलोक पहुँचा कर ही दम लूगा।"

अन्त म यह कार्य तख्तसिंह, कालू खाँ और छोटे ठाकुर को सौंप दिया गया। छोटे ठाकुर के साथ दीपू था। अन्य दस सिपाही और थे।

दूसरे दिन सुबह ही पूरा दल अश्वारूढ होकर चल पड़ा। छोटे ठाकुर ने अपने साथियो से निवेदन किया कि इस जगल का हमे एक लाभ और उठाना चाहिए, वह यह कि इसम शेर और चीते बहुत अधिक हैं, इसलिए हम आज शिकार भी खेलना चाहिए। क्या दीपू काका ?'

'जसी आपकी मर्जी छोटे ठाकुर।"

सारा दल जगल की ओर बढा। एकाएक छोटे ठाकुर को एक चीता दिखायी पड़ा। छोटे ठाकुर ने अपनी बन्दूक सभाली। निशाना साधा। गोली चलायी। चीता चिघाड कर घनी झाड़ियों में घुस गया। छोटे ठाकुर ने पीछा करना चाहा पर वे सफल नहीं हुए। दीपू ने भी उन्हें रोक लिया।

वे थोड़ी दूर और चले। सारा दल सावधान था। अप्रत्याशित छोटे ठाकुर ने एक हिरण देखा। एक अत्यन्त ही आकर्षक

छोटे ठाकुर ने कहा 'दीपू काका, यह हिरण कितना सुन्दर है? काफी तगड़ा भी है।

"आज आप इसे मार लें तो शाम का भोजन हम सब इसी का ही करें।" दीपू ने कहा।

"इसे मैं अभी अपनी बन्दूक का शिकार बनाता हूँ।" कह कर छोटे ठाकुर ने निशाना साधा। कदाचित हिरन को अपनी मृत्यु का आभास हो गया था, इसलिए वह सजग होकर चौकड़ी भरने लगा।" छोटे ठाकुर और दीपू ने उसका पीछा किया। आगे आगे हिरन और पीछे पीछे ये दोनों। जंगल और झाड़ियाँ! झाड़ियाँ और जंगल! छोटे ठाकुर के सारे साथी बिछड़ गए।

धूप तेज थी। सूर्य आकाश के बीचोबीच चमक रहा था। प्यास के मारे छोटे ठाकुर का गला सूखने लगा, पर हिरन का सम्मोह उन्हें अपनी ओर खींच रहा था। वे अधाधुंध पीछा करते जा रहे थे।

हिरन अप्रत्याशित लोप हो गया।

छोटे ठाकुर ने घोड़े को थाम कर पूछा दीपू काका वह हिरन कहाँ है?'

अरे वह तो इस तरह गायब हो गया जैसे कोई मायावी हो। हम यहीं ठहर कर उसकी टोह लेनी चाहिए।

दोनों जने वहीं पर खड़े हो गए। दोनों की साँस फूल रही थी। बुरी तरह से वे पसीने से भीग गये थे।

छोटे ठाकुर ने कहा 'मुझे बड़ा अचरज हो रहा है कि वह एका एक कैसे गायब हो गया है।

यही मैं सोच रहा हूँ।

इसी समय किसी युवती की उन्हें चीख सुनायी पड़ी। दोनों के कान खड़े हो गए। सजग हो गए।

'क्या बात है?'' दीपू ने पूछा।

'किसी स्त्री के चीखने की आवाज है।

चीख फिर सुनायी दी और साथ मे कुछ शब्द भी —"मुझे बचाओ, मुझे बचाओ"—और जगल मे मरती हुई एक आतनाद ! करुणा और भय से भरी आतनाद ! !

छोटे ठाकुर ने कहा, "यह चीख दीपू काका उस घाटी स आ रही है।"

'किस घाटी से ?"

"पीछे वाली से।"

"घोडे को मोडो।"

दोनो ने शीघ्रता से अपने घोडा को मोडा और घाटी की ओर उनको भगाया।

लम्बी सपाट घाटी। चिकनी रेत। दोनों ओर गगन स्पर्शी चोटियाँ। सुरम्य और शात !

अश्वों की टापों से घाटी गूज उठी।

आखिरी चट्टान के पास पहुँचते ही दोनो ने देखा कि निरदयी सिंह किसी युवती को पकड कर ले जा रहा है।

छोटे ठाकुर ने तुरत कहा, 'दीपू काका जमीन पर आ जाओ। अब आप छिप जाइए।

दीपू छिप गया।

छोटे ठाकुर ने हवा से गोली चलायी।

निरदयी चौंका। छोटे ठाकुर चट्टान पर थे। उनके हाथ मे बदूक थी। उन्होने निशान से निरदयी को पहचान लिया। गरज कर कहा, 'निरदयी, स्त्री को छोड दो।"

निरदयी की आकृति उस घाव के निशान से अत्यन्त ही विरूप और डरावनी लग रही थी। वह अट्टहास करके बोला "यदि तुमने गोली चलायी तो मेरी गोली इस लडकी के सीने से पार होगी। यदि तुम चाहते हो कि लडकी जीवित रहे तो गोली का खेल मत खेलना।"

छोटे ठाकुर ने उसे गौर से देखा—निरदयी चेहरे से ही बिलकुल

निरदयी लग रहा था। खूखार भेडिया। दीपू काका ने धीरे से कहा, "छोटे ठाकुर! आप नीचे आ जाइए। कही वह बातो ही बातो म आपको अपने गोली का निशाना न बना दे।"

'यह संभव नही।'

"फिर भी।'

'अच्छा काका, सुरक्षा पहली चीज है।' वह कर छोटे ठाकुर एक चट्टान की ओट म आ गये। ओट म आकर उन्होने एक गोली चलायी। निरदयी लपक कर एक चट्टान के अकेले टुकडे की ओट म हो गया। वह भी गोली का जवाब गोली से देने लगा। जम कर मोर्चा लगा।

छोटे ठाकुर ने दीपू से कहा "काका आप यह मोर्चा सँभालें, मैं पीछे से उसका काम तमाम करता हूँ।'

'हाँ यह युक्ति अच्छी रहेगी।'

छोट ठाकुर चट्टान के पीछे पीछे लुकते छिपत डाकू क पीछे की ओर आ गये। दीपू ने बराबर डाकू को लडाइ म व्यस्त रखा। तीव्रता से गोली सचालन हो रही थी।

डाकू के पज म दबायी युवती अचेत होकर चट्टान के सहारे पड गयी थी।

पलक झपकत छोटे ठाकुर डाकू के पीछे आ गय और उन्होंने निरदयी को पीछे स गोली का निशाना बनाया। निरदयी की पीठ पर गोली लगी और निरदयी चीत्कार के साथ गिर गया। छोट ठाकुर उस ओर लपके। निरदयी न उसे अपने सामने देख कर अपनी मरणासन्न शक्ति को बटोर कर अपनी बन्दूक सभाली। यदि उसी समय दीपू एक गोली और नही छोडता ता कदाचित निरदयी छोटे ठाकुर को चिरनिद्रा म सुला देता। दीपू की गोली उस हाथ पर लगी जिस हाथ म निरदयी के बन्दूक थी। बन्दूक छूट गयी। छोट ठाकुर ने अब निरदयी को धर दबोचा।

निरदयी का सारा बदन लहूलुहान हो गया था। उसकी साँस

प्रांखो म प्रा गयी थी ।

उसन एक बार प्रपनी बुभती हुई प्राखो से छाटे ठाकुर को देखा प्रौर बुदबुदाया तुमने मुझे घोखे स मार दिया । पीठ पीछे से असली राजपूत वार नहीं करता । तू राजपूत नही गोल का जाया है, थू है तुझ पर ।

छाट ठाकुर न उत्तर दिया 'राजपूत गरिमा तू निभा रहा है ? तू ता इतना नीच प्रौर कमीना है कि तुझे चौरगा करके चौराहे पर छोड देना चाहिए । न किसी की बेटी को बटी समझता है प्रौर न बहू को बहू । न किसा को तू बहिन समझता है प्रौर न माँ । तरे जसे चरित्रहीन प्रौर निदयी मनुष्य को न्याय प्रौर धम की बात करने का कोई प्रधिकार ही नही है । तूने जो पाप किये हैं उसका दड प्राज तुझे मिल गया । यह भगवान की कृपा है कि जब मैंने तुझे समाप्त करने का विचार किया तब तू मेरे हाथ से मारा गया ।

निरदयी ने तडप कर एक प्राह भरी प्रौर वह ठडा हो गया । दीपू प्रौर छोट ठाकुर न ईश्वर का नाम लिया ।

युवती प्रभी तक प्रचेत पडी थी ।

दीपू न कहा, समीप पानी का झरना है वहाँ ले चलें इसे । वेश भूषा से किसी प्रच्छे घरान की लग रही है । न जान इस दुष्ट ने कितनी कन्याप्रो क सतीत्व को हरा होगा । ईश्वर ने इसे पृथ्वी से उठा कर बड उपकार का काम किया है ।'

दीपू ने उस प्रपनी गाद म उठाया प्रौर झरने के पास लाया । दीपू ने युवती क मुख पर जल के छीटे डाले । छाट ठाकुर ने चुल्लू भर भर कर पानी पिया । प्यास बुझने पर उसे प्रसीम शाति का प्रनु भव हुप्रा ।

थाडी देर म उस युवती की चेतना लौटी ।

इस बीच छोटे ठाकुर उसे प्रपलक दृष्टि स देख रहे थे । सौन्दय सरोवर म स्नान की हुई एक परी । नख से सिर तक प्रद्वितीय । उसका

यौवनोन्मुख मन एक विचित्र सिहरन से भर गया।

चेतना में लौटते ही सबसे पहले युवती ने पूछा, "आप कौन हैं? वह डाकू कहाँ चला गया?"

दीपू ने उसे पथ देते हुए कहा 'डाकू को हमारे छोटे ठाकुर ने मार दिया है। आप निर्भय हो जाइए। छोटे ठाकुर पुरगढ़ के ठाकुर हैं।

युवती पुरगढ़ का नाम सुनते ही चौंकी। बैठती हुई वह बोली, "आप पुरगढ़ के ठाकुर हैं।'

'जी! और आप?"

'युवती माटो सरदार की बेटी गिगनार कुँवर थी। उसे मालूम था कि पुरगढ़ से उसकी शत्रुता है। इसलिए उसने अपना वास्तविक परिचय छुपा लिया और कहा 'मैं धनपुर की राजकुमारी हूँ। आपने मेरी मर्यादा बचा कर मुझे अत्यन्त ही उपकृत किया है। मैं आपकी हृदय से कृतज्ञ हूँ।

'पर आप इस अत्याचारी के फन्दे में कैसे आ गयीं?" छोटे ठाकुर ने पूछा।

मैं शिकार खेलती खेलती इधर निकल आयी और इसने मुझे घर दबोचा। मेरा घोड़ा भी कहीं इधर ही भटक रहा होगा।" अब तक युवती एकदम व्यवस्थित हो गयी थी।

'दीपू काका! आप डाकू की गर्दन काट कर अपने साथ ले लीजिए। मैं राजकुमारी का घोड़ा ढूँढता हूँ।

जो हुक्म छोटे ठाकुर।

गिगनार और छोटे ठाकुर घाटी के नीचे की ओर उतरे। घाटी का सन्नाटा उनके पाँवों की आहट से भंग हो रहा था।

गिगनार ने छोटे ठाकुर को असीम अनुराग से देखा और कहा, मैं आपको क्या पुरस्कार दूँ?'

पुरस्कार! छोटे ठाकुर चौंके और उन्होंने गिगनार की ओर

देखा। दोनो कुछ पला तक एक दूसरे को देखते रहे। लज्जा से गिग-नार का चेहरा आरक्त हो गया। पलकें नीचे झुक गयी। उसने अस्पष्ट शब्दों म कहा, "आपने मेरा जीवन और मेरी मर्यादा को बचाया है, उसका पुरस्कार!"

दोनो ने एक बार फिर एक दूसरे को देखा। प्रशात हरीतिमा पर दृष्टिपात करते हुए छोटे ठाकुर ने कहा, 'यह मेरा अपना धम है। मैंने अपने क्षत्रिय धम का पालन किया है। गौ ब्राह्मण और अबला की रक्षा करना एक सच्चे क्षत्री का पहला कतव्य है। उसके बदले म किसी पुरस्कार की अपेक्षा मुझे शोभा नही देता।

'उपकार की पूर्ति तो प्रत्युपकार स हो सकती है।"

कतव्य की पूर्ति के बदले किसी की उपेक्षा यायसगत नही।"

कदाचित गिगनार की आवाज को उसका घोडा पहचान गया हो, इसलिए वह जोर से हिनहिनाया।

वह रहा आपका घोडा।" छोटे ठाकुर ने कहा।

दोनो लपक कर घोडे की ओर गय। गिगनार ने घोडे की पीठ पर हाथ रखा। घोडा पुन हिनहिनाया। लगाम थामी गिगनार ने। दीपू के पास आए। दीपू ने निरल्पी की गदन काट कर घोडे की जीन से डाकू की चोटी से बाँध कर लटका दी थी।"

"काका?'

सब ठीक है।"

मैं जरा राजकुमारी को छोड कर अभी आया।"

'मुझे छोड कर! कहाँ?'

'आपके धनपुर ।

'गिगनार के चेहरे की हवा उड गयी। बोली 'नही नही, मुझे इसकी जरूरत नहीं।'

यह जगल है।

म इतनी कायर नही हूँ।

"फिर भी मैं आपको कुछ दूर छोड़ दूं। वहाँ तक जहाँ तक आम रास्ता न आ जाय।'

"आपकी इच्छा।"

दीपू समझ गया था कि राजकुमारी के रूप ने छोटे ठाकुर के हृदय में हलचल उत्पन्न कर दी है। वह मन ही मन मुस्कराया। बोला, छोटे ठाकुर ! मैं थोड़ा आगे चलता हूँ।'

छोटे ठाकुर ने कोई जवाब नहीं दिया। दीपू आगे हो लिया। दोनों जनें घोड़ा पर सवार हुए चल रहे थे।

छोटे ठाकुर ने पूछा 'फिर कब भेंट होगी।

क्यों ?"

छोटे ठाकुर झेंप गये। सकोच से उनकी नजरें झुक गयीं। उन्हें कोई उत्तर नहीं सूझा।'

आपने मेरी बात का जवाब नहीं दिया ?'

मेरे पास इसका कोई उत्तर नहीं है।'

"फिर हम कल दोपहर को लाल घाटी मे मिलेंगे। लाल पत्थरों के बीच हम ।" गिगनार के अरुणिम अधरों पर मुस्कान थिरक गयी। उत्तेजना उत्पन्न करने वाली मुस्कान !

एक चौराहे पर दोनों ने एक दूसरे से विदाई ली, 'अच्छा, कल मिलेंगे छोटे ठाकुर ! पर एक बात का ध्यान रहे कि यह बात अत्यन्त गुप्त रहे हमारा मिलना और हमारा सारा व्यापार ! मैं इसका वचन चाहूँगी।

मैं वचन देता हूँ।

साँझ का सूरज अपनी अन्तिम किरणों को समेट कर सृष्टि से विदा हुआ ठीक उसी समय गिगनार विशालसिंह से अलग हुई।

छोटे ठाकुर और दीपू जैसे ही पुरगढ़ की चारदीवारी में घुस वैसे ही लोगों ने देखा कि निरदयी का कटा हुआ सिर दीपू के हाथ में है। लोग एक उन्माद से झूम गये। थोड़ी देर में यह समाचार सर्वत्र फैल

गया। लोगों ने सुख की सांस ली।

ठकुराणी ने यह समाचार सुना तो हर्ष के मारे उन्मत्त हो गयीं। छोटे ठाकुर को अपने आलिंगन म आबद्ध करती हुई बोली, "मुझे विश्वास हो गया है कि आप अपने पिता का प्रतिशोध सफलता से लेंगे। मैं चाहती हूँ कि जिस दिन भाटी सरदार ने आपके पिता जी को मारा था वह दिन अब शीघ्र ही आयेगा। मेरी इच्छा है कि मैं उसी दिन भाटी सरदार का सिर मगवा कर उसका ही तर्पण कर दू। माना यह एक वीभत्स काय है, लेकिन इससे आपके पिता जी की आत्मा को स्वग में असीम शाति मिलेगी। मैं उनके वचनो का पालन करके उऋण हो जाऊँगी।

छोटे ठाकुर का चेहरा व्यथा की परछाइयो से भर गया। व दृढ स्वर म बोले 'मां सा !, मैं आपके वचन का पूरा पालन करूंगा। भाटी सरदार का सिर इन चरणों मे रखूगा।

तभी मैं जानूगी कि आप मेरे बेटे हैं। आप की रगो मे मेरा रक्त दौड रहा है।" सूरजकुँवर ने सहसा प्रसग को बदल कर कहा, 'छोटे ठाकुर, आपने डाकू निरदयी को इतना जल्दी उस लोक म कैसे पहुँचा दिया ?'

सारी कहानी सुना कर उसने कहा 'पता नही वह लडकी कौन थी, लेकिन इस लडकी के कारण हम उसे पाने मे सफल हो गये।"

रास्ते में विशाल ने दीपू काका को गिगनार के बारे म एक भी शब्द कहने के लिए मना कर दिया था।

चलो भगवान ने आपको एक साथ दो उपकार करने का अवसर दिया। जाइए अब हाथ मुह धोकर थाल अरागिए।

विशाल वहाँ से सीधा अपने कक्ष म आया। उसे फिर गिगनार याद हो आयी। उसे अपने आप पर थोडा गुस्सा भी आया कि उसने राजकुमारी का नाम क्या नहीं पूछा ?

वह बहुत देर तक उसकी स्मृति म पिरते हुए प्रपमार को देखता रहा।

दासी ने आकर कहा, 'छोटे ठाकुर रसोई म आपकी प्रतीक्षा हो रही है।'

वह चौंका। फिर वह हाथ मुह धोकर रसोई की ओर गया। उसे लग रहा था कि वह अन्दर स उदास हो रहा है।

□□□

लाल घाटी क दोनो ओर लाल पत्थरों के पवत की श्रणियाँ थीं। घाटी म एक झरने से निकलने वाली छोटी नदी बहती थी, इसलिए घाटी म मनमोहक हरीतिमा थी। कहीं कहीं नारियल के ऊँचे-ऊचे वृक्ष थे। कही कहीं शिलाखडो पर मिट्टी जम जाने के कारण दूब उग आयी थी और वे अत्यन्त ही सुहावने प्रतीत हो रहे थे।

जगली फूलो के कारण भी घाटी की शोभा बढ़ गयी थी। छोटे ठाकुर नही विशाल समय से कुछ पूव ही पहुँच गया था। सूय आकाश के मध्य मे प्रखर रूप से चमक रहा था। वह एक वृक्ष की गहरी छाया तले अपने अश्व को बाँध कर बठ गया। धूप के विभिन्न टुकड़ वृक्ष की पत्तिया के बीच जमीन स चिपक पड़े थे।

विशाल के मन म गिगार का रूप सौन्दय सुरा की मादकता की भाँति छा रहा था। वह वृक्ष के तने का सम्बल लेकर नेत्र मूद कर स्वप्निल सृष्टि म खो गया। जिस अनुभूति का स्पश उसके मन ने एक क्षण भी नहीं किया था, वह अब उस एक पल के लिए भी अपने से पृथक नही होने द रही थी। उसके मन मस्तिष्क और आत्मा पर कोहरे की भाँति वह छायी हुई थी। यह क्या है ? कुछ कहानियाँ सुनी थीं

बचपन में। एक राजकुमार ने एक राजकुमारी को राक्षस के चंगुल में फँसा देखा। राजकुमार ने राक्षस को मारा और राजकुमारी को मुक्त कराया। थोड़ी देर के बाद राजकुमारी राजकुमार को अपना सर्वस्व समझने लगी। प्रेम करने लगी। प्रेम प्रेम प्रेम ! यह शब्द उसके उर गगन के दिग्दिगन्त में ध्वनित प्रतिध्वनित होने लगा। उसके अन्तस की धरा पर सर्वत्र व्याप्त हो गया। ' यह प्रेम है, प्रेम है !

छोटे ठाकुर का अस्तित्व मिट गया। वह विशाल हो गया, एक साधारण युवक विशाल, जो सिर्फ प्रेम के नाम से अपने को भीगा हुआ पाता था। छोटे ठाकुर का आत्मगौरव आन, शान और मर्यादा सब की सब मिट गयी और रह गया केवल विशाल ! प्रणय की अदृश्य फुहारों से घिरा एक युवक ! प्रणय हृदयी युवक !

अश्व के टापों की आवाज सुनायी पड़ी। आत्मलीन विशाल चौंका। आवाज धीरे धीरे उसके करीब आती गयी। बहुत बहुत करीब। उसने देखा कि राजकुमारी है। उसके मन में उल्लास के झरने फूट पड़े। वह अगवानी के लिए उठा। उसने अश्व से उतरती गिगनार को सहारा दिया।

'आपने कुछ देर कर दी राजकुमारी जी !"

"मेरा नाम गिगनार है।'

मैं आपको नाम से नहीं पुकार सकता।"

'क्यों ?'

अच्छा नहीं लगता।'

'जैसी आपकी मर्जी छोटे ठाकुर।"

विशाल हँस पड़ा। बोला, आप भी मुझे छोटे ठाकुर कहती हैं न ?"

गिगनार झेंप गयी।

विशाल ने घाटी के सौन्दर्य को अपनी दृष्टि में भरते हुए कहा, 'मुझे आप से मिलने के पूर्व यह नहीं मालूम था कि प्रेम क्या होता

है ? इस अनुभूति से अज्ञान था और अब सच आपको एक पल भी नहीं भूल सकता । मुझे परिणाम का कोई पता नहीं । राजपूत का प्रेम सफल होता है या असफल मैं नहीं जानता क्योंकि उसका जीवन प्रेम और आनन्द से अधिक कर्त्तव्य से जुड़ा होता है । किसी भी पल उसे कर्तव्य की वेदी पर बलिदान हो जाना पड़ता है । प्रणय के वातावरण से अधिक उसे युद्ध के गर्जनाओं में रहना पड़ता है फिर भी मैं अपनी ओर से अपने प्रणय की आस्था विश्वास और पवित्रता को निभाऊंगा ।'

अपने इस लम्बे भाषण के उपरान्त विशाल ने जैसे ही गिरनार की ओर देखा वैसे ही वह व्यग्र हो उठा। बोला 'यह क्या राजकुमारी जी ? आपकी आंखों में आंसू ! '

'मैं यह सोच रही हूँ कि ईश्वर ने मुझे आपसे क्यों मिलाया ? मैं सच कहती हूँ कि जो स्थिति आपकी है, वही स्थिति मेरी है। कल से एक पल भी चैन नहीं पड़ा। बार बार आपकी सूरत याद हो आती थी। फिर यही इच्छा होती थी कि यदि मेरे पंख होते तो मैं उड़कर आपके पास चली आती। पर ।" वह चुप हो गयी। उसकी आंखों में प्रश्न नाच उठे।

'पर क्या ?'

पर ईश्वर ने एक क्रूर खेल खेलने के लिए इस संयोग को बनाया है। आशंका प्रकट की गिरनार ने।

ऐसा आप अभी क्यों कहती हैं ?

'भावी अमंगल की संभावना मेरे समक्ष अनावृत खड़ी है। छोटे ठाकुर ! क्षत्राणी को साधारण स्त्री की भांति प्रेम करने का कोई अधिकार नहीं है। उसे प्रारम्भ कौटुम्बिक गौरव के अनुकूल सांस लेनी चाहिए। और हमने ।

विशाल ने गिरनार के कन्धे को छूकर कहा, यदि भावी अमंगलों की चिन्ताओं में उलझे तो हम एक पल भी नहीं हंस सकेंगे। छोड़ो इन

बातो को।'

गिगनार ने उसकी बातो का समथन किया, "ग्राप ठीक कह रहे हैं छोटे ठाकुर ! जो होना है, वह होगा ही, पर अभी हमे एक युवक-युवती की भाँति जीवन के परम सुखद क्षणों की उत्तेजना मे आकठ डूब जाना चाहिए। भाग्य यदि सर्वोपरि है और हमारे प्रेम म सच्चाई है तो हम जीते जी ही नही, मृत्यु के समय भी साथ-साथ रहगे !" और गिगनार उससे लिपट गयी।

प्रणय की मधुर पुलक मे वे साझ के आगमन तक विस्मृत से बैठे रहे। विदा होन के पूव दोनो ने फिर मिलने की प्रतिज्ञा की।

गिगनार धनपुर की ओर जाने वाली पगडडी की ओर मुड गयी और विशाल वीहड रास्ते से पुरगढ की ओर रवाना हुआ। अभी वह थोडी दूर ही गया था कि उसे एक युवती रोती हुई मिली। वह एक चट्टान के टुकडे पर बठी थी और उसके पास एक शेर मरा पडा था।

विशाल शेर को मरा जान कर आश्चय म डूबा। सोचने लगा कि क्या इस युवती ने इस शेर को मारा है ! वह घोडे से उतरा और पूछने लगा क्या बात है बहिन, इस घोर जगल मे तुम क्यों रो रही हो ? क्या तुमने इस शेर को मारा है ?

युवती ने अश्रुभरी पलकें उठायीं। कुछ क्षणो के लिए उसने विशाल को प्रश्न भरी नजर से देखा और फिर मौन होकर आँसू बहाने लगी। विशाल ने सोचा सभवत वह भयभीत है इसलिए उसने कहा, "मैं पुरगढ़ का ठाकुर हूँ। धम और नीति पर चलने वाला हूँ। तुम मुझे नि सकोच सच सच बताओ कि तुम इस जगल म क्यों रो रही हो ? तुम कौन हो ? यहाँ क्यों आई हो ?

युवती ने इसे बठने का सकेत किया। विशाल बैठ गया ! युवती अपने आँसू पोंछ कर बोली "मैं सेठ कुबेरनाथ की बेटी हूँ। पिता जी ने मुझे क्रोधित होकर इस जगल मे छोड दिया।

तुमसे अपराध क्या हुआ था ?

कर जोत को सतोष हुआ।

ठकुराणी सूरजकुंवर से मिलकर जोतबाई का हृदय पिघल उठा। नयनो से अश्रुधारा बह गयी।

अरे रोती क्यों हो जोत बाई सा?"

'माँ सा! म अपने बाप की सबसे छोटी बेटी हूँ। माँ मुझे जन्म जन्म देकर इस लोक से चली गयी। पहली बार मने ममता के सुख का पाया है। उसके असीम स्नेह की प्रतीति की है।'

'सुनो बेटी! आप इस घर को अपना घर समझो। भगवान ने चाहा तो आपको किसी तरह का कोई कष्ट नहीं होगा।"

आपकी मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

कृतज्ञ तो आपको अपने भाई का होना चाहिए। छोटे ठाकुर, अपनी बहिन के रहने का अच्छा प्रबन्ध कर दीजिए।"

"जो हुक्म माँ सा!"

जोत बाई वहाँ सुख से रहने लगी।

दूसरे दिन उसने रथ बुलाया। दीपू को साथ लिया और उसी स्थान पर आयी जहाँ कल उस वह जगली मिला था। उसने दीपू काका से प्रार्थना की 'काका सा मैं अभी आती हूँ आप यहीं पर मेरी प्रतीक्षा कीजिए।

लेकिन बेटी यहाँ अनेक जगली जानवर हैं। पग पग पर प्राणो को खतरा है। ऐसी स्थिति म अकेले जाना खतरे से खाली नहीं है। यदि आपको कुछ हो गया तो मेरा मुह काला हो जायेगा। मैं छोटे ठाकुर को अपना मुह नहीं दिखा सकूगा।

'काका सा, आप जरा भी चिंता मत कीजिए।" जोत ने दीपू को आश्वासन दिया, 'मृत्यु सर्वोपरि और निश्चित सत्य है। किसी भी क्षण और कस भी आ सकती है। यदि मेरी मृत्यु यही पर है ता यहीं पर होगी। आप यहीं पर रुकिए। मैं अभी आयी।'

जात उस जगली क पाँवो के चिन्हो के सहारे चलती गयी। थोडी

र पर उस एक झोपड़ी दिखायी दी। वह दावाग्रो से घिरी हुई उस झोपड़ी मे घुसी। वही जगली वहाँ बठा हुआ फुहडता से रोटी खा रहा था। न साग ग्रौर न दाल। केवल रोटी। उसके पास बैठी थी एक बुढ़िया। इतनी बूढ़ी कि ग्रनुमान नही लगा सकते।

जसे ही जगली ने जोत को देखा वसे ही वह उठ खडा हुग्रा ग्रौर उसने मुह से खूखार जानवरो की भाँति एक विचित्र ग्रावाज की। जोत डर गयी। जगली उसके समीप ग्राया। उसके मुख स एक चीख निकली। जगली उसे हटा कर जगल की घनी झाडियो म खो गया।

चीख सुन कर बुढ़िया लकडी टेकती हुई ग्रायी। ग्रल्पकाल तक वह जोत को गौर से दखती रही। फिर बोली 'तुम कौन हो ?"

वह कापती हुइ बोली, "मैं सेठ कुबेरनाथ की बेटी जोत हूँ।'

'यहा क्यो ग्रायी हो ?' उसका स्वर कडकता हुग्रा गूजा जसे बिजली कडकी हो।

'इस ग्रादमी को धन्यवाद दन।"

क्यो ? बुढ़िया की भुर्रिया कसमसायी।

कल इसने मेरे प्राण की रक्षा की। इसने मुझे कल शेर के पजे से बचाया था ?'

बुढ़िया के चेहरे पर इस वाक्य से कोई विशेष प्रतिक्रिया नही हुई।

जोत ने दुबारा स्वर पर दबाव देकर कहा "शेर भी कैसा भयानक था माँ जी! पाँच हाथ का। मेरे तो देखते ही प्राण सूख गये। मैंने सोच लिया कि मैं मरूगी। लेकिन ग्रापके बेटे ने मुझे उस नरभक्षी के मुह स बचा लिया।'

यह कोई खास बात नही है।

'शेर स लडना!'

हाँ! उसन सहज स्वर मे कहा।

यह ग्राप क्या कहती हैं ?'

ठीक कहती हूँ। ग्रादमी सबसे भयकर नरभक्षी है। इससे ज्यादा

एक सौ चार वर्ष जीवन जिया है। उनकी एक साधकना है। महाध्वंस और महानिर्माण दोनों आपने देखे हैं। और इसने केवल जगत ही जगत।

कुन्थिया का जैसे अप्रत्याशित एवं सत्य-बोध हो गया हो। वह उदासी से घिर गयी। उसका चेहरा सहसा पीला पड़ गया।

मैं आपको ठीक कहती हूँ। मैंने भी अपने बाप से विद्रोह किया, फलस्वरूप बाप ने मुझे इस जगत में भेज दिया। आप मेरी बात पर गौर कीजिए। मैं समझती हूँ कि मेरी बात में आपको सार्थकता लक्षित होगी। कुछ सार मिलेगा कि आप जो भी कर रही हैं वह जरा भी ठीक नहीं है। आप अपने वंश को समाप्त कर रही हैं, वर्ना आपको प्रतिहिंसा की आग में जल कर अपने बेटे को इस बात के लिए तैयार करना चाहिए जिससे वह अपने कुटुम्ब के हत्यारों से प्रतिशोध ले सके। राजपूत रक्त वहाँ कर प्रतिशोध लेता है तो बनिया अर्थ के शिकंजे में शत्रु को फँसा कर उससे क्या उसकी सात पीढ़ी से प्रतिशोध लेता है। मैं अभी चलती हूँ आप मेरी बात पर गौर कीजिए, विचार कीजिए अच्छा माँ जी प्रणाम।'

जात अपना लम्बा भाषण समाप्त करके वहाँ से आ गयी। दीपू काका बेचैनी से उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसे देखते ही वह बोला, 'आप कहाँ चली गयी थीं बाई सा!'

मैं यहीं थी। चलो काका सा वापस चलें। भाई सा प्रतीक्षा कर रहे होंगे।'

वह जब वापस डेरे पहुँची तब हल्का सा अँधेरा घिर आया था। किले की मीनारों को उतरता धुंधलका गाव सा दबोचने लगा था। विशाल के निजी कक्ष में दीवा जल गया था।

वह सीधी विशाल के निजी कक्ष में गयी। विशाल एक वातायन के पास खड़ा हुआ गढ़ शिखरों पर घिरते हुए अँधेरे को देखता हुआ विचारमग्न था।

जोन की पावा की आहट ने उसका ध्यान भग किया। उसने घूम कर देखा तो बाला 'आप कहा गयी थी? देखा बाई सा इस तरह अकले जगल की ओर न जाया करें।'

अकेले!" चौंक पडी जोत "यह आपको किसने फरमाया? अजी भाई सा म दीपू काका मा के साथ गयी थी। दिन भर पडे पडे जा मन नहीं लगता है? अब जानी हूँ?

'फिर भी आप जगल की ओर न जाया कीजिए।

वह विशाल के स निकट आ गयी। आकर बाली, क्यो भाई सा क्या जगल म मुझे कोई खा जायगा? आप भी तो सदा जगल म जात हैं।'

'मैं शिकार खेलन जाता हूँ।

सच।'

बिलकुल।'

और म बताऊ?'

'बताइए।"

बुन्धिया और जगनी के सम्बधित सारी कथा बतला कर जोत बाली भाई सा, विचित्रराय अत्यन्त धनाढ्य व्यक्ति था। वह रियासत के राजा का कोपभाजन हुआ। एक लाख मोहरो के बदले उसका सारा परिवा मरवा डाला। घृणा और प्रतिहिंसा का इससे बडा सबूत क्या होगा? घटना का सुन कर रोगटे खडे हो जाते हैं।'

विशाल गम्भीर हा गया। वह कुछ देर तक सोचता रहा और बोला इस हत्या के पाछे सिफ एक यह कारण नही है कुछ और भी कारण है।

म आपका मतलब नही समझी।'

मतलब यह है कि इस हत्याकांड के बारे म मैने भी कुछ सुन रखा है। विचित्रराय की मा जो कारण बता रही है वह अधिक ठीक नहीं है। शराब सगान समय मनुष्य ऐसा बातें करता है जो सुनने को

सकती है। इस ज्ञान का प्रकाश और विद्या का चमत्कार कितना महान होता है? इसलिए मैं चाहूँगा कि आप इस बात को अपने पेट में ही रखें और मुझे स्वतंत्रता पूर्वक अपने ध्येय को पूरा करने दें।

'जैसी आपकी मर्जी।'

बात यहीं समाप्त हो गयी।

पहाड़ियाँ अंधेरे में बिलकुल डूब गयी थीं।

□ □ □

लाल पाटी को छोड़ कर गिरनार और विशाल ने अपना अभिसार स्थल बनाया चमकीली चट्टान को। यह चट्टान बिलकुल ही कम आधार पर खड़ी थी। उसके चारों ओर घोर एकांतिक वातावरण था।

आज गिरनार ने आते ही कहा 'छोटे ठाकुर चलें, कोई अच्छा शिकार करने चलें।

अवश्य!'

दोनों घनघोर जंगल की ओर चल पड़े। प्रारंभ में उनके घोड़े धीरे धीरे चल रहे थे। एकाएक उन्हें एक भेड़िया दिखायी दिया।

विशाल ने पूछा, "इसे यमलोक पहुँचा दूँ?

गिरनार ने उत्तर दिया 'अवश्य।

विशाल ने तीर निकाला और धनुष पर चढ़ा कर मारा पर भेड़िया कदाचित मानवी वाणी से परिचित हो गया था, इसलिए वह भाग गया। तीर सांय सांय करता हुआ एक झाड़ी में घुस गया। गिरनार मुस्करा पड़ी। विशाल ने उसकी ओर प्रश्न भरी नजर से देखा फिर झेंप गया।

कोई बात नहीं निशाना चूक ही जाता है।

"हाँ, आजकल मेरी स्थिति दयनीय है।'

"कस ?"

मेरी आँखें सिफ तुम्हारी सूरत पर जमी हुई हैं। सच रात दिन तुम्हारी यादो स घिरा रहता हूँ। मन मे तनाव ही तनाव रहत हैं। कुछ भी अच्छा नही लगता।'

वह मुस्करा पडी। झट से घोडे से उतर गयी। विशाल भी उतर गया। दोनों जने एक घने पीपल के पड के तले दूब पर बैठ गये। एक दूसरे के सामने मौन और निश्चल !

'क्या सोच रही हो ?" विशाल ने मौन भग किया। निजनता मे उसका स्वर सगीत की तरह गूज गया।

'म सोच रही हू कि हमारा प्रेम शुभ परिणाम से टकरायगा या नही ?'

"तुम्ह सन्देह क्या है ?"

'हर पल आशका से घिरा है। अनागत क्षण की कोई निश्चितता नही। छोटे ठाकुर यदि जीवन मे हम एक दूसरे से विलग होने क लिए बाध्य होना पडा तो ?

विशाल ने उसके मुह पर अपना हाथ रख दिया और उसकी आँखो म आखें डाल कर कहा, नहीं गिगनार मेरे एकात जीवन का सगीत तुम हो। तुम्हारे आते ही मेरी ऊब मर जाती है और खुशिया के सागर मरे चारों ओर मचलने लगते हैं। तुम्हारे बिना मेरा जीवन स नाट की घाटियो की तरह सूना और मौन हो जायेगा।" विशाल का हाथ गिग नार की बाँह स फिसलता हुआ हथेली पर रुक गया और उसकी उग लियाँ गिगनार की उगलियो म उलझ गयी। दोनो की उगलिया परस्पर तडप रही थी।

छोटे ठाकुर ! गिगनार ने विगलित स्वर म कहा हर सुबह जब सूय भगवान को अघ्य चढाती हूँ तो मुझे सूय के आस पास रक्त के छोट छोट सरोवर दिखायी पडते है । मुझ लगता है कि सूय रक्त क

बनेगा। एक मुगरहूत गम्य प्राणी बन बनेगा ?

जोत ने दृढ़ता से कहा, 'यह सब भार मुझ पर छोड़िए। म इस जगली को एकदम सभ्य बना दूगी। उसमे जो ताकत है, उसको मानवीय मान के प्रवाह से सवनामुखी बना दूगी।'

कहीं ऐसा न हो कि तुम इस सभ्य बनाने के फेर में अपने प्राण गवा दो। इसका कोई भरोसा नहीं कि यह कब पागल आघात कर दे और तुम्हें इस लोक से विदा कर दे।'

दादी सा कोई भी सफलता बिना सकट उठाये नहीं मिलती है। सकट से डरने वाला प्राणी अपने ध्येय के चरमबिंदु पर नहीं पहुँच सकता। म सकट उठाऊगी। आपका और कि वाग के साथ सकट उठाऊगी। मुझे विश्वास है कि प्रभु मेरे पवित्र ध्येय की पूर्ति करेंगे।'

उसके स्वर की दृढ़ता से बुढ़िया प्रभावित हुई। उसने आदर भरी दृष्टि से बुढ़िया को देखा।

दादी सा आपका यह पोता एक दिन अपना खोया हुआ वैभव और सम्मान वापस पायगा।

दादी ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया।

इसको सभ्य बनाने का कौन सा उपाय कराओगी ?

यह आप देखती जाय। अच्छा दादी सा आपके पाताणी। यह कर वह उठ खड़ी हुई।

डेरे म प्रवेश करते ही दासी ने कहा, बाई सा, आपको माँ सा बुला रही हैं।'

'क्या ? आश्चर्य हुआ जात का।

पता नहीं। उनका आदेश है कि जोत बाई के आते ही उन्हें मेरे पास भेजा जाय।"

जोत स देह से घिर गया। शकित मन से पाँव उठाती हुई वह रावल की ओर गयी। ठकुराणी क निजी कक्ष म से तेज स्वर आ रहा था। वह कह रही थी, छोटा ठाकुर यह सदा का जगत की ओर जाना

ग्रौर ग्रपनी जागीर क प्रति लापरवाह रहना मुझे पसद नहीं । जगल म कौन स मगल की रचना करत हो ? म यह जानना चाहती हूँ ।"

जोन किंचित भयभीत हो गयी । दरवाजे पर खडी होकर वह भीतर का दृश्य देखने लगी ।

किसी मगल की रचना नही होती । म सिफ शिकार की खोज म जाता हूँ । ढाले बठे बठे म ऊब जाता हूँ ।"

"कल म ग्राप उधर नहीं जायेंगे ग्रौर गुजरात की जागीर म एक झगडा हो गया है, उसे ग्राप जाकर के निपटाएँगे । वहाँ के कुछ किसान लगान देना नहीं चाहते हैं जरूर कोई समस्या होगी । यदि उनकी कठिनाई वास्तव म विचारणीय हो तो उनका लगान माफ कर दिया जाय, वर्ना उनस लगान वसूल की जाय ।"

'कल ही जाना पडगा ?'

कल सुबह ही । ग्रापके साथ दीपूजी ग्रौर तख्तसिह जी भी जायेंगे । कल निश्चित प्रस्थान किया जाय ।'

जो हुक्म । विशाल सिर झुका कर ग्रा गया । जोत दरवाजे पर खडी थी । विशाल ने उस उडती नजर से देखा ।

जोत सिर झुकाए कक्ष म घुसी ।

पधारिए बाई सा पधारिए ।'

जोत ठकुराणी के स्वर का व्यग समझ गयी । वह सिर झुका कर खडी हो गया ।

'ग्राप दोपहर को कहा पधारती हैं ? ठकुराणी ने जाजम पर बठे बठे पूछा ।

धम-सकट की सी स्थिति थी । जोन कुछ देर तक विचारती रही । फिर बोली 'माँ सा स पहले मैं क्षमा माँगनी हूँ । मैं कहाँ जाती हूँ क्यों जाती हूँ किसलिए जाती हूँ ? इसे प्रकट करने म मुझे विशेष ग्रापत्ति नहीं है किंतु माँ सा ! मुझसे ग्रभी न पूछें तो ठीक रहेगा ।'

'लेकिन क्यो ?'

बनना। एक सुसस्कृत सभ्य प्राणी बन बनेगा ?'

जोत ने दृढ़ता से कहा, "यह सब आप मुझ पर छोड़िए। मैं इस जगली को एकदम सभ्य बना दूगी। उसमे जो शक्ति है, उसको अपने प्रेम के प्रकाश से सदलोमुखी बना दूगी।

कहीं ऐसा न हो कि तुम इस सभ्य बनाने के फेर में अपने प्राण गवा दो। इसका कोई भरोसा नहीं कि यह कब घातक आघात कर दे और तुम्हें इस लोक से विदा कर दे।'

दादी सा कोई भी सफलता बिना सकट उठाए नहीं मिलती है। सकट से डरने वाला प्राणी अपने ध्येय के चरमबिंदु पर नहीं पहुँच सकता। मैं सकट उठाऊगी। आस्था और विश्वास के साथ सकट उठाऊगी। मुझे विश्वास है कि प्रभु मेरे पवित्र ध्येय की पूर्ति करेंगे।

उसके स्वर की दृढ़ता से बुढ़िया प्रभावित हुई। उसने आदर भरी दृष्टि से बुढ़िया को देखा।

'दादी सा आपकी यह बात एक दिन अपना खोया हुआ वैभव और सम्मान वापस पायेगा।

दादी ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया।

इसको सभ्य बनाने का कौन सा उपाय करोगी ?

'यह आप देखती जाए। अच्छा दादी सा आपके चलागी। वह कर वह उठ खड़ी हुई।

डेरे में प्रवेश करते ही दासी ने कहा, बाई सा, आपको माँ सा बुला रही हैं।"

'क्या ? आश्चर्य हुआ जोत को।

'पता नहीं। उनका आदेश है कि जोत बाई के आते ही उन्हें मेरे पास भेजा जाय।"

जोत सन्देह से घिर गया। शकित मन से पाँव उठाती हुई वह रावले की ओर गयी। ठकुराणी के निजी कक्ष में से तेज स्वर आ रहा था। वह कह रही थी, छोटे ठाकुर यह सदा का जगल की ओर जाना

ग्रौर ग्रपनी जागीर के प्रति लापरवाह रहना मुझे पसद नही । जगल म कौन से मगल की रचना करत हो ? म यह जानना चाहती हू ।"

जोत किचित भयभीत हो गयी। दरवाजे पर खडी होकर वह भीतर का दृश्य देखने लगी ।

किसी मगल की रचना नही होती । मैं सिफ शिकार की खोज म जाता हूँ। ढाले बठे बठे मैं ऊब जाता हूँ।"

"कल से ग्राप उधर नहीं जायेंगे ग्रौर गुजरात की जागीर म एक झगडा हो गया है, उसे ग्राप जाकर के निपटाएग। वहाँ के कुछ किसान लगान देना नही चाहते हैं जरूर कोई समस्या होगी। यदि उनकी कठिनाई वास्तव में विचारणीय हो तो उनका लगान माफ कर दिया जाय, वर्ना उनसे लगान वसूल की जाय।"

कल हा जाना पडेगा ?'

कल सुबह ही। ग्रापके साथ दीपूजी ग्रौर तख्तसिंह जी भी जायेंग। कल निश्चित प्रस्थान किया जाय।'

'जो हुक्म।' विशाल सिर झुका कर ग्रा गया। जोत दरवाजे पर खडी थी। विशाल ने उसे उडती नजर स देखा।

जात सिर झुकाए कक्ष मे घुमी।

पधारिए बाई सा पधारिए।"

जोत ठकुराणी क स्वर का व्यग समझ गयी। वह सिर झुका कर खडी हो गयी।

ग्राप दोपहर को कहाँ पधारती हैं? ठकुराणी ने जाजम पर बठे बठे पूछा।

धम-सकट की सी स्थिति थी। जोत कुछ देर तक विचारती रही। फिर बोली 'माँ सा से पहले मैं क्षमा माँगती हूँ। मैं कहाँ जाती हूँ, क्यो जाती हूँ किसलिए जाती हूँ? इसे प्रकट करने म मुझे विशेष ग्रापत्ति नही है किन्तु माँ सा! मुझसे ग्रभी न पूछें तो ठीक रहेगा।'

'लेकिन क्यों?'

बनगा। एक सुसस्कृत सम्य प्राणी वस बनगा ?"

जोत न दृढता स कहा, 'यह सब आप मुझ पर छोडिए। म इस जगली को एकदम सम्य बना दूगी। उसम जो दावित है, उसको अपने ज्ञान क प्रकाश स सवतोमुखी बना दूगी।

कहो ऐसा न हो कि तुम इस सम्य बनाने के फर म अपन प्राण गवा दो। इसका कोई भरोसा नही कि यह कब घातक आघात कर दे और तुम्हे इस लोक स विदा कर दे।'

दादी सा कोई भी सफलता बिना सकट उठाय नही मिलती है। सकट स डरने वाला प्राणी अपन ध्यय क चरमबिंदु पर नहा पहुँच सकता। म सकट उठाऊगी। आस्था और विश्वास क साथ सकट उठा ऊगी। मुझ विश्वास है कि प्रभु मरे पवित्र ध्यय की पूर्ति करेंगे।'

उसक स्वर की दृढता स कुन्या प्रभावित हुई। उसन आदर भरी दृष्टि से कुन्या का दखा।

"दादी सा आपका यह पोता एक दिन अपना खोया हुआ वभव और सम्मान वापस पायेगा।

दादा न इसका कोई उत्तर नहा दिया।

इसको सम्य बनाने का कौन सा उपाय करोगी ?

यह आप देखती जाय। अच्छा दादी सा आपके पालागी।' कह कर वह उठ खडी हुई।

डर मे प्रवश करते ही दासी न कहा, वाई सा, आपको माँ सा बुला रही हैं।'

'क्या ?' आश्चय हुआ जोत को।

'पता नही। उनका आदश है कि जोत बाई क आते ही उन्हें मेरे पास भेजा जाय।'

जोत स दह स घिर गया। शाकित मन स पाँव उठाती हुई वह रावल को ओर गया। ठकुराणी क निजी कक्ष म से तज स्वर आ रहा था। वह कह रही थी, छाट ठाकुर यह सदा का जगल की ओर जाना

ग्रौर ग्रपनी जागीर के प्रति लापरवाह रहना मुझे पसद नही । जगल मे कौन स मगल की रचना करते हो ? म यह जानना चाहती हू ।"

जोत किंचित भयभीत हो गयी । दरवाजे पर खडी होकर वह भीतर का दृश्य देखने लगी ।

किसी मगल की रचना नही होती । म सिफ शिकार की खोज म जाता हूँ। ठाले बैठे उठे मैं ऊब जाता हूँ ।"

"कल से ग्राप उधर नही जायेंगे ग्रौर गुजरात की जागीर म एक झगडा हो गया है उसे ग्राप जाकर के निपटाएँगे । वहाँ क कुछ किसान लगान दना नहीं चाहते हैं जरूर कोई समस्या होगी । यदि उनकी कठिनाई वास्तव म विचारणीय हो तो उनका लगान माफ कर दिया जाय, वर्ना उनसे लगान वसूल की जाय ।"

'कल ही जाना पडगा ?"

कल सुबह ही । ग्रापके साथ दीपूजी ग्रौर तख्तसिंह जी भी जायेंग। कल निश्चित प्रस्थान किया जाय ।'

'जो हुक्म ।' विशाल सिर झुका कर ग्रा गया। जोत दरवाजे पर खडी थी । विशाल ने उस उडती नजर से देखा ।

जोत सिर झुकाए कक्ष म घुसी ।

'पधारिए बाई सा पधारिए ।'

जोत ठकुराणी क स्वर का व्यग समझ गयी । वह सिर झुका कर खडी हो गया ।

'ग्राप दोपहर का कहाँ पधारती हैं ? ठकुराणी न जाजम पर बैठे बैठ पूछा ।

धम-सकट की सी स्थिति थी । जोत कुछ देर तक विचारती रही । फिर बोली 'माँ सा से पहले मैं क्षमा माँगती हूँ । मैं कहाँ जाती हूँ, क्या जाती हूँ किसलिए जाती हूँ ? इसे प्रकट करने मे मुझे विशेष ग्रापत्ति नही है किन्तु माँ सा ! मुझसे ग्रभी न पूछें तो ठीक रहेगा ।'

'लकिन क्यो ?'

है। मैं चाहूँगा कि ठकुराणी सा पिछला सारा वमनस्य भुला कर हमारे सम्बन्धो को नए सिर से मधुरतम बनायेंगी।

दीपू काका ने कोई उत्तर नहीं दिया। वे बार बार यही सोच रहे थे कि यह अनहोनी कैसे अप्रत्याशित रूप से घट गयी। छोटे ठाकुर ने बिना ठकुराणी की आज्ञा के यह सब कैसे कर लिया? उनमें इतना साहस कहाँ से आ गया।

'दीपू काका आपने कोई उत्तर नहीं दिया?'' किशाल ने कहा।

मैं क्या उत्तर दूँ? छोटे ठाकुर जो हुआ है मेरी समझ में ठीक नहीं हुआ।

ठीक तब होता जब हम पीढ़ी-दर पीढ़ी एक दूसरे की हत्यायें करते रहते। किशाल ने जरा चिन्तित हुए कहा काका सा प्रेम से बढ़ कर इस पृथ्वी पर कोई भी सुन्दर वस्तु नहीं है।'

प्रेम।'' काका ने इस शब्द को अपने आप दोहराया। प्रसंग को समाप्त करके कहा चलिए छोटे ठाकुर।'

महाकुंवर को कोई सुख और प्रसन्नता नहीं। जो हुआ है वह उसकी मन के मर्जी का नहीं हुआ। उसने संतोष धारण कर लिया कि यह सब संजोग है। दुख उसे इस बात का अधिक था कि उसकी बेटी गिगनार ने ही उसकी बात नहीं मानी। उसने अपनी बेटी को सम्पूर्ण स्वतंत्रता दी जिसका फल उसे मिला कि उसकी बेटी ने घर की मर्यादा को तोड़ कर प्रेम करना शुरू कर दिया। और प्रेम के समक्ष उसने अपनी माँ के सपनों को रौंद दिया। भाटी सरदार मृत्यु से इस उम्र में आकर हार गये। यह एक ऐसी पराजय है जो अब मृत्यु पर्यन्त नहीं मिटायी जा सकती। तो भी बेटी की विदाई पर उसकी आँखें सजल हो गयीं। जब गिगनार उसके गले मिली और रोने लगी तब वह भी सुबक पड़ी और उसके मुख से आशीष वचनों की झड़ी लग गयी।

अन्य औरतों ने आलू गाना शुरू कर दी।

... ना लश्करिया

छोटे ठाकुर भाटी सरदार की बेटी से विवाह करके आ रहे हैं। यह शहनाई का स्वर उनके आगमन की सूचना दे रहा है।"

'क्या कह रहे हैं दीवानजी जी!' ठकुराणी की आँखें फट सी गयीं।

पागलों की तरह सिर झुका कर दीपू काका ने कहा 'मैं ठीक कह रहा हूँ। छोटे ठाकुर की ही बारात है यह।'

ठकुराणी गुस्से से चिल्ला कर बोली 'उस निर्लज्ज का यह साहस?' और ठकुराणी गढ़ी से हट के मुख्य दरवाजे सूरज पोल की ओर बढ़ी। पीछे पीछे दीपू काका भी आ गए।

दीपू काका ने नम्रता पूर्वक कहा 'अब आप हठ छोड़ कर शांति से जो भी हो गया है उसे स्वीकार कर लीजिए। भाटी सरदार ने अपनी बेटी देकर अपनी पराजय मान ली है।'

"मुझे उसकी बेटी नहीं उसका सिर चाहिए।" कड़क कर कहा ठकुराणी ने, "और किसी ने मुझे इसके मनाने बहुत की चेष्टा की तो मैं उसकी जबान काट लूंगी।"

दीपू काका काँप उठे। वह जानता था ठकुराणी का रोष और ज्ञान। जब ठकुराणी प्यार करती है तो बहुत। उसने मौन धारण कर लिया।

छोटे ठाकुर की बारात को भीड़ झरोखे से देख रही थी। यह सब जादू की तरह कैसे क्या हो गया? ठाकुर के विवाह में ठिकाने की रयत सम्मिलित न हो, यह कैसे हो सकता है? खुसर-पुसर होने लगी।

सूरज पोल के दोनों ओर दो खिड़कियाँ बनी हुई थीं। ठकुराणी ने पोल के समीप आते ही आदेश दिया, 'ड्योढ़ीदार जी, पोल के दरवाजे बन्द कर दिए जाय।

ठकुराणी का आदेश पाकर पोल के दरवाजे बन्द कर दिए गए। धरड़ड़ की आवाज से सारा वातावरण ध्वनित हो उठा। ठकुराणी लपक कर तिबारी की खिड़की में गयी। वह क्रोध से विकराल हो रही थी।

बारात पोल के समीप आयी। पोल का दरवाजा बन्द था। छोटे

ठाकुर का 'विशाल' रथ से उतरा और उतर कर खिड़की में खड़ी ठकुराणी से बोला, "मा सा, प्रोल को खोलिए, आप ने हमें देख कर दरवाजे क्या बन्द कर लिए ?"

'तुम्हारे लिए दरवाजे तब तक बंद रहेंगे जब तक तुम अपने बाप के वचनों को पूरा न कर लोगे ।'

लेकिन मैं उसकी बेटी लाया हूँ ।'

मुझे बेटी नहीं बेटी के बाप का कटा हुआ सिर चाहिए ।'

'मां सा, व्यर्थ खूनखराबी करने से क्या लाभ होगा ? मां सा ! आपकी बहू अत्यंत ही सांवणी है । आप उसे एक बार देखिए तो सही । भाटी सरदार ने अपनी पराजय स्वीकार करते हुए कहा है, यह मेरे पाप का प्रायश्चित्त है । मैंने अपने मित्र को मार कर जो पाप किया था, बेटी देकर उसे धो लिया । आप ठकुराणी यानि मेरी भौजाई सा से क्षमा मांग लेवें ।' इसके बाद कैसी शत्रुता रह जाती है । मा सा, आप ठंडे दिल से विचारिए ।'

ठकुराणी के होठों पर हंसी दौड़ गयी । एक मौन हंसी । बोली मुझे मालूम नहीं था कि मेरे वर्षों की तपस्या को तुम रूप की ज्वाला में एक पल में भस्म कर दोगे । मैंने नहीं जाना था कि मेरा लाडला सपूत इस तरह की नादानी कर बठेगा । मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि मेरा खून इतना सफेद होगा । मैं समझती हूँ कि तुमने किसी क्षत्राणी का नहीं गोली का दूध पिया है ! तुमने राठौड़ों के खून, गौरव परम्परा और गरिमा पर कलक के छींटे लगाये हैं । जा और अपनी इस रूप की देवी के आंचल में सो जा । मैं तुम्हें राजपूत नहीं समझती ।

मां सा !"

"मुझे मां मत कह कृतघ्न ! मैं तुम्हारी मां कहलाने से अच्छा धरती में गड़ना समझूंगी । दुष्ट ! जहां से आया है वहीं वापस चला जा ।"

मां ! मां !! मेरी बात तो सुनो ।"

मैं तुम्हारी बात तभी सुनूंगी जब तुम मुझे अपने बाप के हत्यारे का

कितने मान वाल हैं। जीवन बलिदान कर दिया पर मान नही छाडी। आह! माँ, शायद मैं चंद घडी का महमान हू। यह रथ की आवाज देखा कौन आया है? माँ!' ठकुरानी ने देखा। जोत बाई आयी है।

"जोत बाई सा आये है।"

'यह कितना अच्छा हुआ है माँ सा, मरने क पहल मैं अपनी बहिन स भी मिल रहा हूँ।'

जोत पागल सी आयी। विशाल पर झुकती हुई बोली, "यह क्या और क्या हुआ?"

'सुना जोत बाई सा ये सब नियति के खेल है। मैं जा रहा हूँ। जोत बाई सा! मरी माँ की 'भोलावण आपका है। मेरे बाद अब आप ही इनकी बेटी हो और आप ही इनके बेटे!

'नहीं भाई सा, नही, यदि माँ सा ने मुझे इसीलिए बुलाया है तो मैं नही भाई सा आप हम छाड कर नही जा सकते। देखो आपकी बहिन आपके घर कितना शुभ काम करने आयी है? एक नये जीव को जन्म देने, और आप ''

राजवैद्य आ गये। उन्होंने घावों और रोगी की नाडी देख कर कहा, भगवान पर भरोसा रखिए।''

"ऐसा न कहिए वैद्यराज जी।' ठकुराणी चीखी।

'मेरे भया को बचा लीजिए। म आपको सोने से भर दूगी।"

'जोत हिम्मत न हारो।'

'छाटे ठाकुर!' गिरनार ने उसे उठा लिया। वह डेरे की ओर चली।

'गिरनार, यदि ईश्वर ने चाहा तो हम उस जन्म म अवश्य मिलेंगे। हमने प्यार किया है न। हमारा प्यार जन्म-जन्मान्तर हमारी आत्माओं की गहराइयों म रहेगा।

गिरनार रो रही थी। उसके साथ साथ ठकुराणी और जोत भी रो रही थी। दादू काका मुबक रहे थे।

डेरे के आँगन म पहुँचते ही छोटे ठाकुर ने कहा 'ठहरो गिरनार,

रक्त-कथा

राजस्थान के सामन्ती युग म छोटे छोटे ठिकानों के ठाकुर तथा जागीरदार किस प्रकार झूठे ग्रह, शान और सनक के वशीभूत हो सुविचार तथा सुखद सम्ब घो को तिलाजलि दे बैठते थे और पीढी दर पीढी वर विरोध तथा शोध प्रतिशोध मे ही अपनी जीवन शक्ति नष्ट करते रहते थे, इसका बडा ही हृदयग्राही और करुण चित्रण लेखक ने इस उपन्यास म दिया है।

राजस्थान के सफल उपन्यासकार यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' का राजस्थानी परिवेश पर यह नया उपन्यास है।